इकाई 5 शब्द और रूप

5.0 उद्देश्य
5.1 प्रस्तावना
5.2 शब्द की संकल्पना
5.2.1 शब्द से तात्पर्य
5.2.2 शब्द तथा पद
5.2.3 शब्द-रूप निर्माण तथा शब्द निर्माण
5.2.4 शब्द वर्ग
5.3 रूप, रूपिम, संरूप
5.3.1 "रूप" से तात्पर्य
5.3.2 रूप, रूपिम तथा संरूप
5.3.3 रूपिम निर्धारण
5.4 रूपिमों के भेद-प्रभेद
5.4.1 प्रयोग के आधार पर
5.4.2 अर्थ के आधार पर
5.4.3 प्रकार्य के आधार पर
5.5 कुछ विशिष्ट रूपिम
5.5.1 शून्य रूपिम
5.5.2 सर्वादेशी रूपिम
5.5.3 रिक्त रूपिम
5.6 सारांश
5.7 शब्दावली
5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
5.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई में शब्द तथा रूप की संकल्पना एवं उनके भेदों से आपको परिचित कराया जा रहा है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- शब्द क्या है और ये कितने प्रकार के होते हैं, यह बता सकेंगे,
- शब्द और पद में अंतर जान सकेंगे,
- "रूप" से क्या तात्पर्य है तथा शब्द और रूप में क्या संबंध है — यह समझा सकेंगे,
- रूप, रूपिम, संरूप का अंतर समझा सकेंगे,
- रूपिमों के भेद बता सकेंगे,
- किसी भाषा के शब्दों में रूपिम छाँट सकेंगे,
- कुछ विशिष्ट रूपिमों के विषय में जानकारी दे सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

इससे पहले की इकाइयों में आप हिंदी की ध्वनियों, वर्णों तथा स्वन, स्वनिम आदि के विषय में पढ़ चुके हैं। इस इकाई में शब्द, पद, रूप, रूपिम आदि के विषय में चर्चा की जाएगी। शब्द भाषा की स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई होते हैं। स्वतंत्र इकाई होने के कारण ही शब्दों को कोश में स्थान दिया जाता है। भाषा में जब हम अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं तो इन्हीं शब्दों का वाक्यों में

प्रयोग करते हैं, लेकिन वाक्यों में प्रयुक्त होने से पूर्व शब्द को "पद" बनाया जाता है। पद बनाने के लिए शब्दों में कुछ प्रत्यय जोड़े जाते हैं। बिना प्रत्यय लगे शब्द पद नहीं बन सकते। भाषा में शब्दों का इसलिए भी महत्व होता है कि शब्दों से भाषा में नए-नए शब्द भी बनाए जाते हैं। इस तरह से प्रत्येक भाषा में शब्दों की संख्या असीमित हो जाती है। भाषा में सभी शब्द एक ही प्रकार के नहीं होते। शब्दों में परस्पर अंतर करने के लिए हम उनको अलग-अलग वर्गों में विभाजित कर देते हैं।

शब्द भाषा की स्वतंत्र और सार्थक इकाई तो होते हैं परंतु वे लघुतम इकाई नहीं कहे जा सकते क्योंकि अनेक शब्द ऐसे भी होते हैं जिनके एक से अधिक अर्थवान खंड किए जा सकते हैं, जैसे : "ईमानदार" शब्द के "ईमान" तथा "दार" दो खंड हो सकते हैं। इन दोनों खंडों में आने वाली पहली इकाई "ईमान" को तो हम शब्द कह सकते हैं परंतु "दार" को शब्द नहीं कह सकते। इसलिए भाषा विज्ञान में एक नई संकल्पना सामने लाई गई जिसे "रूप" कहा गया। *"रूप" भाषा के लघुतम सार्थक खंड होते हैं।* कुछ लघुतम खंड स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त हो सकते हैं और कुछ स्वतंत्र रूप से न आकर अन्य रूपों के साथ संयुक्त होकर ही आते हैं। नई संकल्पना के अनुसार "ईमान" भी एक रूप है और "दार" भी एक रूप है। एक स्वतंत्र रूप है और दूसरा बद्ध रूप है। बद्ध रूपों में प्रायः उपसर्ग तथा प्रत्यय आते हैं और स्वतंत्र रूप शब्द ही होते हैं।

रूप दो प्रकार के होते हैं — संरूप तथा रूपिम। रूपिमों के भी अनेक भेद प्रभेद होते हैं। इनके अलावा भी भाषाओं में कुछ विशिष्ट रूपिमों, जैसे : शून्य रूपिम, रिक्त रूपिम आदि की भी संकल्पना की गई है। इस इकाई में हम इन्हीं सब बातों पर विस्तार से विचार करेंगे।

5.2 शब्द की संकल्पना

5.2.1 शब्द से तात्पर्य

यह तो आप जानते ही हैं कि वाक्यों का निर्माण शब्दों से होता है। शब्द भाषा की *स्वतंत्र* और *सार्थक* इकाई होता है अर्थात् शब्द एक ऐसी इकाई है जिसका प्रयोग हम भाषा में स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं तथा यह एक निश्चित अर्थ का बोध कराता है। शब्द को भाषा की स्वतंत्र और सार्थक इकाई क्यों कहा जाता है, आइए इस पर विचार करें।

i) **शब्द भाषा की एक स्वतंत्र इकाई है।** इस दृष्टि से लड़का, घोड़ा, किताब, दूध, दूधवाला, ईमानदार, बचपन आदि सभी शब्द हैं क्योंकि ये सभी हिंदी में स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त किए जाते हैं। यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि भाषा में कुछ ऐसी इकाइयाँ भी होती हैं जो सार्थक ही होती हैं परंतु स्वतंत्र नहीं। जैसे : "दूधवाला" शब्द का "वाला", "ईमानदार" शब्द का "दार" या "बचपन" शब्द का "पन"। इन इकाइयों को इसलिए शब्द नहीं कहा जा सकता क्योंकि ये भाषा में स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त नहीं हो सकतीं।

ii) **शब्द भाषा की सार्थक इकाई है।** आप यह तो जानते ही हैं कि शब्द का निर्माण कुछ ध्वनि-वर्णों के आधार पर होता है। जैसे "कलम" शब्द में "क","ल" तथा "म" वर्ण एक निश्चित क्रम में आकर इस शब्द का निर्माण करते हैं। ध्वनि-वर्णों से बने ये शब्द एक निश्चित अर्थ का बोध कराते हैं। प्रश्न यह है कि यह अर्थ क्या है?

वास्तव में हमारे मन में विभिन्न विचारों, संकल्पनाओं तथा प्रकार्यों के चित्र होते हैं और इन्हीं को शब्दों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। किसी वस्तु की संकल्पना तो संसार में प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान होती है परंतु हर भाषा में उसे अलग-अलग शब्दों द्वारा व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए मेज़ की संकल्पना तो हर व्यक्ति के मन में एक ही प्रकार की होती है परतु हिंदी में इसे हम "मेज़" कहते हैं, अंग्रेज़ी में "टेबल" (table)। कहने का तात्पर्य यही है कि प्रत्येक शब्द का एक अर्थ होता है जो प्रत्येक भाषा भाषी के मन में अमूर्त संकल्पना के रूप में रहता है। इसी अर्थ को अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग ध्वनि वर्णों से बने शब्दों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। इस अर्थ की सत्ता अमूर्त होती है और शब्द उसी का मूर्त रूप होते हैं।

ऊपर की गई चर्चा के आधार पर शब्द के निम्नलिखित अभिलक्षण बताए जा सकते हैं :

- शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाई है
- यह किसी न किसी विचार, संकल्पना अथवा प्रकार्य का बोध कराता है
- प्रत्येक शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है
- यह अर्थ अपनी अमूर्त अवस्था में शब्द के बीच निहित रहता है और मूर्त शब्द के रूप में अभिव्यक्त होकर किसी विचार या प्रकार्य का बोध कराता है।

5.2.2 शब्द तथा पद

आपको बताया जा चुका है कि शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाइयाँ हैं। इन स्वतंत्र शब्दों को एक-एक करके एक स्थान पर रख देने से भाषा के वाक्य नहीं बनते। वाक्यों में शब्दों को प्रयुक्त करने से पहले उनको पद बनाया जाता है, तभी वे वाक्य में प्रयुक्त हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए यदि आप "लड़का डंडा कुत्ता मारा" शब्दों को एक साथ यथावत रूप में रखकर बोलते हैं तो यह सार्थक वाक्य नहीं कहा जाएगा। सार्थक वाक्य तो होगा — "लड़के ने कुत्ते को डंडे से मारा"। अर्थात् आपको "लड़का" शब्द को "लड़के" कुत्ता को "कुत्ते" तथा डंडा को "डंडे" के रूप में "ए" प्रत्यय लगाकर बदलना होगा। यह परिवर्तन परसर्ग "ने", "को", "से" आदि लगने से होगा।

इस वाक्य में प्रयुक्त "लड़के" "कुत्ते" तथा "डंडे" रूप ही पद हैं। अतः शब्द और पद में केवल यही अंतर होता है कि यदि शब्द एक स्वतंत्र इकाई है तो पद शब्द का वह रूप है जिसे प्रत्यय लगाकर वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य बनाया गया है। इसीलिए पदों को शब्द रूप भी कहा जाता है। *शब्द के वाक्य में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न शब्द रूप ही पद कहे जाते हैं।*

पाणिनी ने पद की परिभाषा दी थी — "सुप्तिङन्तं पदम्"। अर्थात् सुप्-तिङ् आदि प्रत्यय जिसके अंत में लगते हैं वही पद है।

"सुप्" से तात्पर्य है संज्ञा रूपों में लगने वाली विभक्तियाँ तथा "तिङ्" से तात्पर्य है क्रिया रूपों में लगने वाले प्रत्यय। यानी *जिन शब्दों में विभक्ति अथवा प्रत्यय लग जाते हैं वे शब्द ही पद कहे जाते हैं।* विभक्ति/प्रत्यय शब्द में तभी लगते हैं जब उनको वाक्य में प्रयुक्त करना होता है। उदाहरण के लिए, संस्कृत में "बालक" एक शब्द है। इसमें सुप् (जिसका चिह्न : है) प्रत्यय लगता है तो इससे "बालकः" पद बनता है।

हिंदी में संस्कृत की भाँति विभक्ति तो नहीं लगती, लेकिन प्रत्यय लगते हैं। प्रत्यय लगाकर ही हम शब्द से पद प्राप्त कर लेते हैं, जैसे :

शब्द	+	**प्रत्यय**	—	**पद**
लड़का	+	ए	—	लड़के
लड़का	+	ओ	—	लड़को
लड़का	+	ओं	—	लड़कों — आदि

इस प्रकार पद की संकल्पना एक ओर शब्द से जुड़ी हुई है तो दूसरी ओर वाक्य से। यहाँ आपके मन में एक प्रश्न उठ सकता है कि "लड़का जाता है" वाक्य में प्रयुक्त "लड़का" और स्वतंत्र शब्द "लड़का" के रूप में तो कोई अंतर दिखाई नहीं देता। अर्थात् इस वाक्य में प्रयुक्त "लड़का" पद में तो कोई प्रत्यय नहीं जोड़ा गया है फिर इसे शब्द न कहकर पद क्यों कहते हैं?

वास्तव में "लड़का जाता है" वाक्य में प्रयुक्त "लड़का" शब्द नहीं है। वाक्य में प्रयुक्त होने का अर्थ ही है कि यह एक "पद" बन गया है। अब प्रश्न यह है कि क्या यहाँ कोई प्रत्यय है या नहीं? ऐसे "पदों" के लिए भाषा विज्ञान में यह माना गया है कि इनमें एक "शून्य-प्रत्यय" लगा हुआ है। "शून्य-प्रत्यय" के बारे में यह माना जाता है कि यह ऐसा प्रत्यय है जो प्रकार्य के स्तर पर तो है पर अभिव्यक्ति के स्तर पर नहीं है। इसकी भौतिक सत्ता नहीं है इसलिए स्वरूप के स्तर पर यह "शून्य" है। इसी इकाई में आगे 5.5.1 के अंतर्गत आप इसके विषय में विस्तार से पढ़ेंगे। यहाँ तो आपको केवल इतना ध्यान रखना चाहिए कि बिना कोई प्रत्यय लगे शब्द कभी भी पद नहीं बन सकता।

उपर्युक्त चर्चा के आधार पर "पद" की कुछ प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है —

— जब कोई शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य हो जाता है अथवा वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तब उसे पद कहते हैं।

— शब्द जब भी वाक्य में प्रयुक्त होगा, उसमें कोई न कोई प्रत्यय अवश्य जोड़ा जाएगा। अतः एक ही शब्द के विभिन्न शब्द-रूप ही पद कहे जाएँगे।

— प्रकार्य तथा प्रयोग की दृष्टि से एक शब्द के अनेक शब्द-रूप हो सकते हैं। जैसे : "बच्चा" शब्द से बने बच्चा (शून्य प्रत्यय), 'बच्चे' (ए-प्रत्यय), "बच्चो" (ओ-प्रत्यय), 'बच्चों' (ओं-प्रत्यय) आदि।

— पद का संबंध एक ओर शब्द से होता है तो दूसरी ओर वाक्य से, क्योंकि पदों का प्रयोग वाक्यों में ही किया जाता है।

— जहाँ शब्द एक स्वतंत्र इकाई है वहाँ पद या शब्द-रूप भाषा में स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त नहीं हो सकते।

5.2.3 शब्द-रूप निर्माण तथा शब्द निर्माण

शब्द-रूप निर्माण

अभी आपने पढ़ा था वाक्य में प्रयुक्त शब्द विभिन्न प्रत्यय लग जाने से एक निश्चित रूप ग्रहण कर लेते हैं और निश्चित प्रकार्य करने लगते हैं। ऐसे प्रकार्य युक्त शब्दों को ही हम शब्द रूप या पद कहने लगते हैं। *भाषा में शब्दों को वाक्य में प्रयुक्त करने के उद्देश्य से विभिन्न शब्द-रूप बनाए जाते हैं। शब्द-रूप बनाने की इसी प्रक्रिया को शब्द-रूप निर्माण कहा जाता है।* इस दृष्टि से "लिखना" शब्द से आप प्रत्यय लगाकर "लिख", "लिखे", "लिखो", "लिखिए", "लिखा" आदि अनेक रूप बना सकते हैं।

लेकिन यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि शब्द-रूप निर्माण प्रक्रिया द्वारा नए शब्दों का निर्माण नहीं होता, बल्कि ये तो उसी शब्द के विभिन्न रूप होते हैं और वाक्य में अलग-अलग व्याकरणिक कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए "लिखना" शब्द से बने विभिन्न शब्द-रूपों के अलग-अलग प्रकार्यों को देखिए —

1) जल्दी लिख
2) जल्दी लिखो
3) जल्दी लिखिए
4) जल्दी लिखिएगा।

यहाँ पहले वाक्य का "लिख" "शब्द-रूप" संकेत दे रहा है कि इस वाक्य का कर्ता "तू" होगा, दूसरे वाक्य में, "लिखो" रूप का कर्ता "तुम" होगा तथा तीसरे तथा चौथे वाक्य के "लिखिए" "लिखिएगा" रूप का कर्ता "आप" होगा। अर्थात् प्रयोग और प्रकार्य की दृष्टि से "लिख" रूप मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम के साथ ही प्रयुक्त हो सकता है, "लिखो" रूप मध्यम पुरुष बहुवचन के साथ तथा "लिखिए" "लिखिएगा" रूप बहुवचन सम्मान सूचक सर्वनाम (आप) के साथ।

शब्द निर्माण

"शब्द-रूप निर्माण" में आपने देखा कि इस प्रक्रिया में हम एक शब्द में विभिन्न प्रत्यय लगाकर तरह-तरह के शब्द रूप तो बनाते हैं परंतु ये नए प्रकार के शब्द नहीं बनते। इन सभी शब्दों में मूलतः वही शब्द विद्यमान रहता है। जैसे : "सुंदर" शब्द से आप "सुंदरता" भी बना सकते हैं, "असुन्दर" भी बना सकते हैं और "सुंदरी" भी। "सुंदर" शब्द से बने ये शब्द भी "सुंदर" शब्द की ही भाँति स्वतंत्र शब्द और सार्थक शब्द हैं। इनका प्रयोग भी हम अन्य शब्दों की भाँति भाषा में स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं। इनको भी यदि वाक्य में प्रयुक्त किया जाएगा तो इनमें भी पद या शब्द रूप लगाने वाले प्रत्यय लगाने होंगे।

भाषाओं में एक शब्द से दूसरा शब्द बनाने की इसी प्रक्रिया को "शब्द निर्माण प्रक्रिया" कहा जाता है। शब्द निर्माण प्रक्रिया को "शब्द-साधन" या "व्युत्पादन" भी कहा जाता है। इस प्रक्रिया के द्वारा

बने कुछ शब्दों के उदाहरण देखिए —

i)	परि	+	पूर्ण	=	परिपूर्ण
	अप	+	शकुन	=	अपशकुन
	अन	+	जान	=	अनजान
ii)	मित्र	+	ता	=	मित्रता
	सुंदर	+	ता	=	सुंदरता
	सवार	+	ई	=	सवारी
iii)	स्नान	+	गृह	=	स्नानगृह
	मंत्री	+	परिषद्	=	मंत्रिपरिषद्
	राज	+	भाषा	=	राजभाषा

1) स्रोत के आधार पर

स्रोत के आधार पर शब्दों के वर्गीकरण का विवेचन इकाई 18 "हिंदी की शब्दावली : स्रोतगत अध्ययन" में विस्तार से किया जाएगा। यहाँ हम संक्षेप में देखेंगे कि स्रोत के आधार पर शब्दों को किन-किन वर्गों में रखा जा सकता है।

यदि आपसे पूछा जाए कि गंगा नदी का स्रोत क्या है, तो इसका अर्थ है कि आपको बताना है कि गंगा कहाँ से निकलती है। आप कह सकते हैं कि गंगा का स्रोत गंगोत्री है। इसी प्रकार भाषाओं में शब्दों के स्रोत के विषय में बताया जा सकता है। अर्थात् आप बता सकते हैं कि अमुक शब्द अमुक भाषा के अमुक शब्द से विकसित हुआ है, या उस भाषा से सीधा आ गया है। कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि आप उस शब्द के स्रोत का पता ही न चला सकें। कुछ उदाहरणों पर विचार कीजिए। हिंदी में आज "लाइब्रेरी" शब्द भी प्रचलित है तथा "पुस्तकालय" भी। लेकिन स्रोत की दृष्टि से आप बता सकते हैं कि "पुस्तकालय" शब्द संस्कृत से तथा "लाइब्रेरी" शब्द अंग्रेज़ी से सीधे हिंदी में आ गए हैं। इसी प्रकार यदि आप हिंदी के "लालटेन" तथा "दूध" शब्द के स्रोत के विषय में बताना चाहें तो आप कहेंगे कि लालटेन शब्द अंग्रेज़ी के 'Lantern' शब्द तथा दूध शब्द संस्कृत के "दुग्ध" से विकसित होकर हिंदी में आए हैं। लेकिन हिंदी के "भोंदू" या "सिलवट" शब्द के स्रोत के विषय में आप कुछ भी नहीं बता सकते। तब इस प्रकार के शब्दों के बारे में आप कहेंगे कि इनका कोई स्रोतगत रूप नहीं है। ये शब्द तो उसी भाषा की अपनी विशेषताओं से विकसित हो गए हैं। शब्दों के स्रोत से संबंधित इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर हिंदी के शब्दों को हम निम्नलिखित वर्गों में बाँट सकते हैं —

i) **तत्सम** — "तत्सम" शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है "तत् + सम" जिसका अर्थ होता है — उसके समान। "उसके समान" से यहाँ तात्पर्य है स्रोत भाषा के समान। हिंदी में बहुत से शब्द संस्कृत से सीधे आ गए हैं और आज तक संस्कृत के ही समान हिंदी में भी प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार के शब्दों को तत्सम कहा जाता है जैसे —

धर्म	अग्नि	मृत्यु	पुनः	सर्वथा
गुरु	ज्वाला	सर्प	प्रातः	प्रत्यक्ष
क्रूर	विद्युत	रश्मि	दिव्य	पराकाष्ठा
निर्दयी	केन्द्र	स्वप्न	भव्य	संतोष

ii) **तद्भव** — "तद्भव" शब्द का अर्थ है — उससे होना। अर्थात् वे शब्द जो स्रोत भाषा के शब्दों से विकसित हुए हैं। इन शब्दों के मूल स्रोत रूप क्या हैं — इनका पता आप लगा सकते हैं, जैसे दूध शब्द संस्कृत के "दुग्ध" से विकसित हुआ है, यह बताया जा सकता है। इस प्रकार के शब्दों के अन्य उदाहरण देखिए —

तद्भव शब्द		मूल (स्रोत) शब्द
दूध	—	दुग्ध
छन	—	क्षण
कान्ह	—	कृष्ण

मीत	—	मित्र
खीर	—	क्षीर
आँसू	—	अश्रु
साँप	—	सर्प
दाँत	—	दंत

ग) **देशज** — देशज शब्द वे शब्द हैं जो हिंदी में स्वतः विकसित हुए हैं। इनके मूल अथवा स्रोत रूपों के विषय में पता लगाना कठिन होता है। इस प्रकार के शब्दों के कुछ उदाहरण देखिए —

भोंदू	थप्पड़
भोंपू	टोंटी
अटकल	झंझट
सिलवट	झकझक

घ) **आगत या विदेशी शब्द** — आगत शब्द का अर्थ है — जो (कहीं से) आ गए हैं। अर्थात् वे शब्द जो हिंदी में विदेशी भाषाओं से आए हैं।

हिंदी में अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं से बहुत से शब्द आए हैं। कुछ उदाहरण देखिए :

अरबी-फ़ारसी-तुर्की से आगत शब्द —

अदालत	सरकार	सुरमा
चपरासी	मुंशी	संदूक
जुर्म	पिस्ता	कैंची
कागज़	किशमिश	मसाला
कानून	चाकू	पनीर
दफ़्तर	गलीचा	परदा

अंग्रेज़ी तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं से आगत शब्द :

कार्बन	पेस्ट	टाई
ऑलपिन	क्रीम	चॉकलेट
पैन	सिल्क	पाउडर
वायलन	क्लास	सिगरेट
ट्रेन	फ़्रॉक	टमाटर
बिस्किट	सूट	पेस्ट्री
ग्लास	कोट	स्वेटर

ङ) **संकर-शब्द** — जब दो भिन्न-भिन्न भाषाओं के शब्दों के मेल से कोई शब्द बनता है तो उसे शंकर-शब्द कहा जाता है। हिंदी में आपको इस प्रकार के शब्दों के अनेक उदाहरण प्राप्त होंगे —

बेडौल, खून-पसीना	—	फ़ारसी	+	हिंदी
टिकिट घर, रेलगाड़ी	—	अंग्रेज़ी	+	हिंदी
पानदान, छायादार	—	हिंदी	+	फ़ारसी
तहसीलदार, फ़जूल खर्च	—	अरबी	+	फ़ारसी
जेलखाना, सीलबंद	—	अंग्रेज़ी	+	फ़ारसी
लाठीचार्ज, कपड़ा-मिल	—	हिंदी	+	अंग्रेज़ी

2) रचना के आधार पर

शब्दों के विषय में पढ़ते समय आपने देखा था कि "दूध" भी हिंदी में शब्द की कोटि में आता है तथा "दूधवाला" भी, इसी प्रकार "ईमान" भी शब्द है तथा "ईमानदार" भी। इन दोनों प्रकार के शब्दों में यदि अंतर करना हो तो कैसे करेंगे? यह तो आप जान ही गए हैं कि "दूधवाला" शब्द की रचना "दूध" शब्द से और "ईमानदार" की रचना "ईमान" शब्द से हुई है। इस दृष्टि से "दूध" तथा "ईमान" मूल शब्द हैं और "दूधवाला" तथा "ईमानदार" दो इकाइयों (दूध + वाला तथा ईमान

+ दार) के योग से बने हैं। दो इकाइयों के योग से बने शब्दों को यौगिक शब्द कहा जाता है। शब्द रचना की दृष्टि से शब्द दो प्रकार के हो जाते हैं — मूल शब्द तथा यौगिक शब्द। इन दोनों ही प्रकार के शब्दों के कुछ उदाहरण देखिए —

मूल शब्द —	सुंदर	मकान	आम
	सफल	मेज़	फल
	घर	कुर्सी	पैसा
यौगिक शब्द —	असुंदर	सुंदरता	
	असफल	सफलता	
	बेघर	घरवाला	
	अनपढ़	सुंदरी	

यौगिक शब्दों के निर्माण पर इकाई 8 "संयुक्त शब्द तथा समस्त पद" में विस्तार से विचार किया जाएगा।

3) प्रयोग के आधार पर

प्रयोग के आधार पर शब्दों को दो वर्गों में बाँटा जाता है — पूर्ण पारिभाषिक तथा अर्धपारिभाषिक शब्द। यों तो इकाई 20 "शब्द निर्माण तथा पारिभाषिक शब्दावली" में इस प्रकार के शब्दों के विषय में विस्तार से चर्चा की जाएगी, परंतु यहाँ संक्षेप में उनके बारे में हम आपको बताने जा रहे हैं —

क) **पूर्ण पारिभाषिक शब्द —** पारिभाषिक शब्दों का संबंध किसी विषय-विशेष से होता है, जैसे किसान, कानून, कार्यालय, बैंक आदि से संबंधित क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाले शब्द। पूर्ण पारिभाषिक शब्द वे शब्द हैं जिनका प्रयोग सामान्य व्यवहार में न होकर केवल उस विषय क्षेत्र में ही किया जाता है। जैसे — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि शब्द व्याकरण के क्षेत्र के शब्द हैं, इसी प्रकार मिसिल, विज्ञप्ति, प्रभाग, अनुदान, अधिसूचना आदि शब्दों का प्रयोग केवल कार्यालय में प्रयुक्त होने वाली भाषा में ही किया जाता है।

ख) **अर्धपारिभाषिक शब्द —** कुछ पारिभाषिक शब्द ऐसे भी होते हैं जिनका प्रयोग अपने विषय क्षेत्र के अलावा सामान्य व्यवहार में भी किया जाता है। ऐसे शब्दों को अर्धपारिभाषिक शब्द कहते हैं जैसे :

शक्ति	प्रणाली
अक्षर	स्वीकृत
रेखा	हस्ताक्षर
कार्य	दंड

5.2.4 शब्द वर्ग

अभी आपने देखा कि किस प्रकार विभिन्न आधारों पर हम भाषा के शब्दों का वर्गीकरण करते हैं। लेकिन आप जानते हैं कि प्रत्येक भाषा का एक व्याकरण होता है। व्याकरण के अंतर्गत हम उस भाषा की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों, पदों, वाक्यों आदि की विशेषताओं, संरचनाओं तथा उनके नियमों का अध्ययन करते हैं। हम यह भी जानते हैं कि वाक्यों में प्रयुक्त शब्द तरह-तरह के व्याकरणिक प्रकार्य करते हैं। कोई शब्द कर्ता का कार्य करता है तो कोई कर्म का, तो कोई क्रिया का। *एक ही प्रकार के व्याकरणिक प्रकार्यों को करने वाले शब्दों को व्याकरण में हम एक वर्ग में रखते हैं।* उदाहरण के लिए हिंदी में लड़का, बच्चा, घोड़ा, आदमी, लड़की, औरत, मोहन आदि शब्द वाक्य में कर्ता का कार्य कर सकते हैं, या कर्म के स्थान पर आ सकते हैं। व्याकरण की दृष्टि से ये सभी शब्द एक वर्ग के सदस्य माने जाएँगे। उसी प्रकार लिखना, पढ़ना, चलना, सोना, खाना ये सभी शब्द वाक्य में क्रिया का प्रकार्य करते हैं और एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त भी किए जा सकते हैं। इस प्रकार के शब्दों को हम एक अन्य व्याकरणिक वर्ग में रख सकते हैं।

शब्द वर्ग से हमारा तात्पर्य शब्दों के उस वर्ग से है जो समान व्याकरणिक प्रकार्य करते हैं। व्याकरणिक प्रकार्य की दृष्टि से हम शब्दों को आठ शब्द वर्गों में विभक्त करते हैं। ये शब्द वर्ग इस प्रकार हैं —
i) संज्ञा ii) सर्वनाम iii) विशेषण iv) क्रिया v) क्रिया विशेषण vi) संबंधवाचक vii) समुच्चयबोधक तथा viii) विस्मयादिबोधक

शब्द वर्ग के कुछ उदाहरण देखिए —

संज्ञा — लड़का, बच्चा, लड़की, कुत्ता, आम
सर्वनाम — मैं, तू, तुम, वह, वे
विशेषण — अच्छा, बुरा, छोटा, बड़ा, गंदा
क्रिया — आना, जाना, पढ़ना, चलना, सोना
क्रिया विशेषण — जल्दी-जल्दी, धीरे-धीरे, पैदल, कार से, तीन बजे, दस तारीख को
संबंधवाचक — ने, को, से, में, पर
समुच्चयबोधक — और, तथा, या, अथवा, पर, परंतु
विस्मयादिबोधक — वाह, हाय, अरे, ओह

अभ्यास 1

क) नीचे दिए गए कुछ कथन सही हैं, कुछ गलत। सही कथन के आगे (√) तथा गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाएँ —

	सही	**गलत**
i) भाषा में शब्दों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जाता है।	☐	☐
ii) शब्द भाषा की स्वतंत्र तथा अर्थवान इकाइयाँ होते हैं।	☐	☐
iii) भाषा में नए शब्दों का निर्माण नहीं हो सकता।	☐	☐
iv) पदों को ही शब्द-रूप कहा जाता है।	☐	☐
v) शब्द-रूप निर्माण प्रक्रिया से बने शब्द स्वतंत्र शब्द होते हैं।	☐	☐

ख) नीचे दिए प्रश्नों के 5-6 पंक्तियों में उत्तर दीजिए :

i) शब्द किसे कहते हैं? इसकी कोई दो विशेषताएँ बताइए।

.....
.....
.....
.....
.....

ii) शब्द और पद में क्या अंतर होता है?

.....
.....
.....
.....
.....

iii) शब्द-रूप निर्माण तथा शब्द निर्माण का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

iv) शब्द वर्ग किसे कहते हैं? किसी एक वर्ग का उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

.....
.....
.....
.....

5.3 रूप, रूपिम, संरूप

5.3.1 "रूप" से तात्पर्य

शब्द की परिभाषा देते समय हमने बताया था कि शब्द भाषा की सार्थक तथा स्वतंत्र इकाई है। लेकिन शब्द को भाषा की लघुतम इकाई नहीं माना जा सकता, क्योंकि लघुतम शब्द का तो अर्थ है — सबसे छोटा। जो लघुतम है उसके फिर और छोटे सार्थक खंड नहीं किए जा सकते। लेकिन "ईमानदार" या "दूधवाला" शब्दों के यदि हम खंड करें तो दो खंड कर सकते हैं — "ईमान + दार" तथा "दूध + वाला", और यहाँ दोनों ही खंड सार्थक हैं।

"दूधवाला" शब्द का पहला खंड "दूध" तथा "ईमानदार" का पहला खंड "ईमान" तो चूँकि भाषा में स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होते हैं अतः आप इनको शब्द कह सकते हैं परंतु "दार" तथा "वाला" स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त नहीं होते, अतः आप इनको शब्द नहीं कह सकते।

लेकिन भाषा और व्याकरण दोनों की ही दृष्टि से इन शब्दों के दोनों ही खंड समान महत्व के हैं, क्योंकि दोनों के अपने-अपने निश्चित अर्थ हैं। दोनों ही खंड शब्द-निर्माण प्रक्रिया में बराबर के हिस्सेदार हैं। अतः हमारे सामने अब यह समस्या आती है कि हम शब्द के ऐसे खंडों को क्या नाम दें जो भाषा की लघुतम तथा सार्थक इकाइयाँ तो हैं परंतु स्वतंत्र नहीं हैं।

आधुनिक भाषा विज्ञान में इस समस्या पर विचार किया गया है और शब्द के प्रत्येक सार्थक लघुतम खंड को समान महत्व दिया गया है। इन भाषा वैज्ञानिकों ने कहा कि लघुतम खंड चाहे भाषा में स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त हो सकता हो अथवा न हो सकता हो, दोनों को एक ही नाम दिया जाना चाहिए। अतः भाषाविदों ने दोनों ही प्रकार के खंडों को नाम दिया — "रूप"। अर्थात् "ईमानदार" शब्द में "ईमान" को भी रूप कहा जाएगा और "दार" को भी रूप, "असुंदर" शब्द में "अ" को भी रूप कहेंगे तथा "सुंदर" को भी रूप।

इस दृष्टि से *रूप भाषा के लघुतम सार्थक खंड हैं।* यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि कुछ रूप स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त हो सकते हैं और कुछ रूप भाषा में स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त नहीं हो सकते। ये किसी न किसी रूप के साथ संबद्ध होकर ही प्रयोग में आते हैं। इस प्रकार के रूपों को बद्ध-रूप (Bound morph) कहा जाता है।

किसी शब्द में कितने रूप हैं, इस बात का पता हमें उस शब्द के सार्थक लघुतम खंड करके ही चल सकता है। जैसे : बेचैन, सुनार, सुनारिन, घुड़सवारी आदि शब्दों के खंड इस प्रकार किए जाएँगे —

बेचैन	=	बे	+	चैन		
सुनार	=	सोना	+	आर		
सुनारिन	=	सोना	+	आर	+	इन
घुड़सवारी	=	घोड़ा	+	सवार	+	ई

यह शब्द सबसे छोटे खंड हैं जिनका अपना एक निश्चित अर्थ है। यदि इनके इनसे छोटे खंड किए जाएँगे तो उनका यह अर्थ समाप्त हो जाएगा, वे सार्थक खंड नहीं होंगे। जैसे : "सोना" रूप के यदि कोई "सो + ना" खंड करेगा तो फिर इस शब्द का सोने (gold) वाला अर्थ समाप्त हो जाएगा। अतः रूप की पहली शर्त यही है कि *ये लघुतम तथा सार्थक होने चाहिए।*

5.3.2 रूप, रूपिम तथा संरूप

रूप दो प्रकार के होते हैं — "संरूप" तथा "रूपिम"। इन दोनों में क्या अंतर है आइए अब इस पर विचार करें। हिंदी के निम्नलिखित शब्दों पर ध्यान दीजिए —

वर्ग I		**वर्ग II**	
आदर	—	अनादर	(अन् + आदर)
अधिकार	—	अनधिकार	(अन् + अधिकार)
सुंदर	—	असुंदर	(अ + सुंदर)
समान	—	असमान	(अ + समान)

यदि आपसे कहा जाए कि बताइए ऊपर दिए गए वर्ग I तथा वर्ग II के शब्दों में कुल कितने रूप हैं तो आप आसानी से बता सकते हैं। इन सभी शब्दों में कुल छह रूप हैं — "आदर", "अधिकार", "सुंदर", "अन्" तथा "अ"।

लेकिन यदि आप ध्यान दें तो देखेंगे कि "अन्" तथा "अ" रूप का प्रकार्य एक ही है, अर्थात् दोनों "निषेध" का कार्य कर रहे हैं। हिंदी में इसी प्रकार का निषेध करने वाले कुछ अन्य रूप भी आपको मिल सकते हैं जैसे —

शकुन	—	अपशकुन	(अप + शकुन)
बल	—	निर्बल	(निर् + बल)

हिंदी में "अन्", "अ", "अप", "निर्" आदि सभी रूप एक ही प्रकार्य को करते हैं तथा समानार्थी हैं। अर्थात् इन सबका अर्थ एक ही है, केवल भिन्न-भिन्न ध्वनि-वर्णों से बनने के कारण इनके स्वरूप में अंतर आ गया है।

ऐसे सभी रूपों को आप एक वर्ग में रख सकते हैं। जैसे हिंदी में अन्, अ, अप, निर् निषेधवाची रूप के सदस्य हैं।

भाषा के ये लघुतम रूप जो अपने स्वरूप में भिन्नता रखते हुए भी एक ही प्रकार्य के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं तथा समानार्थी होते हैं, संरूप या उपरूप कहलाते हैं।

इसका अर्थ यह हुआ कि संरूप/उपरूप हमेशा किसी न किसी वर्ग के सदस्य होंगे। अब प्रश्न उठता है कि उस वर्ग के प्रतिनिधि रूप को हम क्या कहेंगे? *वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले रूप को "रूपिम" कहा जाता है।*

इस दृष्टि से "रूप" दो प्रकार के हो जाते हैं — रूपिम तथा संरूप या (उपरूप)। *रूपिम* भाषा की वे लघुतम इकाइयाँ या रूप हैं जो किसी एक प्रकार्य या अर्थ को व्यक्त करते हैं तथा किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। रूपिम के वर्ग में आने वाले सदस्य जो उसी प्रकार्य या अर्थ को व्यक्त करते हैं, उस रूपिम के *संरूप* कहे जाते हैं।

उदाहरण के लिए ऊपर के उदाहरणों में "आदर", "अधिकार", "सुंदर", "कथनीय" तथा "निषेधवाची" रूप हिंदी के रूपिम कहे जायेंगे तथा अन्, अ, अप, निर् निषेध का कार्य करने के कारण निषेधवाची रूपिम के संरूप। रूपिमों को हमेशा { } में लिखा जाता है तथा संरूपों को [ ] में। ऊपर के उदाहरणों में आए रूपों का विवरण अब आप इस प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं —

कुल रूपिम = {आदर}, {अधिकार}, {सुंदर}, {कथनीय}, {शकुन}, {निषेध}

तथा {निषेध} रूपिम के चार संरूप हैं — [अन् ~ अ ~ अप ~ निर्]

रूपिम तथा संरूप की संकल्पना को नीचे दिए गए अंग्रेज़ी भाषा के शब्दों के आधार पर भी आप समझ सकते हैं। अंग्रेज़ी के निम्नलिखित शब्दों और उनके उच्चरित रूपों पर ध्यान दीजिए —

शब्द	**उच्चरित रूप**
Cats	Cat + s
dogs	dog + z
roses	roz + iz

इन शब्दों में यदि रूप, रूपिम तथा संरूप छाँटने के लिए कहा जाए तो आप बता सकते हैं कि यहाँ कुल छह रूप हैं —

'cat', 'dog', 'roz', 's', 'z', तथा 'iz'.

इन छहों रूपों में 's', 'z' तथा 'iz' तीनों ही प्रकार्य की दृष्टि से समान हैं क्योंकि तीनों ही बहुवचन बनाने का कार्य कर रहे हैं। इसलिए हम इनको तीन अलग-अलग रूपिम नहीं मान सकते। यहाँ मानना होगा कि अंग्रेज़ी में बहुवचन सचक कोई एक रूपिम है तथा जिसके तीन सदस्य या संरूप हैं — [s ~ z ~ iz] तथा यहाँ कुल चार रूपिम आ रहे हैं — {cat}, {dog}, {roz} तथा {बहुवचन सूचक}।

5.3.3 रूपिम निर्धारण

यह तो हमने देखा कि "रूपिम" भाषा की लघुतम तथा सार्थक इकाइयाँ हैं जो किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनके वर्ग में कभी एक सदस्य भी हो सकता है जैसे हिंदी में {आदर}, {अधिकार}, आदि और अंग्रेज़ी में {cat}, {dog}, आदि। कभी एक से अधिक सदस्य भी हो सकते हैं, जैसे हिंदी में {निषेध सूचक} रूपिम के संरूप —
[अन् ~ अ ~ अप ~ निर्] तथा अंग्रेज़ी में {बहुवचन सूचक} रूपिम के संरूप [s ~ z ~ iz]। परंतु सवाल यह है कि किसी भाषा में हमें यदि रूपिम निर्धारण या रूपिम छाँटने के लिए कहा जाए तो हम रूपिमों का निर्धारण कैसे करें?

उदाहरण के लिए यदि आपको हिंदी के नीचे दिए गए शब्द दिए जाएँ तो आप रूपिम निर्धारण किस प्रकार करेंगे?

वर्ग 1	लेख	लेखक	लेखन
	पाठ	पाठक	पाठन
	शोध	शोधक	शोधन
वर्ग 2	असुंदर	सुंदर	
	अकथनीय	कथनीय	
	अनधिकार	अधिकार	

रूपिम निर्धारण की प्रक्रिया को नीचे दिए गए तीन स्तरों पर समझा जा सकता है —

1) **खंडीकरण** — सबसे पहले दिए गए यौगिक शब्दों के खंड किए जाते हैं। खंड करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि ये खंड लघुतम हों तथा अर्थवान हों। अर्थात् इनके उससे अधिक छोटे अर्थवान खंड न किए ज़ा सकें। ऊपर के उदाहरणों के लघुतम तथा अर्थवान खंड इस प्रकार से हो सकते हैं —

वर्ग 1	लेख + क	लेख + न	**वर्ग 2**	अ + सुंदर
	पाठ + क	पठ + न		अन् + आदर
	शोध + क	शोध + न		अन् + अधिकार

यहाँ वर्ग 1 में "लेख", "पाठ", "शोध" रूपों के अपने निश्चित अर्थ हैं और इनसे छोटे खंड हिंदी में नहीं हो सकते। उसी प्रकार "क" रूप का अर्थ है — करने वाला तथा "न" का अर्थ है — जो कुछ किया जा रहा है। इसी प्रकार वर्ग-2 के लघुतम खंड ऊपर दिखाए गए तरीके से किए जा सकते हैं।

2) **अभिनिर्धारण** — अभिनिर्धारण की प्रक्रिया खंडीकरण के बाद आरंभ होती है। लघुतम सार्थक खंडों में देख कर आपको यह निर्धारित करना होता है कि कौन-कौन से रूप एक ही प्रकार्य को व्यक्त कर रहे हैं। ऊपर के उदाहरणों में आप बता सकते हैं कि लेखक तथा लेखन में, पाठक तथा पठन में और शोधक तथा शोधन शब्दों में लेख,पाठ तथा शोध एक ही प्रकार्य को व्यक्त करने वाले रूप हैं तथा "क" और "न" दो अलग-अलग प्रकार्यों को व्यक्त करने वाले अलग रूप हैं। इसी प्रकार वर्ग 2 में सुंदर, कथनीय, आदर तथा अधिकार अलग-अलग प्रकार्यों को व्यक्त करने वाले रूप हैं तथा "अ" एवं "अन्" एक ही प्रकार्य अर्थात् निषेध का कार्य कर रहे हैं।

3) **वर्गीकरण** — अभिनिर्धारण के बाद अब आप समान प्रकार्य करने वाले अलग-अलग रूपों को एक वर्ग में रख सकते हैं और उन्हें उस प्रकार्य को व्यक्त करने वाले प्रतिनिधि रूपिम के वर्ग के संरूप मान सकते हैं। ऊपर के उदाहरणों के आधार पर इस प्रकार का वर्गीकरण प्रस्तुत किया जा सकता है।

वर्ग 1	कुल रूपिम	=	{लेख}, {पाठ}, {शोध}, {क}, तथा {न}
	संरूप	=	किसी भी रूपिम का कोई नहीं।
वर्ग 2	कुल रूपिम	=	{सुंदर}, {कथनीय}, {आदर}, {अधिकार} और {निषेधसूचक}
	संरूप	=	{निषेधसूचक} = [अ ~ अन्]

5.4 रूपिमों के भेद-प्रभेद

रूपिमों के भेद-प्रभेद निम्नलिखित आधारों पर किए जा सकते हैं —

1) प्रयोग के आधार पर
2) अर्थ के आधार पर
3) प्रकार्य के आधार पर

5.4.1 प्रयोग के आधार पर

प्रयोग से यहाँ हमारा तात्पर्य भाषा में रूपिमों के प्रयोग से है। रूपिम स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त हो सकते हैं अथवा नहीं, इस आधार पर इनके दो भेद किए जा सकते हैं — (i) मुक्त रूपिम तथा (ii) बद्ध रूपिम।

i) **मुक्त रूपिम :** "मुक्त" शब्द का ही अर्थ है "स्वतंत्र", अर्थात् वे रूपिम जो भाषा में शब्दों की भाँति स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त हो सकते हैं, मुक्त रूपिम कहलाते हैं जैसे —

लड़का, बच्चा, ईमान, सवार, जल, पुस्तक, दान, दया, अनार, काम आदि।

वस्तुतः भाषा में जो मूल शब्द होते हैं वे ही प्रयोग के आधार मुक्त रूपिम कहे जाते हैं।

ii) **बद्ध रूपिम :** "बद्ध" शब्द का अर्थ होता है — "बँधा हुआ"। अर्थात् वे रूपिम जो भाषा में स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त न होकर किसी अन्य रूपिम के साथ बँधकर या लगकर आते हैं, *बद्ध रूपिम* कहे जाते हैं जैसे —

ई	सवार	+	ई	=	सवारी
	दान	+	ई	=	दानी
पन	बच्चा	+	पन	=	बचपन
	लड़का	+	पन	=	लड़कपन
दार	ईमान	+	दार	=	ईमानदार
	दुकान	+	दार	=	दुकानदार
अन्	अन्	+	आदर	=	अनादर
	अन्	+	अधिकार	=	अनधिकार
वि	वि	+	शेष	=	विशेष
	वि	+	गत	=	विगत
प्र	प्र	+	गति	=	प्रगति
	प्र	+	कार्य	=	प्रकार्य

बद्ध रूपिम भी भाषा की लघुतम-सार्थक इकाइयाँ हैं, केवल ये स्वतंत्र रूप में न आकर अन्य रूपिमों के साथ बंधकर ही प्रयुक्त होती हैं।

शब्द निर्माण की प्रक्रिया में "मुक्त" तथा "बद्ध" दोनों ही प्रकार के रूपिमों का विशेष योगदान रहता है। भाषाओं में प्रायः शब्द निर्माण इन दोनों ही प्रकार के रूपिमों के संयोग से संभव होता है। कुछ उदाहरण आप देख सकते हैं —

i) **मुक्त + मुक्त रूपिम**

स्नान	+	गृह	=	स्नानगृह
धर्म	+	वीर	=	धर्मवीर
काली	+	मिर्च	=	कालीमिर्च
मंत्री	+	परिषद्	=	मंत्रिपरिषद्

ii) **मुक्त + बद्ध रूपिम**

सुंदर	+	ता	=	सुंदरता
सुनार	+	इन	=	सुनारिन
लड़का	+	ए	=	लड़के
ईमान	+	दार	=	ईमानदार

iii) **बद्ध + मुक्त रूपिम**

अ	+	सुंदर	=	असुंदर
बे	+	चैन	=	बेचैन
अन्	+	अधिकार	=	अनधिकार
सु	+	शील	=	सुशील

iv) **बद्ध + बद्ध रूपिम**

वि	+	ज्ञ	=	विज्ञ
अ	+	ज्ञ	=	अज्ञ

5.4.2 अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर रूपिमों के दो भेद किए जाते हैं — (i) मूलांश तथा (ii) प्रत्यय।

मूलांश वास्तव में शब्द के अर्थ का आधार होता है तथा प्रत्यय का अर्थ मूलांश के अर्थ में परिवर्तन-परिवर्धन करता है। उदाहरण के लिए "लड़के" शब्द में दो रूपिम हैं — लड़का + ए। इनमें "लड़का" मूलांश है तथा "ए" प्रत्यय। इस शब्द में "लड़का" रूपिम पूरे शब्द के मुख्य अर्थ को बताने वाला है। यदि हम लड़का शब्द का अर्थ बताना चाहें तो बता सकते हैं कि यह प्राणिवाचक है, पुरुष है तथा कम उम्र वाला है। जबकि "ए" रूपिम (प्रत्यय) इस "लड़का" शब्द के मूल अर्थ में थोड़ा सा परिवर्तन कर उसे बहुवचन बना रहा है। इसे हम इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं —

लड़के = लड़का + ए

$$\begin{bmatrix} + & \text{प्राणी} \\ + & \text{मानव} \\ + & \text{पुरुष} \\ + & \text{कम उम्र} \end{bmatrix} \qquad \begin{bmatrix} + & \text{बहुवचन} \end{bmatrix}$$

वाक्य में वितरण की दृष्टि से देखें तो मूलांश की तुलना में प्रत्यय का क्षेत्र अधिक व्यापक होता है। मूलांश तो सदैव कोशगत अर्थ बताता है जबकि प्रत्यय व्याकरणिक अर्थ देता है। कुछ अन्य उदाहरण देखिए —

		मूलांश		**प्रत्यय**	
सुनारिन	=	सुनार	+	इन	(स्त्रीलिंग सूचक)
सुंदरता	=	सुंदर	+	ता	(भाववाचक संज्ञार्थक)
बुराई	=	बुरा	+	ई	(संज्ञार्थक)
बाज़ारू	=	बाज़ार	+	ऊ	(विशेषण सूचक)

जैसा कि आपको बताया गया है, प्रत्यय वे रूपिम हैं जो मूलांश में जोड़े जाते हैं और व्याकरणिक अर्थ प्रदान करते हैं।

भाषाओं में प्रत्यय मूलांश के आरंभ में, मध्य में तथा अंत में तीनों ही स्थानों पर लग सकते हैं। हिंदी में प्रायः प्रत्यय मूलांश के आरंभ या अंत में ही लगते हैं परंतु संसार में ऐसी अनेक भाषाएँ हैं जिनमें प्रत्यय मूलांश के बीच में ही लगते हैं। इस आधार पर प्रत्यय तीन प्रकार के हो जाते हैं — पूर्व-प्रत्यय, मध्य-प्रत्यय तथा अन्त्य प्रत्यय। हिंदी में केवल पूर्व-प्रत्यय तथा अन्त्य-प्रत्यय के उदाहरण ही प्राप्त होते हैं जैसे —

i) **पूर्व-प्रत्यय** वे प्रत्यय होते हैं जो मूलांश के पूर्व में या आरंभ में लगते हैं जैसे —

					पूर्व-प्रत्यय
ला	+	जवाब	=	लाजवाब	ला —
अ	+	सहनीय	=	असहनीय	अ —
अप	+	शकुन	=	अपशकुन	अप —
अन	+	गिनत	=	अनगिनत	अन —

वि	+	लुप्त	=	विलुप्त	वि —
प्र	+	कार्य	=	प्रकार्य	प्र — आदि।

हिंदी में पूर्व-प्रत्ययों को उपसर्ग भी कहा जाता है।

ii) **अन्त्य-प्रत्यय** — ये प्रत्यय मूलांश के अंत में लगाए जाते हैं जैसे —

					अन्त्य-प्रत्यय
धोबी	+	इन	=	धोबिन	— इन
लड़की	+	इयाँ	=	लड़कियाँ	— इयाँ
सवार	+	ई	=	सवारी	— ई
बेईमान	+	ई	=	बेइमानी	— ई
ईमान	+	दार	=	ईमानदार	— दार
घर	+	वाला	=	घरवाला	— वाला आदि।

5.4.3 प्रकार्य के आधार पर

भाषा में रूपिम किस प्रकार्य को कर रहा है इस आधार पर भी रूपिमों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है — (i) शब्द साधक रूपिम (व्युत्पादक) तथा (ii) रूप साधक रूपिम।

1) शब्द साधक रूपिम

जैसा कि पीछे भी बताया गया था, रूपिम एक शब्द से दूसरा शब्द बनाते हैं। इन्हें ही व्युत्पादक रूपिम कहते हैं। व्युत्पादक रूपिमों से बना शब्द प्रयोग की दृष्टि से साधारण शब्द से समान होता है। जैसे —

सोना	+	व्युत्पादक रूपिम	=	सुनार
सुनार	+	इन	=	सुनारिन
धन	+	वान	=	धनवान
धन	+	ई	=	धनी
ईमान	+	दार	=	ईमानदार
ईमानदार	+	ई	=	ईमानदारी आदि।

भाषा में शब्द निर्माण की प्रक्रिया चूँकि बराबर चलती रहती है अतः व्युत्पादक प्रत्ययों की संख्या असीमित होती है। ये रूपिम प्रायः संज्ञा से विशेषण, विशेषण से संज्ञा अथवा क्रिया से संज्ञा आदि बनाने के काम आते हैं।

पीछे 5.2 में हमने शब्द वर्ग की चर्चा करते समय बताया था कि भाषा में शब्द विभिन्न शब्द वर्गों (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि) के सदस्य होते हैं। व्युत्पादक रूपिमों (प्रत्ययों) से लगकर बने नए शब्दों के प्रायः शब्द-वर्ग ही बदल जाते हैं जैसे

लूट (क्रिया)	+	एरा	=	लुटेरा (संज्ञा)
दान (संज्ञा)	+	ई	=	दानी (विशेषण)
सुंदर (विशेषण)	+	ई	=	सुंदरी (संज्ञा)
लड़का (संज्ञा)	+	पन	=	लड़कपन (भाव वाचक संज्ञा)

2) रूप साधक रूपिम

रूप साधक रूपिम (प्रत्यय) वे रूपिम होते हैं जो किसी शब्द को वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य बनाते हैं। इन रूपिमों के लगने से एक ही शब्द के विभिन्न रूप हमें प्राप्त होते हैं। अर्थात् शब्द तो एक ही रहता है परंतु उसके रूपों में भिन्नता आ जाती है, जैसे — 'लड़का' शब्द में रूप साधक प्रत्यय लगने से विभिन्न रूप प्राप्त होते हैं —

1) लड़का जाता है।
2) लड़के जाते हैं।

3) लड़कों को बुलाओ।

4) लड़को, इधर आओ।

5) हे लड़के! क्या कर रहे हो? आदि।

इन सभी वाक्यों में "लड़का", लड़के, लड़को, लड़कों, आदि शब्दों में मूल शब्द तो एक ही है — "लड़का" परंतु इसके रूपों में भिन्नता आ गई है इसलिए उन्हें "शब्द रूप" भी कहते हैं।

इस प्रकार रूप साधक रूपिम (प्रत्यय) से शब्दों के बाह्य स्वरूप में ही परिवर्तन होता है, शब्द का अस्तित्व नहीं बदलता जबकि व्युत्पादक रूपिमों से नया शब्द ही प्राप्त होता है।

इसके अतिरिक्त व्युत्पादक प्रत्यय लगाकर जो नए शब्द बनते हैं, यदि उनको भी वाक्य में प्रयुक्त करना होता है तो उनमें भी रूप साधक रूपिम लगाने होते हैं क्योंकि बिना इन रूपिमों के लगाए शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य नहीं बनते. जैसे "लूट" शब्द में 'एरा' रूपिम लगाकर "लुटेरा" शब्द बनाया जाता है लेकिन जब "लुटेरा" शब्द को वाक्य में प्रयुक्त करना होता है तब उसमें कोई न कोई रूप साधक प्रत्यय अवश्य लगाया जाता है। जैसे :

1) लुटेरे ने सब माल लूट लिया। (लुटेरा + ए)

2) लुटेरों को पुलिस ने पकड़ लिया। (लुटेरा + ओं)

इस प्रकार भाषा में शब्द साधक या व्युत्पादक तथा रूप साधक दोनों ही प्रकार के रूपिमों का विशेष महत्व होता है। नीचे दोनों के प्रमुख अंतरों को तालिका में दिया जा रहा है —

व्युत्पादक रूपिम (प्रत्यय)	**रूपसाधक-रूपिम (प्रत्यय)**
1) व्युत्पादक प्रत्यय लगने के बाद बना शब्द स्वतंत्र शब्द की भाँति भाषा में प्रयुक्त हो सकता है। जैसे — सोना + आर → सुनार	1) रूप साधक प्रत्यय लगकर बना शब्द स्वतंत्र शब्द की भाँति प्रयुक्त नहीं हो सकता। जैसे — लड़का + ए → लड़के
2) व्युत्पादक प्रत्यय लगकर बने शब्दों में पुनः प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाए जा सकते हैं जैसे : सोना + आर → सुनार + इन → सुनारिन घोड़ा + सवार → घुड़सवार + ई → घुड़सवारी	2) रूप साधक प्रत्यय लग जाने के बाद फिर उस शब्द में कोई अन्य प्रत्यय नहीं लग सकता।
3) शब्द से शब्द बनाने की प्रक्रिया व्युत्पादन है।	3) रूप साधन, शब्द से पद बनाने की प्रक्रिया है, इसलिए इसे "शब्दरूप" भी कहते हैं।
4) व्युत्पादक प्रत्ययों के लगने से बने शब्द नए शब्द होते हैं। प्रायः उनका शब्द वर्ग बदल जाता है। जैसे — लूट (क्रिया) लुटेरा (संज्ञा) सुंदर (विशेषण) सुंदरी (संज्ञा)	4) रूप साधक प्रत्यय लगकर एक ही शब्द के विभिन्न व्याकरणिक रूप प्राप्त होते हैं।
5) व्युत्पादक प्रत्यय वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का परस्पर संबंध सूचित नहीं करते।	5) रूप साधक प्रत्यय वाक्य में प्रयुक्त शब्दों (पदों) का अन्य शब्दों (पदों) से संबंध बताते हैं जैसे — 1) लड़के ने आम खाया। (यहाँ लड़का में "ए" प्रत्यय संज्ञा के तिर्यकरूप की ओर संकेत कर रहा है तथा बता रहा है कि इस वाक्य की क्रिया का वही कर्ता है)
6) भाषा में व्युत्पादक प्रत्ययों की संख्या अधिक मात्रा में होती है।	6) रूप साधक प्रत्यय प्रायः कम संख्या में होते हैं।

5.5 कुछ विशिष्ट रूपिम

5.5.1 शून्य रूपिम (Zero morph)

पीछे हमने चर्चा की थी कि किसी भी शब्द का प्रयोग यदि वाक्य में किया जाएगा तो उसमें पहले कोई न कोई रूप साधक प्रत्यय या रूपिम अवश्य लगाया जाएगा क्योंकि बिना "प्रत्यय" लगाए शब्द "पद" की कोटि में नहीं आ सकता। इसलिए लड़का, बच्चा आदि शब्दों का जब वाक्य में प्रयोग किया जाता है तब उनमें ए, ओ, ओं आदि प्रत्यय जोड़े जाते हैं। लेकिन आपके मन में नीचे दिए गए वाक्यों को देखकर यह प्रश्न उठ सकता है कि इनमें प्रयुक्त शब्दों में तो कोई प्रत्यय नहीं जोड़ा गया है और फिर भी ये शब्द वाक्य में प्रयुक्त हो रहे हैं जैसे :

	शब्द
1) लड़का जाता है।	(लड़का)
2) बच्चा पढ़ रहा है।	(बच्चा)
3) लड़की खाना बना रही है।	(लड़की)
4) घोड़ा तेज़ दौड़ता है।	(घोड़ा)

तब क्या इन शब्दों में प्रयुक्त "लड़का", "लड़की", "बच्चा", "घोड़ा" शब्द पद न होकर शब्द हैं? परंतु नियमानुसार ऐसा तो हो ही नहीं सकता। वाक्य में तो शब्द बिना प्रत्यय लगे प्रयुक्त हो ही नहीं सकता, क्योंकि वाक्य में प्रयुक्त शब्द, शब्द न होकर पद बन जाता है।

इस समस्या के समाधान के लिए भाषा विज्ञान में एक "शून्य रूपिम" की संकल्पना की गई है जिसका हमने पीछे उल्लेख मात्र किया है। ऊपर दिए गए वाक्यों में चूँकि कोई रूपिम दिखाई नहीं दे रहा अतः इन शब्दों में माना जाएगा कि एक शून्य रूपिम लगा हुआ है और शून्य रूपिम लग कर ही ये शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने की क्षमता प्राप्त करते हैं।

इसी प्रकार अंग्रेज़ी के निम्नलिखित शब्दों पर ध्यान दीजिए —

एकवचन	बहुवचन
deer	deer (Ø)
sheep	sheep (Ø)

अर्थात् इन शब्दों के एकवचन तथा बहुवचन रूप दोनों समान हैं परतु यह समानता केवल स्वरूप के स्तर की है। यहाँ भी यह माना जाता है कि बहुवचन रूपों में एक शून्य रूपिम लगा हुआ है।

इस प्रकार शून्य रूपिम की सत्ता निषेधात्मक नहीं है। इसका अस्तित्व है, केवल इसकी कोई आकृति नहीं है, ऐसा मानना चाहिए। यह भी अन्य रूपिमों की भाँति व्याकरणिक प्रकार्य पूरे करता है, इसके अलग-अलग रूपों में अलग-अलग अर्थ और प्रकार्य संभव हैं, और यह भी शब्दों को अन्य रूप साधक प्रत्ययों की तरह पद बना सकता है।

उदाहरण के लिए हिंदी में भी अनेक शब्दों में शून्य रूपिम बहुवचन बनाने का कार्य करता है जैसे —

एकवचन	बहुवचन
(एक) पेड़	(अनेक) पेड़ + (Ø)
(एक) आदमी	(अनेक) आदमी + (Ø)
(एक) घर	(अनेक) घर + (Ø) आदि।

जिन शब्दों में हमें किसी रूपिम की भौतिक सत्ता दिखाई नहीं देती, हम "शून्य रूपिम" मान लेते हैं। माना जाता है कि प्रकार्य की दृष्टि से इन शब्दों में भी यह रूपिम उपस्थित है केवल अभिव्यक्ति के धरातल पर ही वह शून्य है।

5.5.2 सर्वदिशी रूपिम (Suppletive morph)

भाषाओं में कुछ ऐसे रूप भी प्राप्त होते हैं जिनका प्रकार्य तो एक ही होता है परंतु उनमें ध्वनि साम्य नहीं होता। उदाहरण के लिए हिंदी में क्रिया रूपों के जब भूतकाल रूप बनाए जाते हैं तो मूल क्रिया

रूप में -आ प्रत्यय जोड़ दिया जाता है जैसे —

पढ़	पढ़ा
चल	चला
उठ	उठा
बैठ	बैठा

लेकिन "जाना" क्रिया का भूतकाल रूप "गया" बनता है। वस्तुतः यहाँ जाना के "ज" का "ग" रूप में परिवर्तन हो गया है। मूलतः प्रकार्य या अर्थ के स्तर पर तो "ज" तथा "ग" एक ही हैं परन्तु अभिव्यक्ति के स्तर पर दोनों में अंतर आ गया है क्योंकि इन दोनों में कोई ध्वनि साम्य नहीं है। इसी तरह के रूपों को 'सर्वादेशी' रूप कहा जाता है।

अंग्रेज़ी भाषा में भी आपको इस रूपिम के उदाहरण मिल सकते हैं। नीचे दिए गए अंग्रेज़ी शब्दों पर ध्यान दीजिए —

kind	kinder
thick	thicker
sweet	sweeter

लेकिन 'good' का 'better' बनता है। प्रकार्य की दृष्टि से दोनों एक ही हैं अतः एक ही रूपिम के संरूप माने जाएँगे। इस प्रकार के रूपों को ही सर्वादेशी रूप कहा जाता है।

5.5.3 रिक्त रूपिम (Empty morph)

"श्वेत" तथा "छत्र" दो शब्दों से मिलकर शब्द बनता है — श्वेत-छत्र। लेकिन इस शब्द का उच्चरित रूप होता है — श्वेतच्छत्र। अर्थात् श्वेत तथा छत्र के बीच एक "च" की सत्ता और आ जाती है। अर्थ के धरातल पर इस "च" का कोई अर्थ नहीं है। लेकिन प्रकार्य के स्तर पर यह "च" वस्तुतः श्वेत तथा छत्र के बीच में आई रिक्तता के भरने का कार्य कर रहा है। इसे हम शून्य रूपिम भी नहीं कह सकते क्योंकि यह एक ध्वन्यात्मक इकाई के रूप में अभिव्यक्त भी हो रहा है।

ऐसे रूपिमों को जो शब्द के बीच में रिक्त स्थान की पूर्ति का काम करते हैं, रिक्त रूपिम कहे जाते हैं।

अंग्रेज़ी भाषा में कुछ शब्दों के बहुवचन रूप बनाने के लिए - अन प्रत्यय लगता है जैसे ox→oxen अर्थात् अंग्रेज़ी में बहुवचन बनानेवाले अन्य रूपों के समान -अन (-en) भी एक रूप है। लेकिन जब child शब्द का बहुवचन बनाया जाता है जैसे —

child (चाइल्ड) → children (चिल्ड्रन) (child + r + en)

तो children में child तथा en के बीच में र् (r) रूप आ जाता है। यह r भी यहाँ child तथा -en के बीच की रिक्तता को भरने वाला रिक्त रूपिम है।

वस्तुतः यदि आप हिंदी के श्वेत तथा छत्र को मिलाकर बोलने का प्रयास करेंगे तो उच्चारण की स्वाभाविकता बनाए रखने के लिए "त्र" तथा "छ" के बीच में एक "च" का उच्चारण स्वतः ही आ जाएगा। इसी प्रकार अंग्रेज़ी के चाइल्ड (child) तथा -अन् (-en) का उच्चारण आप मिलाकर करते हैं तो "चिल्ड्रन" के रूप में स्वाभाविक उच्चारण हो ही नहीं सकता क्योंकि दोनों के बीच में एक गैप या रिक्त स्थान है। इसी रिक्तता को पूरा करने के लिए जिन ध्वन्यात्मक रूपों का प्रयोग किया जाता है उनको "रिक्त रूपिम" कहते हैं।

अभ्यास 2

क) नीचे दिए कुछ कथन सही हैं, कुछ गलत। सही कथन के आगे (√) तथा गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए —

	सही	गलत
i) भाषा के लघुतम सार्थक खंडों को रूप कहा जाता है।	☐	☐
ii) संरूपों का स्वरूप भिन्न होता है, परन्तु प्रकार्य एक ही होता है।	☐	☐
iii) एक संरूप के अंतर्गत कई रूपिम आ सकते हैं।	☐	☐

iv) रूपिम छाँटने के लिए शब्दों के खंड करना आवश्यक होता है। ☐ ☐

v) शब्द के मुख्य अर्थ का पता प्रत्ययों से चलता है। ☐ ☐

vi) व्युत्पादक प्रत्यय लगाकर बनाए गए शब्द स्वतंत्र शब्द नहीं होते। ☐ ☐

ख) कोष्ठक में दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प पर (√) का निशान लगाइए —

i) वे रूपिम जो किसी शब्द को वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य बनाते हैं ..... कहलाते हैं। (व्युत्पादक रूपिम/रूप साधक रूपिम)

ii) रूप साधक रूपिमों से बने शब्दों को ..... कहते हैं। (शब्द रूप/यौगिक शब्द)

iii) हिन्दी में उपसर्गों को ..... भी कहा जाता है। (पूर्व प्रत्यय/अन्त्य प्रत्यय)

iv) जिन रूपिमों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता उन्हें ..... कहते हैं। (मुक्त रूपिम/बद्ध रूपिम)

v) जो रूपिम भौतिक रूप में नहीं होते, लेकिन प्रकार्य के स्तर पर उनकी सत्ता होती है उन्हें .....कहते हैं। (शून्य रूपिम/रिक्त रूपिम)

ग) 5-6 पंक्तियों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

i) रूपिम तथा संरूप

.....

.....

.....

.....

.....

ii) मुक्त रूपिम तथा बद्ध रूपिम

.....

.....

.....

.....

.....

iii) पूर्व प्रत्यय तथा अन्त्य प्रत्यय

.....

.....

.....

.....

.....

iv) रूपसाधन तथा व्युत्पादन

.....

.....

.....

.....

.....

v) शून्य रूपिम तथा रिक्त रूपिम

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 सारांश

इस इकाई में आपको सबसे पहले "शब्द" की संकल्पना से परिचित कराया गया।

- आपको बताया गया कि शब्द भाषा की स्वतंत्र तथा अर्थवान इकाइयाँ होते हैं और किसी संकल्पना या प्रकार्य को व्यक्त करते हैं।
- शब्द भाषा में स्वतंत्र रूप से तो प्रयुक्त हो सकते हैं परंतु वाक्य में उसी रूप में प्रयुक्त नहीं हो सकते। वाक्य में प्रयुक्त करने से पूर्व शब्दों में कुछ प्रत्यय जोड़कर उन्हें पहले "पद" बनाया जाता है।
- इसी संदर्भ में आपने शब्द तथा पद के अंतर पर विस्तार से अध्ययन किया।
- भाषा में नए-नए शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। इसी प्रक्रिया के संदर्भ में "शब्द निर्माण" शीर्षक के अंतर्गत आपने पढ़ा कि किस प्रकार एक शब्द से दूसरा शब्द निर्मित होता है।
- इसी खंड में आपको शब्दों के भेद-प्रभेद बताते हुए हिंदी के विभिन्न प्रकार के शब्दों से भी परिचित कराया गया।
- भाषा के तमाम शब्दों को व्याकरण में कितने प्रकार के शब्द वर्गों में बाँटा जाता है और हिंदी में कौन-कौन से प्रमुख शब्द वर्ग हैं — इसके बारे में भी आपने विस्तार से अध्ययन किया।
- इस इकाई के खंड 5.3 में आपको रूप की संकल्पना, रूप तथा शब्दों में संबंध, रूप, रूपिम और संरूप तथा रूपिम निर्धारण की प्रक्रिया के विषय में विस्तार से बताया गया।
- इस इकाई के खंड 5.4 में रूपिमों के भेद-प्रभेदों की विस्तार से चर्चा की गई तथा खंड 5.5 में कुछ विशिष्ट रूपिमों से भी आपको परिचित कराया गया।

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप इकाई 6-7 को आसानी से समझ सकेंगे।

5.7 शब्दावली

इस पाठ में आपको निम्नलिखित विशिष्ट शब्दावली की जानकारी मिली:

प्रकार्य
सामासिक शब्द
मूल शब्द
यौगिक शब्द
तत्सम शब्द
तद्भव शब्द
देशज शब्द
आगत शब्द
संकर शब्द
मूलांश
प्रत्यय
व्युत्पादन
वितरण
रूप
रूपिम
संरूप
निषेध वाची
खंडीकरण
अभिनिर्धारण
मुक्त रूपिम
बद्ध रूपिम
रूपसाधन

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) *प्रयोग और प्रयोग* : वी.रा. जगन्नाथन (1981), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।

2) *हिंदी का शैक्षिक व्याकरण* : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, बाल गोविंद मिश्र, भोलानाथ तिवारी (1980) नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

5.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

क) i) √
ii) √
iii) ×
iv) √
v) ×

ख) इकाई से स्वयं जाँच करें।

अभ्यास 2

क) i) √
ii) √
iii) ×
iv) √
v) ×
vi) ×

ख) i) रूपसाधक
ii) शब्दरूप
iii) पूर्व प्रत्यय
iv) बद्ध रूपिम
v) शून्य रूपिम

ग) इकाई से स्वयं जाँच करें।

इकाई 6 रूप रचना : रूप सिद्धि

6.0 उद्देश्य
6.1 प्रस्तावना
6.2 संज्ञा शब्दों की रूप सिद्धि
  6.2.1 संज्ञा शब्दों से संबंधित व्याकरणिक कोटियाँ
  6.2.2 संज्ञा शब्दों के बहुवचन रूप
  6.2.3 परसर्ग का प्रभाव
  6.2.4 रूप-स्वनिमिक परिवर्तन
6.3 सर्वनाम शब्दों की रूप सिद्धि
  6.3.1 सर्वनाम शब्दों से संबंधित व्याकरणिक कोटियाँ
  6.3.2 सर्वनाम शब्दों की रूप रचना
  6.3.3 सर्वनाम शब्दों के वैकल्पिक रूप
  6.3.4 सर्वनामों में "ही" अव्यय का प्रयोग
6.4 विशेषण शब्दों की रूप सिद्धि
  6.4.1 संज्ञा-विशेषण अन्विति
  6.4.2 विशेषण शब्दों की रूप-रचना
6.5 क्रिया शब्दों की रूप सिद्धि
  6.5.1 क्रिया शब्दों से संबंधित व्याकरणिक कोटियाँ
  6.5.2 क्रिया शब्दों की रूप रचना
  6.5.3 क्रिया शब्दों के वैकल्पिक रूप
6.6 सारांश
6.7 शब्दावली
6.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
6.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- हिंदी की वाक्य रचना के लिए व्याकरणिक कोटियों की सूचना दे सकेंगे,
- वाक्य में अन्विति का महत्व समझा सकेंगे,
- हिंदी में संज्ञा, विशेषण और सर्वनाम वर्गों के शब्दों में रूपगत परिवर्तन की स्थितियों का विवेचन कर सकेंगे,
- हिंदी में परसर्गों के प्रयोग से संज्ञा, विशेषण और सर्वनाम शब्दों पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसे समझा सकेंगे,
- सर्वनामों के प्रचलित विकारी रूपों में शुद्ध और अशुद्ध रूपों को पहचान पाएँगे,
- संज्ञा, विशेषण और सर्वनाम शब्दों के विकारी रूपों का मौखिक और लिखित रूप में सही प्रयोग कर पाएँगे,
- क्रिया शब्दों की रूप रचना समझा सकेंगे,
- अनेक व्याकरणिक तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का विवेचन भी कर सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

इकाई 5 में आपने शब्द और रूप, शब्द वर्ग और व्याकरणिक कोटियों के बारे में पढ़ा। आप जानते हैं कि केवल सार्थक शब्दों को एक साथ रख देने से वाक्य नहीं बन जाता। वाक्य बनाने के लिए

आवश्यक शब्दों का कुछ नियमों के आधार पर रूप बदलना पड़ता है। निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से देखिए —

1) यह लड़कों का स्कूल है।
2) इस स्कूल में लड़के पढ़ते हैं।
3) यह लड़का स्कूल में पढ़ता है।
4) यह लड़कियों का स्कूल है।
5) इस स्कूल में लड़कियाँ पढ़ती हैं।
6) यह लड़की स्कूल में पढ़ती है।

इन वाक्यों में यह, लड़का, लड़की, पढ़ना, होना शब्दों के अलग-अलग रूपों का प्रयोग किया गया है। जैसे —

1) यह	→	इस
2) लड़का	→	लड़कों का लड़के लड़का
3) लड़की	→	लड़कियों का लड़कियाँ लड़की
4) पढ़ना	→	पढ़ते हैं पढ़ता है पढ़ती है।
5) होना	→	है हैं

वाक्य की आवश्यकता के अनुसार *शब्दों के रूप परिवर्तन को रूप सिद्धि कहते हैं।*

इस इकाई में आप हिंदी के विभिन्न शब्द वर्गों में होने वाले परिवर्तनों के बारे में पढ़ेंगे। इकाई 5 में आपने विभिन्न शब्द वर्गों — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण आदि के बारे में पढ़ा और देखा कि इनमें कुछ वर्गों के शब्द विकारी हैं, अर्थात् अपना रूप बदलते हैं। इस इकाई में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया शब्दों की रूप सिद्धि (रूपगत परिवर्तन) के बारे में हम विस्तार से पढ़ेंगे।

6.2 संज्ञा शब्दों की रूप सिद्धि

6.2.1 संज्ञा शब्दों से संबंधित व्याकरणिक कोटियाँ

सभी भाषाओं में भिन्न-भिन्न व्याकरणिक कोटियों को महत्वपूर्ण माना जाता है और भिन्न-भिन्न प्रकार से उन्हें दर्शाया जाता है। लिंग और वचन संज्ञा शब्दों से संबंधित व्याकरणिक कोटियाँ हैं। अंग्रेज़ी में केवल निर्जीव संज्ञा जैसे — मकान, मेज़, किताब का कोई लिंग नहीं होता। इसके विपरीत हिंदी में सभी संज्ञा शब्दों का पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग रूप होता है। संज्ञा शब्द चाहे वह हिंदी का हो या विदेशी भाषा से आया हुआ शब्द हो, जब तक उसे किसी एक लिंग प्रकार से न जोड़ा जाए तब तक उसका हिंदी के वाक्य में प्रयोग नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए "बिस्कुट" अंग्रेज़ी शब्द है जिसे हिंदी में भी स्वीकार कर लिया गया है। अब ऐसे वाक्य बनाने के लिए "बिस्कुट (अच्छा/सस्ता) है" यह जानना ज़रूरी है कि "बिस्कुट" शब्द पुल्लिंग है अथवा स्त्रीलिंग। इस जानकारी के बिना हिंदी में वाक्य बनाना असंभव है। इसी प्रकार अन्य व्याकरणिक कोटि "वचन" अर्थात् एक-अनेक का भेद भी महत्वपूर्ण है।

कुछ शब्दों से संबंधित व्याकरणिक कोटियों की सूचना हमें उन्हीं शब्दों के रूप से मिल जाती है और कुछ के बारे में वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों से मिलती है।

उदाहरण के लिए —

1) पक्षी आकाश में उड़ते हैं।
2) मछलियाँ पानी में रहती हैं।

इन वाक्यों में "मछलियाँ" शब्द के रूप से ही मालूम पड़ता है कि यह एक से अधिक "बहुवचन" में है लेकिन "पक्षी" शब्द रूप से ऐसी जानकारी नहीं मिलती। पक्षी एक है अथवा अनेक — यह हमें क्रिया रूप "उड़ते हैं" से मालूम पड़ता है। इससे स्पष्ट है कि संज्ञा शब्दों के बहुवचन रूप के लिए उनका लिंग जानना आवश्यक है और संज्ञा शब्दों के लिंग तथा वचन दोनों की जानकारी सही वाक्य बनाने के लिए आवश्यक है। इसी प्रकार ऊपर 6.1 में दिये वाक्यों में "लड़कों, लड़कियों" शब्द रूप उनके बाद आने वाले परसर्ग के प्रभाव से बदले हैं।

उपर्युक्त चर्चा के आधार पर कहा जा सकता है कि संज्ञा शब्द की रूप सिद्धि तीन इकाइयों से संबंधित है — लिंग, वचन और परसर्ग। इनमें लिंग प्रत्येक संज्ञा शब्द में अंतर्निहित है। उसे शब्द के बाहरी रूप में नहीं दिखाया जाता किन्तु बहुवचन और परसर्ग के प्रयोग का प्रभाव शब्द के रूप में दिखाया जाता है। अतः संज्ञा शब्दों की रूप सिद्धि के अंतर्गत विभिन्न संज्ञा शब्दों के परसर्ग के साथ आने वाले विकारी रूप और बहुवचन रूप की चर्चा की जाएगी।

6.2.2 संज्ञा शब्दों के बहुवचन रूप

जैसा कि ऊपर बताया गया था संज्ञा शब्दों का पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग रूप किसी एक लिंग भेद से संबंधित होना अनिवार्य है। लिंग संज्ञा शब्दों की प्रमुख विशेषता है। इसे केवल अभ्यास के द्वारा ही सीखा जा सकता है। शब्दों के बहुवचन रूप बनाने और वाक्य में सही रूप का प्रयोग करने के लिए इसकी जानकारी अत्यंत आवश्यक है।

उदाहरण के लिए — "ताला" और "माला" दो शब्दों के बहुवचन रूपों पर ध्यान दीजिए :

1) ताला — ताले
2) माला — ?

यदि आप माला शब्द के बारे में यह नहीं जानते अथवा नहीं बता सकते कि यह "स्त्रीलिंग" है तो आप इसके बहुवचन रूप के लिए तुरंत कहेंगे — "माले" जबकि "माला" शब्द का बहुवचन रूप है "मालाएँ"। "ताले" और "मालाएँ" का अंतर इसीलिए है कि "ताला" पुल्लिंग शब्द है, "माला" स्त्रीलिंग शब्द, और हिंदी में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के नियम अलग-अलग हैं।

संज्ञा शब्दों के बहुवचन रूप बनाने के लिए उन्हें दो वर्गों में बाँटिए —

1) पुल्लिंग,
2) स्त्रीलिंग

उदाहरण के लिए — लड़का, लड़की, कमरा, कुर्सी, सड़क, शहर, नदी, पहाड़, भालू, कवि, किताब, माला।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
लड़का	लड़की
कमरा	कुर्सी
शहर	सड़क
ताला	नदी
भालू	किताब
कवि	माला

बहुवचन रूप बनाने से पहले इन शब्दों को फिर दो-दो वर्गों में इस प्रकार बाँटिए —

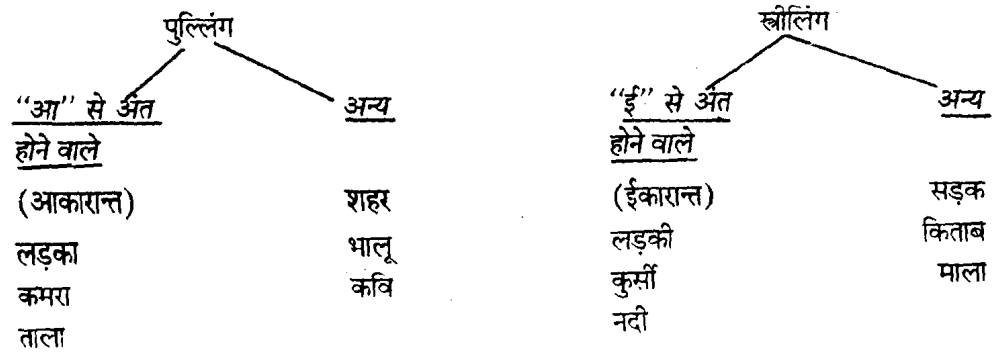

अब इसके बहुवचन रूप इस प्रकार बनाइए —

(ऊपर लिखे अन्य शब्दों के बहुवचन रूप इसी प्रकार बनाएँ)

6.2.3 परसर्ग का प्रभाव

अब नीचे दिए गए वाक्यों में संज्ञा की रूप रचना पर परसर्ग के कारण होने वाले प्रभाव पर ध्यान दीजिए —

यह *कमरा* बड़ा है। इस *कमरे* में दो दरवाज़े हैं और तीन *खिड़कियाँ* हैं। *दरवाज़ों* पर नीले परदे लगे हैं और *खिड़कियों* पर पीले। दूसरे सभी *कमरों* में हरे परदे हैं।

आपने देखा कि संज्ञा शब्दों की रूप रचना वचन और परसर्ग से प्रभावित होती है। इन व्याकरणिक विशेषताओं के लिए संज्ञा शब्दों की रूप सिद्धि इस प्रकार होती है —

	परसर्ग रहित		परसर्ग सहित	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	लड़का	लड़के	लड़के	लड़कों
	ताला	ताले	ताले	तालों
	शहर	शहर	शहर	शहरों
	आदमी	आदमी	आदमी	आदमियों
स्त्रीलिंग	लड़की	लड़कियाँ	लड़की	लड़कियों
	औरत	औरतें	औरत	औरतों
	किताब	किताबें	किताब	किताबों
	माला	मालाएँ	माला	मालाओं

सामान्यतः परसर्ग रहित रूप को "अविकारी" और परसर्ग सहित रूप को "विकारी" रूप कहा जाता है।

6.2.4 रूप-स्वनिमिक परिवर्तन

आपने खंड 1 में स्वनिम के बारे में पढ़ा और खंड 2 इकाई 5 में रूप के बारे में। इस इकाई में आप विभिन्न व्याकरणिक कोटियों के सूचक रूपों के बारे में पढ़ेंगे। आपने अभी पढ़ा कि "लड़का", "लड़की" शब्दों के मूल रूप हैं तथा उनके विकारी रूप कैसे बनते हैं। उन विकारी शब्दों में संयुक्त रूपिम अलग-अलग करके देखिए —

लड़का + ए → लड़के
लड़का + ओं → लड़कों
लड़की + आँ → लड़कियाँ
लड़की + ओं → लड़कियों

उपर्युक्त शब्दों में "ए", "ओ", "आँ", "ओं" प्रत्ययों के योग से उपर्युक्त पद बनाये गये हैं। लेकिन इन प्रत्ययों को मिलाने पर कुछ स्वनिमिक (ध्वनिगत) परिवर्तन भी हुए हैं जिन्हें लिखित रूप में दिखाया गया है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि *प्रत्ययों आदि के योग से पद रचना को रूप सिद्धि कहते हैं* और *उस योग से होने वाले स्वनिमिक परिवर्तनों को रूप-स्वनिमिक परिवर्तन कहते हैं।* ये परिवर्तन अलग-अलग शब्दों में अलग-अलग या मनमाने ढंग से नहीं होते बल्कि इनके कुछ निश्चित नियम हैं जिन्हें रूप-स्वनिमिक नियम कहते हैं।

ऊपर बताये गये संज्ञा शब्दों की रूप सिद्धि में आपने देखा कि —

क) पुल्लिंग शब्दों के एकवचन विकारी, बहुवचन विकारी और अविकारी दोनों में रूप परिवर्तन होता

है लेकिन केवल "आ" से अंत होने वाले पुल्लिंग शब्दों में। अन्य शब्दों में एकवचन विकारी और बहुवचन अविकारी रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता। एकवचन विकारी और बहुवचन अविकारी रूप में "ए" प्रत्यय और बहुवचन विकारी रूप में "ओं" प्रत्यय जोड़ा जाता है।

ख) स्त्रीलिंग शब्दों में एकवचन विकारी रूप में परिवर्तन नहीं होता।

बहुवचन अविकारी रूप के लिए "ई" से अंत होने वाले शब्दों में "आँ" प्रत्यय और अन्य शब्दों में "एँ" प्रत्यय लगाया जाता है।

बहुवचन विकारी रूप में पुल्लिंग शब्दों की भाँति सभी शब्दों में "ओ" प्रत्यय जोड़ा जाता है।

उपर्युक्त शब्द वर्गों में प्रत्यय जुड़ने पर होने वाले रूप-स्वनिमिक नियम इस प्रकार हैं —

1) "आ" से अंत होने वाले पुल्लिंग में प्रत्यय जुड़ने पर मूल का अंतिम "आ" लुप्त हो जाता है। अर्थात् प्रत्यय का स्वर मूल के अंत्य स्वर "आ" का स्थान ले लेता है। जैसे :

लड़का + ए → लड़के
लड़का + ओं → लड़कों

2) अन्य पुल्लिंग शब्दों में यदि शब्द के अंत में "ई" अथवा "ऊ" दीर्घ स्वर हो तो वह ह्रस्व हो जाता है जैसे : भालू + ओं = भालुओं और अंत्य "इ, ई" "ओं" प्रत्यय से मिलकर "इयों" बन जाता है, जैसे :

आदमी + ओं → आदमियों
कवि + ओं → कवियों

3) अन्य पुल्लिंग शब्दों, जिनके अंत में आ, इ, ई, ऊ स्वर नहीं हैं या अकारांत व्यंजन हैं उनमें परिवर्तन नहीं होता। जैसे :

मकान + ओं → मकानों
साधु + ओं → साधुओं

4) स्त्रीलिंग शब्दों में यदि अंत में "आ" के अतिरिक्त अन्य दीर्घ स्वर "ई" अथवा "ऊ" हो तो वह ह्रस्व हो जाता है और "इ + आँ", "इ + ओं" क्रमशः "इयाँ" "इयों" बन जाते हैं। उदाहरण के लिए —

बहू + ओं → बहुओं
लड़की + आँ → लड़कियाँ
सीढ़ी + ओं → सीढ़ियों

(इस नियम को याद रखने पर इ, ई, उ, ऊ मात्रा के संबंध में इन शब्दों में भूल नहीं होगी।)

5) स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में अकारांत व्यंजन अथवा "आ" दीर्घ स्वर हो तो प्रत्यय जुड़ने पर कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे —

किताब + एँ → किताबें
माला + एँ → मालाएँ

(पुल्लिंग शब्द "ताला" और स्त्रीलिंग शब्द "माला" के बहुवचन रूप के अंतर को याद रखें।)

6.3 सर्वनाम शब्दों की रूप सिद्धि

6.3.1 सर्वनाम शब्दों से संबंधित व्याकरणिक कोटियाँ

सर्वनाम वे शब्द हैं जो संज्ञा के स्थान पर आते हैं इसलिए सर्वनाम में भी वही लिंग समझा जाता है जो उस संज्ञा का है और उसके स्थान पर उसका प्रयोग किया जा रहा है। अंग्रेज़ी में अन्य पुरुष एकवचन में पुल्लिंग के लिए "He" और स्त्रीलिंग के लिए "She" अलग-अलग रूप हैं किंतु अन्य सभी सर्वनामों का एक-एक रूप ही है। हिंदी में he/she का भेद भी नहीं है। सभी सर्वनाम अपने संज्ञा शब्द के लिंग को ही वाक्य के अन्य शब्दों में दर्शाते हैं।

इसी प्रकार सम्बद्ध संज्ञा शब्द का वचन भी महत्वपूर्ण है, लेकिन सर्वनामों में एकवचन और बहुवचन के लिए अलग-अलग शब्द हैं जैसे —

उत्तम पुरुष एकवचन "मैं" (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग)
उत्तम पुरुष बहुवचन "हम" (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग)

लिंग, वचन के अतिरिक्त अन्य व्याकरणिक कोटि है पुरुष, जिसका सर्वनाम से सीधा संबंध है लेकिन यह कोटि भी प्रत्यय आदि से नहीं दिखाई जाती। संज्ञा में लिंग की भाँति सर्वनाम में पुरुष अंतर्निहित होता है।

जैसे : संज्ञा शब्द "पक्षी" के बारे में हमने देखा था कि "पक्षी" एकवचन है अथवा बहुवचन, इसकी जानकारी वाक्य के अन्य पदों से मिलती है। जैसे :

"पक्षी आकाश में उड़ते हैं।"

यहाँ क्रिया रूप से पता चलता है कि "पक्षी" बहुवचन है। इसी प्रकार सर्वनाम में लिंग और पुरुष कोटियों की जानकारी हमें वाक्य के अन्य पदों से मिलती है। जैसे :

तुम कहाँ जा रही हो?	(मध्यम पुरुष, स्त्रीलिंग)
मैं लाइब्रेरी जा रही हूँ।	(उत्तम पुरुष, स्त्रीलिंग)
क्या तुम चलोगे?	(मध्यम पुरुष, पुल्लिंग)
मैं शाम को जाऊँगा।	(उत्तम पुरुष, पुल्लिंग)

6.3.2 सर्वनाम शब्दों की रूप रचना

सर्वनाम शब्दों में व्याकरणिक कोटियों के लिए रूप परिवर्तन नहीं होता, लेकिन परसर्गों के प्रभाव से रूप परिवर्तन होता है। इस संबंध में ध्यान दें कि संज्ञा शब्दों के पश्चात् कोई भी परसर्ग हो, लेकिन विकार एक ही प्रकार से होता है, जैसे —

लड़का + ने/को/से/में → लड़के ने/को/में। लेकिन सर्वनाम शब्द भिन्न-भिन्न परसर्गों के साथ भिन्न-भिन्न रूप बनाते हैं। अतः सभी सर्वनामों को सभी परसर्गों के साथ नीचे एक तालिका में दिखाया गया है —

1 सर्वनाम +	2 ने +	3 को +	4 से, (में, पर) +	5 का, के, की
मैं	मैंने	मुझको	मुझसे	मेरा, मेरे, मेरी
तू	तूने	तुझको	तुझसे	तेरा, तेरे, तेरी
तुम	तुमने	तुमको	तुमसे	तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
आप	आपने	आपको	आपसे	
वह	उसने	उसको	उससे	
यह	इससे	उसको	उससे	
हम	हमने	हमको	हमसे	हमारा, हमारे, हमारी
वे	उन्होंने	उनको	उनसे	
ये	इन्होंने	इनको	इनसे	
जो (एकवचन)	जिसने	जिसको	जिससे	
कौन (बहुवचन)	किसने	किसको	किससे	
क्या (एकवचन)	—	किसको	किससे	
जो (बहुवचन)	जिन्होंने	जिनको	जिनसे	
कौन (बहुवचन)	किन्होंने	किनको	किनसे	
क्या (बहुवचन)	—	—	किनसे	

इस तालिका में देखें कि सर्वनामों के विकारी रूपों और परसर्गों को मिलाकर एक शब्द के रूप में लिखा जाता है।

6.3.3 सर्वनाम शब्दों के वैकल्पिक रूप

1) "आप" के अतिरिक्त सभी सर्वनामों के "को" युक्त रूप में एक-एक वैकल्पिक रूप भी हैं जो इस प्रकार हैं :

मुझको → मुझे	तुमको → तुम्हें
तुझको → तुझे	हमको → हमें
उसको → उसे	उनको → उन्हें
इसको → इसे	इनको → इन्हें
जिसको → जिसे	किनको → किन्हें
किसको → किसे	जिनको → जिन्हें

यहाँ "म", "न" से अंत होने वाले विकारी सर्वनामों पर विशेष रूप से ध्यान दें। इनका परिवर्तन "हमें", "किन्हें" है, न कि "हमे", "किन्हे"।

2) उपर्युक्त वैकल्पिक रूपों में अंत्य "से" रूप पर ध्यान दें और उसे "से" परसर्ग से भिन्न समझें। अब इनके अंतर पर ध्यान दीजिए —

उसे (उसको) — उससे
इसे (इसको) — इससे
जिसे (जिसको) — जिससे
किसे (किसको) — किससे

3) मैं, तू, तुम और हम सर्वनामों के कुछ अशुद्ध रूप प्रचलित हैं जैसे : तेरे को, तुम्हारे को, हमारे को, इनके प्रति सावधान रहें और ऊपर 1) में दिये वैकल्पिक रूपों का ही प्रयोग करें। जैसेः

मुझको — मुझे
तुझको — तुझे
तुमको — तुम्हें
हमको — हमें

6.3.4 सर्वनामों में "ही" अव्यय का प्रयोग

सभी सर्वनाम रूपों के साथ "ही" अव्यय जोड़ा जा सकता है, जैसे —

1) मैं ही जाऊँ?
2) किताब मुझे ही नहीं मिली, सबको मिल गई।

सर्वनाम, परसर्ग और "ही" का मिलान दो प्रकार से किया जाता है —

1) सर्वनाम + परसर्ग + ही जैसे ऊपर वाक्य 2) में "मुझे ही", और सर्वनाम एवं परसर्ग के बीच में "ही" — सर्वनाम + ही + परसर्ग क्रम से भी जैसे — "मुझी को", "हमीं से"। इस स्थिति में सर्वनाम और "ही" परस्पर इस प्रकार मिल जाते हैं —

मुझ + ही = मुझी	तुम + ही = तुम्हीं
तुझ + ही = तुझी	हम + ही = हमीं
उस + ही = उसी	उन + ही = उन्हीं
इस + ही = इसी	इन + ही = इन्हीं
किस + ही = किसी	किन + ही = किन्हीं

(इन रूपों में "म" "न" से अंत होने वाले एवं अन्य सर्वनामों के अंतर पर ध्यान दें और "म" से अंत होने वाले सर्वनामों में "हम" "तुम" की स्थिति के अंतर पर विशेष ध्यान दें।)

6.4 विशेषण शब्दों की रूप सिद्धि

6.4.1 संज्ञा-विशेषण अन्विति

आपको पहले बताया गया है कि संज्ञा शब्दों के लिंग-वचन की सूचना हमें वाक्य में अन्य शब्दों से भी मिलती है। *एक शब्द वर्ग की व्याकरणिक कोटि जब दूसरे शब्द वर्ग से प्रभावित होती है तब इस*

विशेषता को व्याकरण में "अन्विति" कहते हैं। हिंदी में संज्ञा-विशेषण तथा संज्ञा-क्रिया में परस्पर अन्विति दिखाई जाती है। वास्तव में संज्ञा की व्याकरणिक कोटियों, जैसे : लिंग और वचन का प्रभाव विशेषण और क्रिया शब्दों पर पड़ता है। विशेषण शब्दों की अपनी कोई लिंग, वचन संबंधी विशेषता नहीं होती। ये शब्द संज्ञा की विशेषता बताने वाले शब्द हैं अतः सम्बद्ध संज्ञा के लिंग, वचन को ही दर्शाते हैं, साथ ही संज्ञा के साथ परसर्ग के प्रभाव से भी विकृत होते हैं।

6.4.2 विशेषण शब्दों की रूप-रचना

नीचे लिखे वाक्यों में "बड़ा" और "छोटा" शब्दों की रूप-रचना पर ध्यान दें —

इस मकान में एक *बड़ा* कमरा है और दो *छोटे* कमरे हैं। *बड़े* कमरे में दो खिड़कियाँ हैं। *छोटे* कमरों में एक-एक खिड़की है। *बड़े* कमरे में खिड़कियाँ *बड़ी* हैं और *छोटे* कमरे में *छोटी* हैं।

एकवचन	**बहुवचन**
बड़ा कमरा	छोटे कमरे
बड़े कमरे में	छोटे कमरों में, कमरे में
बड़ी खिड़की	छोटी खिड़कियाँ

संज्ञा शब्दों के चार-चार रूप हैं —

पुल्लिंग अविकारी एकवचन — कमरा
पुल्लिंग अविकारी बहुवचन — कमरे
पुल्लिंग विकारी एकवचन — कमरे
पुल्लिंग विकारी बहुवचन — कमरों

इसी प्रकार — स्त्रीलिंग अविकारी एकवचन — लड़की, कक्षा
स्त्रीलिंग अविकारी बहुवचन — लड़कियाँ, कक्षाएँ
स्त्रीलिंग विकारी एकवचन — लड़की, कक्षा
स्त्रीलिंग विकारी बहुवचन — लड़कियों, कक्षाओं

किन्तु विशेषण शब्दों में कुल तीन रूप हैं। पुल्लिंग के लिए दो रूप और स्त्रीलिंग के लिए केवल एक। इनका संबंध इस प्रकार है —

	अविकारी		विकारी	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	बड़ा	बड़े	बड़े	बड़े
स्त्रीलिंग	बड़ी	बड़ी	बड़ी	बड़ी

टिप्पणी : विशेषण शब्दों की रूप-सिद्धि के लिए यह भी ध्यान दें कि सभी विशेषण शब्द इस प्रकार रूप नहीं बदलते। केवल "आ" से अंत होने वाले (आकारान्त) हिंदी के विशेषण शब्द ही इस प्रकार बदलते हैं। उर्दू के शब्द — ज़िंदा, मुर्दा, ज़्यादा और संस्कृत का शब्द "महा" "आ" से अंत होने पर भी बहुवचन और स्त्रीलिंग में रूप नहीं बदलता। यह भी ध्यान दें कि कुछ अन्य भारतीय भाषाओं में विशेषण के स्त्रीलिंग बहुवचन रूप भी मिलते हैं किन्तु हिंदी में स्त्रीलिंग में एकवचन, बहुवचन, अविकारी, विकारी सभी के लिए एक ही रूप है।

अभ्यास 1

क) नीचे लिखे शब्दों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए —

संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, पुरुष, विकारी, अविकारी, परसर्ग।

i) हिंदी वाक्य रचना के लिए संज्ञा का ..... और ..... तथा सर्वनाम की व्याकरणिक कोटि ..... की जानकारी आवश्यक है।

ii) संज्ञा शब्दों के बहुवचन रूप बनाने के लिए उनका ..... जानना आवश्यक है।

iii) विशेषण शब्द ..... के लिंग, वचन से प्रभावित होते हैं।

iv) संज्ञा, शब्दों की रूप सिद्धि तीन चीज़ों पर आधारित है — .....,
....., ...।

v) परसर्गों के संयोग से रूप बदलने वाले शब्दों को ..... कहते हैं।

ख) नीचे लिखे वाक्यों में खाली जगहों को दिये गये शब्द के सही रूप से भरिए।

i) कुछ ..... खेल रहे हैं। (लड़का)

ii) उन सभी ..... को बुलाओ। (लड़का)

iii) एक ..... में कूलर लगा है। (कमरा)

iv) सभी ..... में पंखे लगे हैं। (कमरा)

v) तीन ..... गाड़ी में जा रहे थे। (आदमी)

vi) पुलिस ने उन ..... को रोका। (आदमी)

vii) इस ..... में 35 छात्र हैं। (कक्षा)

viii) सभी ..... में 35-35 छात्र हैं। (कक्षा)

ix) मेरे पास दो बहुत अच्छी ..... हैं। (किताब)

x) सब ..... का कार्यक्रम बहुत अच्छा था। (लड़की)

ग) नीचे लिखे वाक्यों को कोष्ठक में दिये विशेषण शब्दों के सही रूप से भरिए —

i) शर्मा जी के दोनों बेटे ..... हैं। (लंबा)

ii) शर्मा जी के ..... बेटे ने कई पुरस्कार जीते। (बड़ा)

iii) ये दोनों लड़कियाँ कितनी ..... हैं। (सुन्दर)

iv) हमारे देश में कई ..... नदियाँ हैं। (बड़ा)

v) ..... नदियों में बारहों महीने पानी रहता है। (बड़ा)

vi) दस वर्ष से ..... बच्चों के लिए आधा टिकट लगता है। (छोटा)

घ) नीचे लिखे शब्दों के सही रूप लिखिए —

i) भालूओं

ii) आदमीयों

iii) कविओं

iv) बहूएँ

v) सीढ़ीआँ

vi) भाईयों

vii) बहनओं

6.5 क्रिया शब्दों की रूप सिद्धि

6.5.1 क्रिया शब्दों से संबंधित व्याकरणिक कोटियाँ

नीचे लिखे वाक्यों में क्रियापद पर ध्यान दीजिए। देखें इस पद से क्या-क्या जानकारी मिलती है—

1) महेश बहुत अच्छी कहानियाँ लिखता है।

2) महेश ने एक बहुत लम्बी कहानी लिखी थी।

3) महेश शायद कभी उपन्यास भी लिखे।

4) लोगों ने महेश की रचनाओं को बहुत सराहा।

ऊपर वाक्य 1) में "लिखता है" क्रियापद से लिखना क्रिया के बारे में मालूम पड़ता है कि —

— यह एक निश्चित सूचना है,
— यह क्रिया वर्तमान काल में बार-बार होती है;
— इस क्रिया को करने वाला पुल्लिंग, एकवचन है।

वाक्य 2) में "लिखी थी" से ज्ञात होता है कि —

— यह भूतकाल में हुई निश्चित घटना है,
— "लिखना" क्रिया का कार्य एक घटना के रूप में पूरा हो चुका है ,
— इस क्रिया का संबंध किसी स्त्रीलिंग, एकवचन वस्तु (कर्म) से है।

वाक्य 3) के क्रियापद "लिखे" से ज्ञात होता है कि —

— यह घटित होना निश्चित नहीं है। इस क्रिया से संबंधित कर्ता तृतीय पुरुष, एकवचन है।

वाक्य 4) के क्रियापद "सराहा" से क्रिया की पूर्णता की सूचना तो मिलती है किन्तु उसे करने वाले कर्ता अथवा उससे प्रभावित कर्म के बारे में जानकारी नहीं मिलती।

इस प्रकार क्रियापद से क्रिया और उससे सम्बद्ध कर्ता अथवा कर्म के बारे में अनेक सूचनाएँ मिलती हैं।

— क्रिया का होना निश्चित है अथवा अनिश्चित, इस प्रकार की जानकारी को व्याकरण में "वृत्ति" कहते हैं।
— क्रिया के घटित होने के समय से संबंधित व्याकरणिक कोटि को "काल" कहते हैं।
— क्रिया की अवस्था, जैसे — बार-बार होना, लगातार चलना, पूरा हो जाना आदि को "पक्ष" कहते हैं।

वृत्ति की दृष्टि से क्रिया में तीन प्रकार की रूप रचना होती है

1) निश्चय का अर्थ देने वाली — निश्चयार्थक, जैसे : लिखता है, लिख रहा है, लिखा था।
2) संभावना, संदेह, अनुमान आदि का अर्थ देने वाली — विध्यर्थक जैसे — लिखे, लिखें, लिखूँ।
3) आज्ञा, आदेश आदि का अर्थ देने वाली — आज्ञार्थक जैसे — लिखो, लिखिए।

काल की दृष्टि से वर्तमान, भूत, भविष्य तीन भेद क्रिया रूप में दिखाये जाते हैं, जैसे —

पढ़ता है (वर्तमान)
पढ़ता था (भूतकाल)
पढ़ेगा (भविष्यकाल)

पक्ष की दृष्टि से क्रिया रूप में तीन भेद दिखाये जाते हैं —

1) बार-बार होना (नित्य) जैसे — पढ़ता है, पढ़ता था।
2) लगातार होना (सातत्य) जैसे — पढ़ रहा है, पढ़ रहा था।
3) पूरा हो जाना (पूर्ण) जैसे — पढ़ा है, पढ़ा था।

(भविष्य काल में पक्ष की दृष्टि से भेद नहीं होता, "पढ़ रहा होगा/पढ़ा होगा" ये भविष्य सूचक नहीं हैं।)

ऊपर बताई गई व्याकरणिक कोटियाँ, काल, पक्ष, वृत्ति सीधे क्रिया से संबंधित हैं। इनसे संबंधित क्रिया के रूप-परिवर्तनों को क्रिया का आन्तरिक विकार कहा जाता है।

यहाँ एक बात और ध्यान रखने की है, वह यह कि वाक्य में क्रिया शब्दों का प्रयोग करने पर उनसे काल, पक्ष, वृत्ति की सूचना तो मिलती ही है, साथ ही वाक्य में क्रिया से सम्बद्ध संज्ञा के लिंग-वचन की सूचना भी मिलती है। किसी-किसी रूप में सर्वनाम की व्याकरणिक कोटि "पुरुष" की सूचना भी मिलती है। इनके बिना क्रिया की रूप रचना नहीं हो सकती। उदाहरण के लिए —

"पढ़ रहा था" वाक्य में क्रिया रूप निश्चयार्थक वृत्ति (निश्चित सूचना), भूतकाल सातत्य (अपूर्ण) पक्ष के साथ ही पुल्लिंग एकवचन की भी सूचना देता है। इसी प्रकार भविष्यकाल के क्रियारूप जाऊँगा,

जाओगे, जाएगा सर्वनाम के पुरुष क्रमशः उत्तम पुरुष (पुल्लिंग, एकवचन), मध्यम पुरुष (पुल्लिंग), अन्य पुरुष (पुल्लिंग, एकवचन) की भी सूचना देते हैं।

लिंग, वचन, पुरुष — ये व्याकरणिक कोटियाँ क्रिया से सीधे संबंधित नहीं हैं। ये संज्ञा और सर्वनाम से संबंधित हैं। अतः इन व्याकरणिक कोटियों से संबंधित क्रिया के विकार को क्रिया का बाह्य विकार कहा जाता है।

आप यह भी जानते हैं कि किसी वाक्य में एक से अधिक संज्ञा शब्द हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में क्रिया का रूप किस संज्ञा के अनुसार होगा, इस व्यवस्था को *प्रयोग* कहते हैं।

उदाहरण के लिए कुछ वाक्य देखिए :

1) मोहन अपनी किताबें इस अलमारी में रखता है। (क्रिया रूप कर्त्ता "मोहन" के अनुसार)

2) मोहन ने अपनी किताबें मेज़ पर रखीं। (क्रिया का रूप कर्म "किताबें" के अनुसार)

3) शीला ने अपनी लड़की को बुलाया। (क्रिया का रूप पुल्लिंग एकवचन)

इन वाक्यों में आप देख सकते हैं कि किसी वाक्य में क्रियापद कर्त्ता के लिंग, वचन, पुरुष आदि से प्रभावित होता है, किसी वाक्य में कर्म के लिंग, वचन से। पर किसी वाक्य में वह न तो कर्त्ता से प्रभावित होता है, न कर्म से, जैसे वाक्य 3)।

क्रिया पद किस संज्ञा के लिंग, वचन आदि से प्रभावित होगा — यह एक नियमबद्ध व्यवस्था है। इसके नियम इस प्रकार हैं —

नियम 1) यदि कर्त्ता के साथ कोई परसर्ग (ने, को, से आदि) न लगा हो तो क्रिया का लिंग, वचन, रूप कर्त्ता के अनुसार होता है। उदाहरण —

1) विनोद कॉलेज में पढ़ता है।

2) गीता कॉलेज में पढ़ती है।

3) ये सभी लड़के कॉलेज में पढ़ते हैं।

4) ये सभी लड़कियाँ कॉलेज में पढ़ती हैं।

5) मैं कॉलेज में पढ़ता/पढ़ती हूँ।

इसको हम इस प्रकार भी कह सकते हैं :

6) ऐसे वाक्य जिनमें क्रिया का लिंग, वचन, पुरुष, रूप कर्त्ता के अनुसार हो उन्हें "कर्तरि प्रयोग" कहते हैं।

नियम 2) यदि वाक्य में कर्त्ता के साथ कोई परसर्ग ने, को, से आदि जुड़ा हो तो क्रिया में कर्म के लिंग, वचन के अनुसार प्रत्यय जोड़े जाते हैं। ऐसे वाक्यों को "कर्मणि प्रयोग" कहते हैं। उदाहरण के लिए —

7) विनोद ने एक कहानी लिखी थी।

8) बच्चों को अपनी किताबें संभाल कर रखनी चाहिए।

9) हमसे खाना नहीं खाया गया।

नियम 3) यदि वाक्य में कर्त्ता के साथ परसर्ग जुड़ा हो और कर्म न हो अथवा कर्म के साथ भी परसर्ग जुड़ा हो तब क्रिया अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन रूप में रहती है। देखें वाक्य 10) और 11)।

10) माँ ने बच्चों को बुलाया।

11) माँ ने कहा कि .....

इस प्रकार के वाक्यों को "भावे प्रयोग" कहा जाता है।

टिप्पणी :वाक्य बनाते समय क्रिया के लिंग, वचन, प्रत्यय संबंधी अशुद्धियाँ बहुत होती हैं। अतः उपर्युक्त नियमों को अच्छी तरह समझ लेना और अभ्यास करना चाहिए। ("कर्तरि प्रयोग" "कर्मणि प्रयोग", "भावे प्रयोग" ये व्याकरणिक नाम महत्वपूर्ण नहीं हैं।)

6.5.2 क्रिया शब्दों की रूप रचना

अब काल, पक्ष, वृत्ति और लिंग, वचन, पुरुष सभी की दृष्टि से क्रिया शब्दों की रूप रचना देखिए :

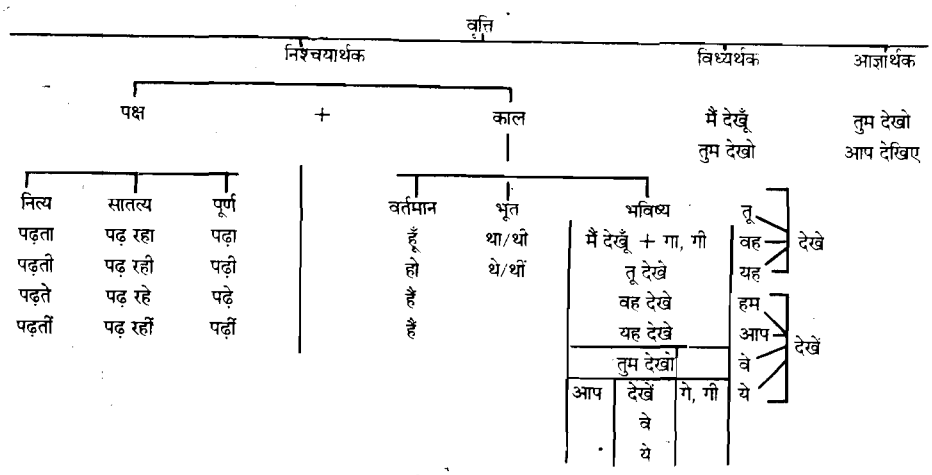

टिप्पणी : 1) पक्ष सूचक क्रियारूप के साथ वर्तमान अथवा भूतकाल सूचक रूप का प्रयोग किया जाता है। जैसे — पढ़ता हूँ, पढ़ रहा था, पढ़ा है।

2) क्रिया रूप के अंत में अनुनासिकता बहुवचन सूचक है। स्त्रीलिंग बहुवचन क्रिया रूप — पढ़तीं, पढ़ रहीं, पढ़ीं के साथ काल सूचक रूप "हैं" अथवा "थीं" जुड़ने पर मुख्य क्रिया रूप के साथ अनुस्वार का प्रयोग नहीं किया जाता। जैसे — पढ़ती हैं, पढ़ रही थीं, पढ़ी हैं।

3) निषेधात्मक वाक्यों में वर्तमान काल सूचक रूप हूँ, है, हैं आदि का प्रयोग नहीं किया जाता, किन्तु भूतकाल सूचक का प्रयोग किया जाता है जैसे — मैं दिल्ली कॉलेज में नहीं पढ़ता। (वर्तमान)

मैं दिल्ली कॉलेज में नहीं पढ़ता था। (भूत)

रूप रचना की दृष्टि से क्रिया शब्दों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है —

1) व्यंजन से अंत होने वाले धातु रूप जैसे —

पढ़	निकल	मार
लिख	उतर	पीट
रख	समझ	काट
रह	पकड़	फेंक

2) स्वरांत धातु रूप जैसे —

क) आ, खा, पी, सो, धो, रो, बना,
ख) जा, ले और दे के कुछ भिन्न रूप हैं।

3) विशेष क्रिया शब्द

हो धातु से "होना"
कर धातु से "करना"

उपर्युक्त वर्ग की धातुएँ मुख्य रूप से पूर्ण पक्ष (क्रिया की पूर्णता सूचक) रूप भिन्न-भिन्न प्रकार से बनाती हैं। जैसे —

1) व्यंजनांत धातु	—	पढ़ा-पढ़े-पढ़ी लिखा-लिखे-लिखी निकला-निकले-निकली
2) स्वरांत धातु (क)	—	आया-आये-आयी खाया-खाये-खायी धोया-धोये-धोयी

स्वरांत धातु (ख) — जाना — गया, गये, गयी
लेना — लिया, लिये, ली
देना — दिया, दिये, दी

3) विशिष्ट धातुएँ — होना — हुआ, हुए, हुई
करना — किया, किये, की (लेना, देना की भाँति)

"लेना" "देना" क्रियाएँ विध्यर्थक रूप भी अन्य क्रियाओं से भिन्न रूप में बनाती हैं, जैसे —

अन्य क्रियाएँ	**लेना, देना**
पढ़ूँ, पढ़ो, पढ़े	लूँ, लो, ले
आऊँ, आओ, आए	दूँ, दो, दे
करूँ, करो, करे	

इन्हीं रूपों से भविष्य काल रूप बनते हैं। *आज्ञार्थक क्रियारूपों* में भी कुछ भिन्नता है, जैसे —

सामान्य	**विशिष्ट**
पढ़ो-पढ़िए	पीयो-पीजिए
आओ-आइए	लो-लीजिए
धोओ-धोइए	दो-दीजिए
	करो-कीजिए (अपवाद)

पूर्ण पक्ष सूचक क्रिया रूपों की विशेषता है कि —

1) उनमें केवल "आ" प्रत्यय जुड़ा है जो पूर्णता के साथ ही साथ सम्बद्ध संज्ञा के लिंग, वचन को भी दर्शाता है।
2) "आ" अंत्य विशेषण और संबंध वाचक रूपों की भाँति ही इसमें लिंग, वचन संबंधी परिवर्तन होते हैं।
3) स्वरांत धातुओं में "आ" प्रत्यय जुड़ने पर धातु और "आ" के बीच "व" जोड़ा जाता है, जैसे — आया, धोया, लिया।

आज्ञार्थक क्रिया रूपों में "इए" प्रत्यय से पहले धातु रूप "ई" अंत्य हो तो ई + इए के बीच में "ज" जोड़ा जाता है, जैसे — पी + इए = पीजिए।

6.5.3 क्रिया शब्दों के वैकल्पिक रूप

कुछ क्रिया रूप दो-दो प्रकार से लिखे जाते हैं जैसे —

आयी	—	आई
आये	—	आए
धोयी	—	धोई
धोये	—	धोए
गयी	—	गई
गये	—	गए
लिये	—	लिए
दिये	—	दिए
किये	—	किए
पढ़िये	—	पढ़िए
देखिये	—	देखिए
आइये	—	आइए

ऐसे शब्दों के लेखन के बारे में आप इकाई 30 में विस्तार से पढ़ेंगे। यहाँ केवल इतना बता देना उपयुक्त होगा कि ये दोनों रूप प्रचलित और स्वीकृत हैं।

कुछ प्रचलित अशुद्ध रूपों पर भी ध्यान दीजिए —

"करना" क्रिया की धातु व्यंजनांत होते हुए भी इसके पूर्ण पक्ष रूप और आज्ञार्थक रूप स्वरांत धातुओं की तरह बनाए जाते हैं। आमतौर पर बोलचाल में इस क्रिया से पूर्ण पक्ष और आज्ञार्थक रूप अन्य व्यंजनांत धातुओं के रूप में सुने जाते हैं, जैसे —

मैंने काम नहीं करा*

आप यह काम मत करिए*

ये अशुद्ध रूप हैं। इनके प्रति सावधान रहें।

अभ्यास 2

क) नीचे लिखे क्रिया शब्दों के पूर्ण पक्ष सूचक रूप लिखिए :

i) देखना
ii) पढ़ना
iii) आना
iv) बनाना
v) सोना
vi) धोना
vii) होना
vii) जाना
ix) करना
x) देना

ख) नीचे लिखे वाक्यों को पूरा कीजिए :

i) हम एक फ़िल्म देखना ..... हैं। (चाहना)

ii) हमने पिछले रविवार को एक फ़िल्म ..... थी। (देखना)

iii) पिताजी ने बच्चों को पाँच-पाँच रुपये ..... । (देना)

iv) क्या आप चाहते हैं कि हम हिंदी में पत्र .....? (लिखना)

v) मोहन, जल्दी ..... । गाड़ी छूट जाएगी। (आना)

vi) माँ ने बच्चों से कहा, "आज शाम को मैं तुम्हें एक कहानी ....." । (सुनाना)

ग) नीचे लिखे वाक्यों को सही कीजिए :—

i) आप सामान तैयार कीजिए, मैं गाड़ी लाता है।
ii) भाई साहब, आप देर मत करो।
iii) कल बहुत बारिश हुआ।
iv) शीला ने कोई काम नहीं करी।
v) क्या तुम मुझे पाँच रुपये देओगे?

घ) कोष्ठक में दिये शब्दों के उपयुक्त रूप से खाली जगहों को भरिए :

i) दिल्ली में कई बड़े-बड़े ..... हैं। (होटल)

ii) सभी ..... में तरह-तरह का खाना मिलता है। (होटल)

iii) करोल बाग में कई बड़ी-बड़ी ..... हैं, उन ..... में चीज़ें महँगी मिलती हैं। (दुकान)

iv) बड़े शहरों में कई ..... हैं, जो छोटे शहरों या गाँवों में नहीं हैं। (सुविधा)

v) इस बस में कुल पचास ..... की जगह है। (आदमी)

6.6 सारांश

इस इकाई में आपने संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दों से संबंधित व्याकरणिक कोटियों के बारे में पढ़ा। कुछ व्याकरणिक कोटियाँ किसी शब्द वर्ग में निहित होती हैं, जैसे — संज्ञा में "लिंग" और सर्वनाम में "पुरुष"। कुछ कोटियों को रूप परिवर्तन द्वारा दिखाया जाता है, जैसे संज्ञा शब्दों में बहुवचन। कुछ व्याकरणिक कोटियों की सूचना वाक्य के अन्य पदों से मिलती है जैसे — क्रिया पद से संज्ञा के लिंग, वचन और सर्वनाम के पुरुष, लिंग, वचन की सूचना।

आपने संज्ञा, विशेषण और सर्वनाम शब्दों की रूप सिद्धि (रूपगत परिवर्तनों) को देखा और जाना कि इनमें किस-किस प्रकार के परिवर्तन होते हैं। उन्हें लिखित रूप में कैसे दिखाया जाता है और उनके प्रयोग के बारे में क्या-क्या सावधानी बरतनी चाहिए। आपने यह भी देखा कि हिंदी में परसर्गों का प्रयोग किस प्रकार विभिन्न शब्द वर्गों में विकार (रूपगत परिवर्तन) उत्पन्न करता है। आपने सर्वनाम रूपों के साथ "ही" अव्यय के प्रयोग की विशेष स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त की। संज्ञा, विशेषण और सर्वनाम शब्दों की रूप सिद्धि की प्रक्रिया में होने वाले रूप-स्वनिमिक परिवर्तनों के नियमों को भी जाना।

आपने यह भी पढ़ा कि :

1) हिंदी में क्रिया की रूप रचना से क्रिया के काल, पक्ष, वृत्ति और कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन, पुरुष.की सूचना मिलती है।
2) लिंग, वचन, पुरुष क्रिया से संबंधित व्याकरणिक कोटियाँ नहीं हैं किन्तु इनके सूचक प्रत्ययों के बिना क्रिया की रूप रचना नहीं हो सकती।
3) क्रिया में लिंग, वचन, पुरुष प्रत्यय कर्ता के अनुसार होगा अथवा कर्म के अनुसार, यह परसर्गों के प्रयोग पर निर्भर है।
4) वर्तमान और भूतकाल में मुख्य क्रिया शब्द में पक्ष और लिंग, वचन की सूचना रहती है और काल की सूचना एक सहायक क्रिया "है, हूँ, था" आदि द्वारा दी जाती है।
5) क्रिया की सही रूप रचना वाक्य बनाने और समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

6.7 शब्दावली

इस पाठ में आपको निम्नलिखित विशिष्ट शब्दावली की जानकारी मिली —

रूप रचना
रूप सिद्धि
व्याकरणिक कोटियाँ
रूप-स्वनिमिक परिवर्तन
अन्विति
परसर्ग/पूर्वसर्ग
विकारी/अविकारी रूप
वैकल्पिक रूप
अव्यय
व्यंजनांत धातु
स्वरांत धातु
निश्चयार्थक वृत्ति
विध्यर्थक
आज्ञार्थक
सातत्य बोधक
आंतरिक विकार
बाह्य विकार
कर्तरि प्रयोग
कर्मणि प्रयोग
भावे प्रयोग

6.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) *व्यावहारिक हिंदी भाषा विज्ञान* : शारदा भसीन, मनीषा प्रकाशन, दिल्ली।
2) *प्रयोग और प्रयोग* : वी.रा. जगन्नाथन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली।
3) *A Basic Grammar of Modern Hindi* : Central Hindi Directorate, Delhi.

6.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

क) i) लिंग और वचन, पुरुष
ii) लिंग
iii) संज्ञा
iv) लिंग, वचन, परसर्ग
v) विकारी

ख) i) लड़के ii) लड़कों iii) कमरे
iv) कमरों v) आदमी vi) आदमियों
vii) कक्षा viii) कक्षाओं ix) किताबें
x) लड़कियों

ग) i) लंबे ii) बड़े iii) सुन्दर
iv) बड़ी v) बड़ी vi) छोटे

घ) i) भालुओं ii) आदमियों iii) कवियों
iv) बहुएँ v) सीढ़ियों vi) भाइयों
vii) बहनों

अभ्यास 2

क) i) देखा (देखे देखी देखीं) vi) धोया
ii) पढ़ा vii) हुआ
iii) आया viii) गाया
iv) बनाया ix) किया
v) सोया x) दिया

ख) i) चाहते ii) देखी
iii) दिए iv) लिखें
v) आओ vi) सुनाऊँगी

ग) i) आप सामान तैयार कीजिए, मैं गाड़ी लाता हूँ।
ii) भाई साहब, आप देर मत कीजिए।
iii) कल बहुत बारिश हुई।
iv) शीला ने कोई काम नहीं किया।
v) क्या तुम मुझे पाँच रुपये दोगे?

घ) i) होटल ii) होटलों
iii) दुकानें, दुकानों iv) सुविधाएँ
v) आदमियों

इकाई 7 रूप रचना : व्युत्पादक प्रत्यय

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य
7.1 प्रस्तावना
7.2 रूप रचना की संकल्पना
  7.2.1 रूप तथा रूप रचना
  7.2.2 हिंदी में रूप रचना
  7.2.3 व्युत्पादन तथा व्युत्पादक प्रत्यय
  7.2.4 हिंदी में व्युत्पादन की प्रक्रिया
7.3 उपसर्ग
  7.3.1 उपसर्ग से तात्पर्य
  7.3.2 उपसर्गों के वर्गीकरण का आधार
  7.3.3 उपसर्गों के आधार पर शब्द निर्माण के कुछ प्रमुख बिंदु
  7.3.4 अन्तर व्युत्पादन तथा अन्तः व्युत्पादन
7.4 प्रत्यय
  7.4.1 प्रत्यय से तात्पर्य
  7.4.2 हिंदी के प्रत्यय : रूपसाधक/व्युत्पादक
  7.4.3 प्रत्ययों के आधार पर शब्द निर्माण के कुछ प्रमुख बिंदु
7.5 समास
  7.5.1 समास से तात्पर्य
  7.5.2 हिंदी में समास प्रक्रिया
  7.5.3 समास प्रक्रिया से शब्द निर्माण
  7.5.4 समास प्रक्रिया द्वारा शब्दों का व्याकरणिक कोटि में परिवर्तन
7.6 सारांश
7.7 शब्दावली
7.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
7.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप :

- रूप रचना या शब्द रचना की संकल्पना समझा सकेंगे,
- व्युत्पादन से क्या तात्पर्य है — यह बता सकेंगे,
- हिंदी में शब्द रचना या शब्द-व्युत्पादन कैसे होता है — इसके विषय में जानकारी दे सकेंगे,
- उपसर्गों के विभिन्न प्रकारों के विषय में परिचय दे सकेंगे,
- प्रत्ययों के विभिन्न प्रकारों के बारे में बता सकेंगे,
- उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास के आधार पर हिंदी में शब्द रचना किस प्रकार होती है — इसे स्पष्ट कर सकेंगे,
- शब्दों के व्याकरणिक वर्ग अथवा व्याकरणिक कोटियों के परिवर्तन में उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास की भूमिका क्या है — यह बता सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

किसी भी भाषा की शक्ति मूलतः उसके शब्द सामर्थ्य, शब्द योजना और शब्द व्यवस्था में निहित होती है। भारतीय व्याकरण में शब्द को एक प्रमुख इकाई माना गया है क्योंकि शब्द एक ऐसी इकाई

है जिससे पदबंध, उपवाक्य, वाक्य आदि बड़ी इकाइयों का निर्माण होता है।

शब्द भाषा की सार्थक एवं स्वतंत्र इकाई है। इसी प्रकार उपसर्ग, प्रत्यय भी भाषा की लघुतम सार्थक इकाइयाँ हैं केवल ये स्वतंत्र नहीं हैं। चूंकि इन इकाइयों को शब्द नहीं कहा जा सकता इसलिए आधुनिक भाषा विज्ञान में इनको "रूप" नाम दिया गया। इसके विषय में आप इकाई 5 में विस्तार से पढ़ चुके हैं।

भाषा में विभिन्न प्रकार के रूपों के संयोग से नए-नए रूपों या शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। इसी प्रक्रिया को *रूप रचना या शब्द रचना* कहा जाता है। रूप रचना प्रक्रिया के अंतर्गत दो प्रकार के शब्द बनाए जाते हैं — पद तथा नए शब्द। इसके विषय में आपने इकाई 6 में अध्ययन किया था। शब्द निर्माण की इन दोनों प्रक्रियाओं को रूप साधन तथा शब्द साधन या व्युत्पादन कहा जाता है। रूप साधन के विषय में भी आप इकाई 7 में विस्तार से अध्ययन कर चुके हैं। व्युत्पादन के विषय में इस इकाई में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

भाषा में शब्द व्युत्पादन की प्रक्रिया — उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास तीन आधारों पर संपन्न होती है। इकाई 5 में आपने पढ़ा था कि आधुनिक भाषा विज्ञान में उपसर्ग तथा प्रत्यय दोनों को ही प्रत्यय कहा गया है। उपसर्ग चूँकि शब्द के आरंभ में लगते हैं अतः इनको "आदि प्रत्यय" तथा जो प्रत्यय शब्द के बाद में लगते हैं उनको "अन्त्य प्रत्यय" या "पर प्रत्यय" कहा जाता है। इस दृष्टि से व्युत्पादक प्रत्ययों में उपसर्ग तथा प्रत्यय दोनों ही आ जाते हैं। शब्द रचना या रूप रचना में इन व्युत्पादक प्रत्ययों (उपसर्ग तथा प्रत्यय) का क्या योगदान है, इसके विषय में आप इस इकाई में अध्ययन करने जा रहे हैं।

7.2 रूप रचना की संकल्पना

7.2.1 रूप तथा रूप रचना

इकाई 5 में आपको रूप तथा शब्द की संकल्पना से परिचित कराया गया था, और बताया गया था कि भाषा के लघुतम सार्थक खंडों को रूप कहते हैं। यह भी बताया गया था कि शब्द भाषा की स्वतंत्र एवं सार्थक इकाइयाँ होती हैं। इस दृष्टि से सुंदरता एक शब्द है क्योंकि यह एक अर्थवान इकाई है तथा हिंदी में स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त हो सकती है। यदि हम "सुंदरता" शब्द के खंड करें तो हमें दो खंड प्राप्त होते हैं — "सुंदर+ता"। अर्थ की दृष्टि से "सुंदर" का भी एक निश्चित अर्थ है तथा "ता" का भी। इनमें से "सुंदर" तो अलग से स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने के कारण शब्द की कोटि में आ जाता है परंतु "ता" लघुतम तथा सार्थक होते हुए भी स्वतंत्र इकाई न होने के कारण शब्द नहीं कहलाता। इसी आधार पर हमने रूपों के दो भेद किए थे — मुक्त या स्वतंत्र रूप तथा बद्ध रूप। सुंदरता में "सुंदर" मुक्त रूप है तथा "ता" बद्ध रूप। ये सभी मुक्त या स्वतंत्र रूप शब्द की कोटि में आते हैं।

आपको यह भी बताया गया था कि भाषाओं में विभिन्न प्रकार के रूपों के संयोग से शब्दों का निर्माण होता है। यह शब्द निर्माण प्रायः चार प्रकार से हो सकता है —

1) **मुक्त रूप** + मुक्त रूप के संयोग से, जैसे :
   स्नान + गृह = स्नान गृह
   चरण + स्पर्श = चरणस्पर्श

2) **मुक्त रूप** + बद्ध रूप के संयोग से, जैसे :
   सुंदर + ता = सुंदरता
   ईमान + दारी = ईमानदारी

3) **बद्ध रूप** + मुक्त रूप के संयोग से, जैसे :
   अ + सुंदर = असुंदर
   बे + ईमान = बेईमान

तथा 4) **बद्ध रूप** + बद्ध रूप के संयोग से, जैसे :
   अ + ज्ञ = अज्ञ
   वि + ज्ञ = विज्ञ

विभिन्न रूपों के संयोग से होने वाली शब्द निर्माण की इसी प्रक्रिया को ही रूप रचना कहा जाता है। अतः रूप रचना का अर्थ हुआ—विभिन्न-रूपों के संयोग से शब्दों की रचना होना।

7.2.2 हिंदी में रूप रचना

हिंदी में रूप रचना प्रक्रिया प्रायः तीन प्रकार से ही होती है —

1) बद्ध + मुक्त रूपों के संयोग से
2) मुक्त + बद्ध रूपों के संयोग से
3) मुक्त + मुक्त रूपों के संयोग से

वे बद्ध रूप जो मुक्त रूप के आरंभ में लगते हैं उन्हें उपसर्ग कहा जाता है तथा जो बद्ध रूप मुक्त रूप या शब्द के अंत में लगते हैं उनको प्रत्यय। कहने का तात्पर्य यही है कि रूप रचना की प्रक्रिया शब्द में उपसर्ग तथा प्रत्यय लगा कर भी हो सकती है तथा दो स्वतंत्र शब्दों के संयोग से भी। दो स्वतंत्र शब्दों के संयोग से बनने वाले शब्दों की प्रक्रिया को ही समास प्रक्रिया भी कहा जाता है।

7.2.3 व्युत्पादन तथा व्युत्पादक प्रत्यय

इकाई 5 में रूप साधन तथा व्युत्पादन की संकल्पनाओं के विषय में आपको विस्तार से बताया गया था। व्युत्पादक प्रत्ययों की चर्चा करने से पहले हम पुनः आपको बता दें कि "व्युत्पादन" रूप रचना की वह प्रक्रिया है जिसमें एक शब्द में उपसर्ग या प्रत्यय (या बद्ध रूप) जोड़कर नए शब्द बनाए जाते हैं जैसे :

क)
1) सुंदर + ता = सुंदरता
2) लड़का + पन = लड़कपन
3) बे + ईमान = बेईमान

जबकि रूप साधन की प्रक्रिया के अंतर्गत शब्द से नए शब्द न बनाकर एक ही शब्द के वाक्य में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न रूप (पद) बनाए जाते हैं जैसे :

ख)
1) लड़के जा रहे हैं। लड़का + ए → लड़के
2) लड़को! इधर आओ। लड़का + ओ → लड़को
3) लड़कों को इधर बुलाओ। लड़का +ओं → लड़कों।

अतः जिन रूपों (उपसर्ग तथा प्रत्यय) के संयोग से एक शब्द से दूसरा भिन्न कोटि का शब्द बनाया जाता है उन रूपों को व्युत्पादक रूप कह दिया जाता है तथा जिन रूपों के संयोग से किसी शब्द के विभिन्न रूप प्राप्त होते हैं उन्हें रूप साधक प्रत्यय कहा जाता है। ऊपर के (क) वर्ग के उदाहरणों में ता, पन, बे आदि व्युत्पादक रूप हैं तथा (ख) वर्ग के उदाहरणों में लड़का शब्द में लगने वाले "ए", "ओ" तथा "ओं" रूप साधक रूप या प्रत्यय हैं।

रूप साधक प्रत्ययों के विषय में विस्तार से आप पिछली इकाई सं. 7 में पढ़ चुके हैं। इस इकाई में व्युत्पादन तथा व्युत्पादक रूपों अथवा प्रत्ययों की विस्तृत चर्चा की जा रही है।

व्युत्पादन वास्तव में रूप रचना की वह प्रक्रिया है जिसमें एक शब्द से दूसरा शब्द बनाया जाता है। इसीलिए इसे शब्द साधन (derivation) भी कहा जाता है।

7.2.4 हिंदी में व्युत्पादन की प्रक्रिया

हिंदी में व्युत्पादन या शब्द साधन की प्रक्रिया मुख्य रूप में तीन प्रकार से संभव है —

1) उपसर्गों के द्वारा
2) प्रत्ययों के द्वारा
3) समास-प्रक्रिया के द्वारा

अर्थात् हिंदी में नए शब्दों की रचना तीन प्रकार से हो सकती है।

1) एक तो मूल शब्दों में उपसर्ग जोड़कर जैसे "अ + सुंदर"।
2) मूल शब्द में प्रत्यय जोड़कर जैसे "सुंदर + ता" तथा

3) दो स्तंतत्र शब्दों के समास के आधार पर जैसे खान + गृह।

अब आपको इन तीनों के विषय में विस्तार मे बताया जाएगा।

7.3 उपसर्ग

7.3.1 उपसर्ग से तात्पर्य

जैसा कि पहले बताया गया है, उपसर्ग भाषा के वे सार्थक लघुतम खंड हैं जिनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से अर्थात् अलग से नहीं होता और ये सदैव विभिन्न प्रकार के शब्दों के आरंभ में लग कर नए-नए शब्दों का निर्माण करते हैं जैसे —

1) अ + सुंदर = असुंदर
2) अन् + अधिकार = अनधिकार
3) दुर् + लभ = दुर्लभ
4) बे + ईमान = बेईमान

7.3.2 उपसर्गों के वर्गीकरण का आधार

इकाई 5 में ही आपको शब्दों के भेद-प्रभेद के प्रसंग में बताया गया था कि हिंदी में कुछ शब्द संस्कृत से आए हैं जिनको तत्सम शब्द कहा जाता है। कुछ शब्द संस्कृत के शब्दों में कुछ ध्वनिपरिवर्तन के साथ हिंदी में विकसित हुए हैं, जिनको तद्भव शब्द कहा जाता है। तीसरे विदेशी शब्द हैं जो अनेक विदेशी भाषाओं अरबी-फ़ारसी आदि से आए हैं।

इन तीनों ही प्रकार के शब्दों में मूल शब्द भी हैं, जैसेः धर्म (तत्सम), पंछी (तद्भव) तथा होश (विदेशी) तथा व्युत्पन्न शब्द भी हैं, जैसेः अधर्म (तत्सम), कपूत (तद्भव) तथा बेहोश (विदेशी)। यह तो आप जान ही गए हैं कि व्युत्पन्न शब्द वे शब्द हैं जो मूल शब्द में उपसर्ग अथवा प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं। इस दृष्टि से हिंदी में तीनों ही प्रकार के उपसर्ग प्राप्त होते हैं।

1) **तत्सम उपसर्ग :** जो संस्कृत भाषा के व्युत्पन्न शब्दों के आ जाने से हिंदी में आ गए हैं, जैसे :
   1) अ-(अधर्म)
   2) अधि-(अधिपति)
   3) अन-(अनगिनत)
   4) अप-(अपशब्द)
   5) अव-(अवगुण) आदि।

संस्कृत से आए ये सभी उपसर्ग हिंदी में भी उन्हीं अर्थों में प्रयुक्त होते हैं जिस अर्थ में संस्कृत में होते हैं। कुछ प्रमुख उपसर्गों के उदाहरण देखिए जो संस्कृत से हिंदी में यथावत आ गए हैं —

1) अ- अ- उपसर्ग संस्कृत में प्रायः 'निषेध', 'रहित', 'हीन', 'प्रतिकूल' आदि के अर्थ में प्रयुक्त होता था। हिंदी में भी इसका प्रयोग इसी रूप में आपको मिलेगा, जैसे :
   1) अधर्म
   2) अज्ञान
   3) अकाट्य

2) अन- का प्रयोग "परे" अथवा "अभाव" के अर्थ में किया जाता है, जैसे :
   1) अनगिनत
   2) अनपढ़

3) अप- का प्रयोग "बुरा", "अनुचित", "विपरीत" आदि अर्थों में किया जाता है, जैसे :
   1) अपयश

2) अपव्यय
3) अपमान

4) अव - उपसर्ग "अभाव", 'विपरीत' के अर्थ में आता है, जैसे :

1) अवचेतन
2) अवगुण
3) अपकर्ष

5) आ - उपसर्ग "तक" या "आरंभ से अंत तक" जैसे अर्थों में प्रयुक्त होता है जैसे :

1) आमरण
2) आजीवन
3) आजन्म

6) उप - "नीचे", "दूसरा", "पहले" आदि के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे :

1) उप सभापति
2) उपनाम
3) उपकार
4) उपसर्ग

7) कु - उपसर्ग "बुरा"/"अशुभ" के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे :

1) कुकर्म
2) कुदिन
3) कुमार्ग

8) दुर् - उपसर्ग "बुरा", "कठिन", "अभाव" आदि के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है, जैसे:

1) दुर्गुण, दुर्दशा
2) दुर्बोध, दुर्गम
3) दुर्बल

9) निर् - उपसर्ग "निषेध" के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे :

1) निरर्थक,
2) निरपराध

10) वि - का प्रयोग "बिना", "विशेष", "दूसरा" आदि के अर्थ में होता है, जैसे :

1) विज्ञान
2) विदेश
3) वियोग
4) विक्रय

11) स - सहित के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे :

1) सफल
2) सरस
3) सकुशल
4) सजीव

12) सु - उपसर्ग का प्रयोग "अच्छा", "सरल", "बहुत" आदि के अर्थ में मिलता है, जैसे :

1) सुयश
2) सुगम
3) सुसंपन्न

इनके अतिरिक्त भी अनेक तत्सम उपसर्ग हैं, जैसे : अधि (अधिपति), अभि (अभिमान), उत् (उत्पीड़न), आदि, जो हिंदी में अनेक शब्दों के निर्माण में प्रयुक्त होते हैं।

2) **तद्भव उपसर्ग** — तद्भव उपसर्ग मूलतः संस्कृत के उपसर्गों (तत्सम) से ही विकसित हुए हैं। कुछ प्रमुख तद्भव उपसर्ग इस प्रकार हैं —

1) उ - यह संस्कृत के "उद्" उपसर्ग से विकसित हुआ है जो ऊपर, ऊँचा आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है, जैसे :

   1) उभरना
   2) उथला
   3) उतरना
   4) उनींदा

2) औ - यह संस्कृत के "अव" उपसर्ग से विकसित हुआ है और हीन, नीचे, दूर आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है, जैसे :

   1) औगुन
   2) औघट

3) क - यह उपसर्ग संस्कृत के 'कु' उपसर्ग से विकसित हुआ है और हिंदी में "कपूत" शब्द में ही प्रयुक्त होता है।

4) नि - नि उपसर्ग संस्कृत के "निर्" उपसर्ग से विकसित होकर आया है और "रहित" के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे :

   1) निहत्था
   2) निकम्मा

5) पर - यह उपसर्ग संस्कृत के प्र - उपसर्ग का विकसित रूप है जो हिंदी में "दूसरी पीढ़ी का" के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे :

   1) परपोता
   2) परदादा
   3) परनाना

6) स - हिंदी में स उपसर्ग संस्कृत के 'सु' उपसर्ग से विकसित हुआ है और "अच्छा" के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे :

   1) सपूत।

3) विदेशी उपसर्ग

1) ब - यह उपसर्ग "के साथ" तथा "से" दो अर्थों में प्रयुक्त होता है और फ़ारसी भाषा से हिंदी में आया है, जैसे :

   1) बखूबी
   2) बनाम
   3) बदौलत

2) बा - यह भी फ़ारसी भाषा से आया है तथा "साथ" और "से" के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है, जैसे :

   1) बाकायदा
   2) बावजूद

3) बे - यह फ़ारसी का उपसर्ग है जिसका अर्थ है "बिना", जैसे :

   1) बेरहम

2) बेईमान
3) बेचारा
4) बेतुका

4) ला - यह उपसर्ग अरबी भाषा का है और हिंदी में "नहीं" या "अभाव" के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे :

1) लाजवाब
2) लापरवाह
3) लावारिस
4) लाचार

5) हम - यह फ़ारसी का उपसर्ग है और इसका अर्थ है "आपस में", "साथ" या "बराबर" जैसे :

1) हमसफ़र
2) हमदर्द
3) हमउम्र
4) हमदम

6) वाइस - यह अंग्रेज़ी से आया है और "उप" के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे :

1) वाइस चांसलर
2) वाइस चेयरमैन
3) वाइस प्रिंसीपल

7) "सब-" यह भी अंग्रेज़ी से आया है और "उप" या "छोटा" के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे :

1) सब इंस्पेक्टर
2) सब स्टेशन

7.3.3 उपसर्गों के आधार पर शब्द निर्माण के कुछ प्रमुख बिंदु

उपसर्ग लगाकर शब्द निर्माण करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए —

1) प्रायः जिस प्रकार का उपसर्ग है, वह उसी प्रकार के शब्द के साथ लगकर नए शब्द का निर्माण करता है अर्थात् तत्सम उपसर्ग तत्सम शब्द के साथ, तद्भव उपसर्ग तद्भव शब्द के साथ तथा विदेशी उपसर्ग विदेशी शब्द के साथ जोड़ा जाता है। जैसे "कु" उपसर्ग तत्सम उपसर्ग है यह तत्सम शब्द "पुत्र" के साथ तो लगाकर "कुपुत्र" शब्द बना सकता है परंतु पुत्र के तद्भव रूप "पूत" के साथ नहीं लग सकता। हाँ कुछ उपसर्गों का जब भाषा में बहुत अधिक प्रचलन हो जाता है या कभी साहित्यकार नए-नए प्रयोग करते हैं तब वे भिन्न प्रकार के उपसर्ग तथा भिन्न प्रकार के शब्द के संयोग से भी शब्द बना लेते हैं। हिंदी में कुछ शब्द आपको अपवाद स्वरूप मिल जाएँगे जैसे — बेजोड़, अथाह आदि।

2) संस्कृत से आए निषेधवाची दो उपसर्ग हैं — अ तथा अन्। अ उपसर्ग हिंदी में व्यंजन से आरंभ होने वाले शब्दों में तथा अन् उपसर्ग स्वर से आरंभ होने वाले शब्दों में ही लगता है।

जैसे :— क) 1) अधर्म ख) 1) अनादर (अन् + आदर)
2) अहित 2) अनावश्यक (अन् + आवश्यक)

3) व्यंजन से आरंभ होने वाले तद्भव शब्दों के साथ निषेधवाची उपसर्ग के रूप में "अन्" का रूप "अन" में परिवर्तित हो जाता है और "अन-उपसर्ग" के रूप में ही यह लगता है, जैसे :

1) अनदेखा
2) अनजाना
3) अनकहा
4) अनसुनी

4) तत्सम उपसर्गों में कुछ उपसर्ग ऐसे भी हैं जिनके एक से अधिक रूप मिलते हैं जैसे दुर्, दुस्, दुष्, दुश् आदि और ये नीचे कोष्ठक में दिए गए विवरण के अनुसार ही शब्दों में लगते हैं जैसे —

1)	दुर् — दुर्गुण, दुर्बोध	(सघोष ध्वनियों से बनने वाले शब्दों में)
2)	दुस् — दुस्साहस, दुस्तर	(स, त अघोष ध्वनियों वाले शब्दों के पूर्व)
3)	दुष् — दुष्कार्य, दुष्प्रवृति	(क, प आदि अघोष ध्वनियों के पूर्व)
4)	दुश् — दुश्चरित्र, दुश्चिंता	(अघोष ध्वनि, "च" से बनने वाले शब्दों के पूर्व)

इसी प्रकार से निर्, निस्, निष्, निश् रूपों के भी प्रयोग मिलते हैं।

5) एक उपसर्ग एक से अधिक अर्थों में प्रयुक्त हो सकता है।

6) उपसर्गों की मदद से शब्द निर्माण या शब्द व्युत्पादन प्रक्रिया के अंतर्गत जो नए शब्द बनते हैं उनमें कभी तो एक व्याकरणिक कोटि (संज्ञा, सर्वनाम आदि) के शब्द से दूसरी व्याकरणिक कोटि का शब्द बन जाता है और कभी जो नया शब्द बनता है उसकी व्याकरणिक कोटि नहीं बदलती। नया शब्द भी उसी वर्ग का बना रहता है, जैसे :

व्याकरणिक कोटि में परिवर्तन अ + थाह → अथाह
(संज्ञा) (विशेषण)

अन + बन → अनबन
(क्रिया) (संज्ञा)

व्याकरणिक कोटि में परिवर्तन नहीं अ + न्याय → अन्याय
(संज्ञा) (संज्ञा)

अन + आवश्यक → अनावश्यक
(विशेषण) (विशेषण)

ऊपर बताए गए प्रथम प्रकार के व्युत्पादन को *"अन्तर व्युत्पादन"* तथा दूसरे प्रकार के व्युत्पादन को *"अन्तः व्युत्पादन"* कहा जाता है। आइए, इन दोनों के अंतर को समझें।

7.3.4 अन्तर व्युत्पादन तथा अन्तः व्युत्पादन

अन्तर व्युत्पादन — जैसा कि आपको बताया गया था, अन्तर व्युत्पादन के अंतर्गत व्युत्पन्न (नव निर्मित) शब्द की व्याकरणिक कोटि बदल जाती है। *संज्ञा से विशेषण या विशेषण से संज्ञा अथवा क्रिया से संज्ञा आदि शब्दों का बनना ही अन्तर व्युत्पादन कहलाता है।*

हिंदी में उपसर्ग संज्ञा, विशेषण, क्रिया, अव्यय सभी के पहले जुड़ सकते हैं और नए वर्ग के शब्द निर्मित करते हैं जैसे :

1) संज्ञा व्युत्पादन :
क्रिया → संज्ञा

अन	+	बन (ना)	=	अनबन

2) विशेषण व्युत्पादन :
संज्ञा → विशेषण

अन	+	मोल	=	अनमोल
नि	+	डर	=	निडर
बे	+	शर्म	=	बेशर्म

क्रिया → विशेषण

अन	+	पढ़ (ना)	=	अनपढ़
सु	+	जान (ना)	=	सुजान

3) अव्यय व्युत्पादन :

संज्ञा ⟶ अवयव

प्रति	+	दिन	=	प्रतिदिन
आ	+	जन्म	=	आजन्म

विशेषण ⟶ अव्यय

अ	+	विरल	=	अविरल
अति	+	रिक्त	=	अतिरिक्त

अन्तः व्युत्पादन :

अन्तः व्युत्पादन प्रक्रिया के अंतर्गत बनने वाले शब्दों की व्याकरणिक कोटि में परिवर्तन नहीं होता। कुछ उदाहरण देखिए —

1) संज्ञा ⟶ संज्ञा

अ	+	न्याय	=	अन्याय
अधि	+	पति	=	अधिपति
अप	+	मान	=	अपमान
पर	+	दादा	=	परदादा

2) विशेषण ⟶ विशेषण

अ	+	कुशल	=	अकुशल
अन्	+	आवश्यक	=	अनावश्यक
ग़ैर	+	हाज़िर	=	ग़ैरहाज़िर
वि	+	शेष	=	विशेष

अभ्यास 1

क) नीचे दिए गए कुछ कथन सही हैं तथा कुछ गलत। सही कथन के आगे (√) तथा गलत के आगे (×) का निशान लगाइए —

	सही	गलत
i) भाषाओं में विभिन्न प्रकार के रूपों से शब्द निर्माण होता है।	☐	☐
ii) वे बद्ध रूप जो शब्द के अंत में लगते हैं, उन्हें पर-प्रत्यय भी कहा जाता है।	☐	☐
iii) "अन्त्य प्रत्यय" तथा "पर प्रत्यय" में भेद होता है।	☐	☐
iv) जिन रूपों के संयोग से किसी शब्द के विभिन्न रूप प्राप्त होते हैं, उन्हें रूपसाधक प्रत्यय कहा जाता है।	☐	☐
v) व्युत्पादन तथा शब्द साधन — दो भिन्न प्रक्रियाएँ हैं।	☐	☐
vi) तद्भव उपसर्ग मूलतः संस्कृत के उपसर्गों से ही विकसित हुए हैं।	☐	☐

ख) अंतर स्पष्ट कीजिए। (लगभग 5-6 वाक्यों में)

i) उपसर्ग एवं प्रत्यय

.....

.....

.....

.....

.....

ii) तत्सम एवं तद्भव उपसर्ग

.....

.....

.....

.....

iii) अंतर व्युत्पादन तथा अन्तः व्युत्पादन

.....

.....

.....

.....

.....

iv) रूपसाधक तथा व्युत्पादक प्रत्यय

.....

.....

.....

.....

.....

7.4 प्रत्यय

7.4.1 प्रत्यय से तात्पर्य

जैसा कि आपको इकाई 5 में बताया गया था, प्रत्यय भाषा के वे खंड हैं जो लघुतम तथा सार्थक होते हैं। ये मूल शब्द में जुड़कर नए-नए शब्दों का निर्माण भी करते हैं। आधुनिक भाषा विज्ञान की परिभाषा के अनुसार प्रत्यय एक व्यापक शब्द है जिसके अंतर्गत शब्द के आरंभ में लगने वाले प्रत्यय (उपसर्ग) भी आ जाते हैं तथा अंत में लगने वाले प्रत्यय भी। जैसे :—

1) अ + सुंदर = असुंदर
2) सुंदर + ता = सुंदरता

यहाँ "अ"—पूर्व प्रत्यय (उपसर्ग) है तथा "ता" अन्त्य प्रत्यय (प्रत्यय) है।

7.4.2 हिंदी के प्रत्यय : रूपसाधक/व्युत्पादक

हिंदी में प्रत्यय दो प्रकार के हैं —
रूपसाधक प्रत्यय और व्युत्पादक प्रत्यय, जिनमें से इकाई 6 में आप रूपसाधक प्रत्ययों के बारे में पढ़ चुके हैं।

हिंदी के रूपसाधक प्रत्यय : प्रायः संज्ञा तथा क्रिया के रूपों की रचना रूपसाधक प्रत्ययों से होती है। हिंदी संज्ञाएँ वचन और कारक की कोटि के लिए रूप परिवर्तित करती हैं। निम्नलिखित तालिका को देखिए।

सामान्य एकवचन	सामान्य बहुवचन	तिर्यक एकवचन	तिर्यक बहुवचन
लड़का	लड़के	लड़के	लड़कों
भाई	भाई	भाई	भाइयों
साधु	साधु	साधु	साधुओं
राजा	राजा	राजा	राजाओं
लड़की	लड़कियाँ	लड़की	लड़कियों
बहन	बहनें	बहन	बहनों
माला	मालाएँ	माला	मालाओं
बहू	बहुएँ	बहू	बहुओं

हिंदी क्रियाएँ काल, पक्ष और वृत्ति के अनुसार तथा कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार रूप परिवर्तित करती हैं। जैसे : "रहा है" पक्ष सूचक रूपसाधक प्रत्यय है जो वर्तमान काल, सातत्यबोधक पक्ष और निश्चयार्थक वृत्ति की सूचना देती है। इस से संबंधित क्रिया की रूपावली इस प्रकार होगी —

एकवचन	बहुवचन
मैं घर जा रहा हूँ।	हम घर जा रहे हैं।
मैं घर जा रही हूँ।	हम घर जा रही हैं।
तुम घर जा रहे हो।	आप घर जा रहे हैं।
तुम घर जा रही हो।	आप घर जा रही हैं।
वह घर जा रहा है।	वे घर जा रहे हैं।
वह घर जा रही है।	वे घर जा रही हैं।

हिंदी के व्युत्पादक प्रत्यय : हिंदी में संस्कृत तथा विदेशी प्रत्ययों की सहायता से काफ़ी शब्दों का निर्माण किया जाता है। जैसे :

1) आवश्यक + ता → आवश्यकता
2) परीक्षा + क → परीक्षक
3) फंदा + बाज़ → फंदेबाज़
4) अंगूर + ई → अंगूरी

प्रत्यय हमेशा शब्द के बाद जुड़ते हैं। ऊपर के उदाहरणों में "ता", "क", "बाज़" तथा "ई" प्रत्यय हैं। कुछ विद्वान् उपसर्गों और प्रत्ययों को प्रत्यय के अंतर्गत ही रखते हैं तथा उपसर्ग को **पूर्व प्रत्यय** और प्रत्यय को **पर प्रत्यय** कहते हैं, जिसकी चर्चा हम इस इकाई के प्रारंभ में कर ही चुके हैं।

हिंदी भाषा में शब्द निर्माण की दृष्टि से प्रत्ययों का प्रयोग सबसे ज़्यादा होता है। स्रोत की दृष्टि से प्रत्ययों को निम्नलिखित कोटियों में वर्गीकृत किया जा सकता है —

1) संस्कृत प्रत्यय या तत्सम प्रत्यय
2) हिंदी प्रत्यय या तद्भव प्रत्यय
3) अरबी-फ़ारसी के प्रत्यय या विदेशी प्रत्यय

कई शब्दों के साथ उसी भाषा के प्रत्यय लगते हैं जिस भाषा का मूल शब्द हो। इसी सह-प्रयोग के आधार पर इनको निम्नलिखित रूप मे वर्गीकृत किया जा सकता है —

1) **संस्कृत का मूल शब्द** + संस्कृत का प्रत्यय

1) रसायन + इक = रासायनिक
2) इतिहास + इक = ऐतिहासिक
3) समाज + इक = सामाजिक
4) धर्म + इक = धार्मिक

ध्यान दीजिए, संस्कृत या तत्सम शब्दों के साथ तत्सम प्रत्यय लगने से मूल शब्द के स्वर के आदि में वृद्धि का सिद्धांत काम करता है। इसी आधार पर रसायन का "रासायनिक", इतिहास का "ऐतिहासिक" समाज का "सामाजिक" और धर्म का "धार्मिक" रूप बनता है।

2) **संस्कृत का मूल शब्द** + हिंदी प्रत्यय

1) ज्ञान + ई = ज्ञानी
2) मनोविज्ञान + ई = मनोविज्ञानी

3) **हिंदी मूल शब्द** + हिंदी प्रत्यय

1) दब्बू + पन = दब्बूपन
2) दया + आलु = दयालु
3) घबरा + आहट = घबराहट

4) **हिंदी मूल शब्द** + अरबी-फ़ारसी प्रत्यय
   1) चाल + बाज़ = चालबाज़
   2) शर्म + सार = शर्मसार

5) **अरबी-फ़ारसी मूल शब्द** + अरबी-फ़ारसी प्रत्यय
   1) खज़ाना + ची = खज़ानची
   2) मुकदमा + बाज़ = मुकदमे बाज़

हिंदी के सारे प्रत्ययों में संख्या की दृष्टि से "वाला" बोधक प्रत्ययों की संख्या सबसे अधिक है — नीचे कुछ उदाहरण देखिए :—

— आक	:	तैर	+	आक	=	तैराक (तैरने वाला)
— कार	:	चित्र	+	कार	=	चित्रकार (चित्र बनाने वाला)
— इक	:	इतिहास	+	इक	=	ऐतिहासिक (इतिहास से संबंधित)
— वाला	:	दूध	+	वाला	=	दूधवाला (दूध बेचने वाला)
— इया	:	केसर	+	इया	=	केसरिया (केसर के रंग वाला)
— आलु	:	दया	+	आलु	=	दयालु (दया रखने वाला)
— दार	:	दुकान	+	दार	=	दुकानदार (दुकान वाला)
— वान	:	गुण	+	वान	=	गुणवान (गुणवाला)

इसी प्रकार और भी बहुत से "वाला" बोधक प्रत्यय हैं जिनसे शब्द निर्माण में सहायता ली जाती है। इनमें से—कार, इक, वंत, बाज़, आक, ई, इया, आलु, ईला आदि प्रत्यय संज्ञा से विशेषण व्युत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

प्रकार्य की दृष्टि से प्रत्यय

प्रकार्य की दृष्टि से प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं —

1) व्युत्पादक 2) रूपसाधक प्रत्यय।

व्युत्पादक प्रत्ययों के अंतर्गत लिंग बोधक तथा स्तर बोधक प्रत्यय भी मिलते हैं। कुछ उदाहरण देखिए —

1) **लिंग बोधक प्रत्यय :** बहुत से स्त्रीलिंग शब्दों का व्युत्पादन पुल्लिंग शब्दों के साथ लिंग बोधक प्रत्यय लगा कर किया जाता है। इनमें से कुछ मुख्य प्रत्यय और उनसे बनने वाले शब्द इस प्रकार हैं :—

   ई प्रत्यय : दास-दासी
   देव-देवी

   — आ को ई में बदल कर : घोड़ा-घोड़ी
   लड़का-लड़की

   — आ के स्थान पर इया जोड़कर : गुड्डा-गुड़िया
   डिब्बा-डिबिया

   — इन जोड़कर : सुनार-सुनारिन
   माली-मालिन

   — नी या इनी जोड़कर : शेर-शेरनी
   मोर-मोरनी
   हंस-हंसिनी

   — आनी या आइन जोड़कर : देवर-देवरानी
   लाला-ललाइन

   — संस्कृत शब्द में आ जोड़कर : प्रिय-प्रिया
   शिष्य-शिष्या

— क के स्थान पर इका जोड़कर : गायक-गायिका
नायक-नायिका
सेवक-सेविका

— स्त्रीलिंग शब्दों में आ जोड़कर : भैंस-भैंसा
मौसी-मौसा

2) स्तर बोधक प्रत्यय : जो प्रत्यय विशेषण के साथ जुड़कर उनके स्तर को तुलनात्मक दृष्टि से प्रकट करते हैं उन्हें स्तरबोधक प्रत्यय कहते हैं। हिंदी में दो स्तरबोधक प्रत्यय हैं — -तर और -तम।

जैसे : —

श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
लघु	लघुतर	लघुतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम

3) व्यवसाय या पेशा सूचक प्रत्ययों से भी हिंदी में नए-नए शब्द बनाए जाते हैं, जैसे :

1) सोना + आर = सुनार
2) लोहा + आर = लुहार
3) दूध + वाला = दूधवाला
4) पान + वाला = पानवाला

हिंदी के कई व्युत्पादक प्रत्यय संज्ञा, विशेषण एवं क्रियाविशेषण से भाववाचक संज्ञा व्युत्पन्न करने में सहायक होते हैं। जैसे :

1) बच्चा + पन = बचपन
2) लघु + ता = लघुता
3) आवश्यक + ता = आवश्यकता
4) चोर + ई = चोरी

लघुताबोधक संज्ञा शब्दों का निर्माण भी कई प्रत्ययों द्वारा किया जाता है जैसे :—

1) लोटा + इया = लुटिया
2) कटोरा + ई = कटोरी

4) गुणवाचक विशेषण बनाने वाले प्रत्यय

हिंदी में गुणवाचक विशेषण बनाने वाले कुछ प्रत्यय इस प्रकार हैं :—

— लु — कृपालु, दयालु
— ई — बसंती, बैंगनी
— ऊ / आरु — बाज़ारु, गँवारु
— इया — घटिया, बढ़िया
— आऊ — टिकाऊ, बिकाऊ
— वना — लुभावना, डरावना, सुहावना

5) कर्तृवाचक संज्ञा बनाने वाले प्रत्यय

हिंदी में कर्तृवाचक संज्ञा बनाने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण प्रत्यय इस प्रकार हैं —

— अक्कड़ — घुमक्कड़, भुलक्कड़
— आकू — लड़ाकू, पढ़ाकू
— आक — तैराक, उड़ाक
— इयल — मरियल, अड़ियल
— वैया — गवैया, खेवैया

6) भाववाचक संज्ञा बनाने वाले प्रत्यय

— आस — मिठास
— ता — मित्रता, आवश्यकता

— त्व — अपनत्व, ममत्व
— पन — अपनापन, बचपन
— आई — भलाई, कठिनाई
— पा — बुढ़ापा, मोटापा
— आवट — बनावट, मिलावट
— आहट — घबराहट, झल्लाहट

7.4.3 प्रत्ययों के आधार पर शब्द निर्माण के कुछ प्रमुख बिंदु

प्रत्यय लगाकर शब्द निर्माण करने में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1) मूल शब्द में एक बार में केवल एक प्रत्यय ही जोड़ा जाना चाहिए। जैसे : "स्वतंत्र" से "स्वातंत्र्य" या "सुंदर" से "सौंदर्य" तो बन सकता है पर एक और प्रत्यय — "ता" नहीं जोड़ा जा सकता, जैसे : "स्वातंत्र्यता" या "सौंदर्यता" शब्द गलत हैं। इसी प्रकार पूजा शब्द में अलग-अलग दो प्रत्यय लगकर दो शब्द बन सकते हैं जैसे :

पूजा → पूज्य
→ पूजनीय

परंतु कुछ लोग पूज्य में "नीय" प्रत्यय लगाकर यदि "पूज्यनीय" शब्द बनाते हैं तो यह गलत है।

2) शब्द में -य, -व तथा -ई प्रत्यय जोड़ते समय शब्दों के स्वरूप में होने वाले परिवर्तनों का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए अन्यथा अशुद्ध शब्द बन सकता है।

जैसे :- नीचे के शब्दों में आदिवृद्धि होना अनिवार्य है।

गंभीर	+	य	=	गांभीर्य (न कि गंभीर्य)
मधुर	+	ई	=	माधुरी (न कि मधुरी)
शिशु	+	व	=	शैशव (न कि शिशुव)

3) इसी प्रकार विशेषणों में — इक प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञा बनाने से पूर्व भी आदिवृद्धि का ध्यान रखना चाहिए जैसे :—

संसार	+	इक	=	सासांरिक (अ - आ)
समाज	+	इक	=	सामाजिक (अ - आ)
इतिहास	+	इक	=	ऐतिह्यसिक (इ - ऐ)
पुराण	+	इक	=	पौराणिक (उ - औ)

4) यदि मूल शब्द के आरंभिक अक्षर में 'आ' है तो उसका रूप परिवर्तित नहीं होता जैसे —

व्यापार	+	इक	=	व्यापारिक

5) कुछ शब्दों में वृद्धि दो स्थानों पर भी होती है जैसे :

परलोक	+	इक	=	पारलौकिक

7.5 समास

7.5.1 समास से तात्पर्य

7.5.2 हिंदी में समास प्रक्रिया

जैसा कि अभी चर्चा की गई है, हिंदी में समास प्रक्रिया के आधार पर भी नए-नए शब्दों का निर्माण होता है। जैसे :—

1) स्नान + गृह = स्नानगृह

2) जल + पान = जलपान
3) डाक + घर = डाकघर

कुछ शब्द दो से अधिक शब्दों के समास से भी बनते हैं जैसे :—

1) हिंदी + प्रचार + सभा = हिंदी प्रचार सभा
2) राष्ट्र + भाषा + परिषद = राष्ट्र भाषा परिषद्
3) दक्षिण + भारत + हिंदी + प्रचार + सभा = दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा।

आइए देखें कि समास प्रक्रिया से शब्द निर्माण किस प्रकार होता है।

7.5.3 समास प्रक्रिया से शब्द निर्माण

हिंदी में समास प्रक्रिया के अंतर्गत तीन प्रकार से शब्दों की रचना हो सकती है —

1) **तत्सम** + तत्सम शब्दों के समास से —

जैसे : राष्ट्र + पिता = राष्ट्रपिता
राजा + कुमार = राजकुमार
जन्म + अंधा = जन्मांध
देश + भक्ति = देश भक्ति

2) **तद्भव** + तद्भव शब्दों के समास से

जैसे : घोड़ा + सवार = घुड़सवार
चार + पाई = चारपाई
चिड़िया + मार = चिड़ीमार
बैल + गाड़ी = बैलगाड़ी

3) **विदेशी** + विदेशी शब्दों के समास से

जैसे : हवाई + जहाज़ = हवाई जहाज़
आराम + पसंद = आराम पसंद
जेब + ख़र्च = जेबख़र्च

जब एक ही स्रोत से आए शब्दों के संयोग से शब्दों का निर्माण होता है तब उन समासों को **समस्रोतीय समास** कहा जाता है।

लेकिन कुछ ऐसे समास भी मिलते हैं जिनमें दोनों शब्द भिन्न-भिन्न भाषाओं के आ जाते हैं। इस तरह के समासों को **संकर समास** कहा जाता है। कुछ उदाहरण देखिए —

तत्सम	+	तद्भव	चंद्रमुँही
तत्सम	+	विदेशी	योजना कमीशन
तद्भव	+	तत्सम	बिजली यंत्र
तद्भव	+	विदेशी	डाकख़ाना
विदेशी	+	तत्सम	जिलाधीश
विदेशी	+	तद्भव	पॉकेट मार

7.5.4 समास प्रक्रिया द्वारा शब्दों का व्याकरणिक कोटि में परिवर्तन

समास प्रक्रिया से बने बहुत से शब्दों की रचना में अनेक प्रकार के ध्वनि परिवर्तन होते हैं। अशुद्धि से बचने के लिए इनका ध्यान रखना आवश्यक है, जैसे —

पानी + घाट = पनघट
घोड़ा + सवार = घुड़सवार

हिंदी में समास प्रक्रिया द्वारा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रियाविशेषण चारों प्रकार के शब्दों का व्युत्पादन या निर्माण संभव है। कुछ उदाहरण देखिए —

1) संज्ञा शब्दों का व्युत्पादन

संज्ञा + संज्ञा → संज्ञा

डाक + घर = डाकघर
घोड़ा + सवार = घुड़सवार

विशेषण + संज्ञा → संज्ञा

काली + मिर्च = कालीमिर्च
छोटा + भैया = छुट भैया

संज्ञा + धातु/क्रिया → संज्ञा

चिड़िया + मार = चिड़ीमार

धातु + धातु → संज्ञा

उछल + कूद = उछलकूद
दौड़ + भाग = दौड़भाग

2) सर्वनाम शब्दों का व्युत्पादन

सर्वनाम + सर्वनाम → सर्वनाम

आप + ही + आप = आप ही आप
हम + तुम = हम तुम

3) विशेषण शब्दों का व्युत्पादन

संज्ञा + संज्ञा → विशेषण

आराम + पसंद = आराम पसंद
पत्थर + हृदय = पत्थर हृदय

संज्ञा + विशेषण → विशेषण

शोक + आकुल = शोकाकुल
भय + भीत = भयभीत

विशेषण + विशेषण → विशेषण

हरा + भरा = हरा भरा
सीधा + सादा = सीधा सादा

संज्ञा + धातु → विशेषण

मक्खी + चूस = मक्खीचूस
कमर + तोड़ = कमरतोड़

4) क्रियाविशेषण शब्दों का व्युत्पादन

संज्ञा + संज्ञा → क्रियाविशेषण

रात + दिन = रात दिन
घंटे + दो घंटे = घंटे दो घंटे

संज्ञा + अव्यय → क्रियाविशेषण

भोजन + उपरांत = भोजनोपरांत
दिन + भर = दिनभर

अव्यय + संज्ञा → क्रियाविशेषण

यथा + शक्ति = यथाशक्ति
यथा + स्थान = यथास्थान

क्रियाविशेषण + क्रियाविशेषण → क्रियाविशेषण

इधर + उधर = इधर-उधर
जहाँ + तहाँ = जहाँ-तहाँ।

क) नीचे दिए गए कुछ कथन सही हैं तथा कुछ ग़लत। सही कथन के आगे (√) तथा गलत के आगे (×) का निशान लगाइए —

	सही	गलत
i) हिंदी में संस्कृत तथा विदेशी प्रत्ययों से काफ़ी शब्दों का निर्माण होता है।	☐	☐
ii) मूल शब्द में एक बार में कई प्रत्यय जुड़ कर शब्द का निर्माण कर सकते हैं।	☐	☐
iii) समास बनाते समय वर्णन संक्षिप्त हो जाता है।	☐	☐
iv) समास के नियमों द्वारा जो शब्द बनाए जाते हैं, उन्हें समस्त पद कहते हैं।	☐	☐
v) संकर समास में दोनों शब्द एक भाषा के ही होते हैं।	☐	☐
vi) जब एक ही स्रोत से आए शब्दों से समास बनाया जाता है, उन्हें समस्रोतीय समास कहा जाता है।	☐	☐

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के 2-3 पंक्तियों में उत्तर दीजिए —

i) प्रत्यय किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

ii) प्रकार्य की दृष्टि से प्रत्यय कितने प्रकार के होते हैं? उनके नाम लिखिए।

.....

.....

.....

iii) प्रत्यय लगाकर शब्द बनाते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? कोई दो उदाहरण देकर बताइए।

.....

.....

.....

iv) समास तथा समस्त पद में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

v) समास-विग्रह किसे कहते हैं?

.....

.....

7.6 सारांश

इस प्रकार इस इकाई में आपको रूप रचना की संकल्पना से परिचित कराते हुए बताया गया कि शब्द-व्युत्पादन रूप रचना प्रक्रिया का ही एक भाग है जिसके अंतर्गत भाषा में नए-नए शब्दों की रचना की जाती है। हिंदी में शब्द-व्युत्पादन के अंतर्गत प्रमुख रूप से तीन प्रकार से शब्दों का निर्माण किया जाता है — उपसर्ग लगाकर, प्रत्यय लगाकर तथा समास के आधार पर। उपसर्ग तथा प्रत्यय शीर्षकों के अंतर्गत आपको बताया गया कि उपसर्ग और प्रत्यय क्या होते हैं तथा आधुनिक भाषा विज्ञान में उपसर्ग तथा प्रत्यय दोनों ही प्रत्यय (आदि प्रत्यय तथा अन्त्य/पर प्रत्यय) की कोटि में आ जाते हैं।

आपने उपसर्गों तथा प्रत्ययों के विभिन्न प्रकारों की भी जानकारी प्राप्त की तथा आपको बताया गया कि किस प्रकार उपसर्ग तथा प्रत्यय लगाकर हिंदी में विभिन्न प्रकार के शब्दों की रचना की जाती है।

उपसर्ग तथा प्रत्यय व्युत्पादन प्रक्रिया के अंतर्गत कभी तो ऐसे शब्दों की रचना करते हैं जिसका व्याकरणिक वर्ग या कोटि भिन्न हो जाती है और कभी एक ही वर्ग या कोटि के नए शब्द निर्मित होते हैं। प्रथम वर्ग को अन्तर व्युत्पादन तथा द्वितीय को अन्तः व्युत्पादन कहा जाता है।

समास रचना प्रक्रिया के आधार पर भी हिंदी में एक ही व्याकरणिक वर्ग के तथा भिन्न व्याकरणिक वर्ग के शब्दों की रचना की जाती है। इस प्रकार पूरी इकाई के अध्ययन के बाद आपने हिंदी में व्युत्पादन प्रक्रिया के अंतर्गत बनने वाले विभिन्न प्रकार के शब्दों का विस्तृत अध्ययन किया।

7.7 शब्दावली

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपको निम्नलिखित विशिष्ट शब्दावली की जानकारी मिली —

रूप रचना
व्युत्पादन
व्युत्पादक प्रत्यय
रूप साधक प्रत्यय
व्युत्पन्न शब्द
अन्तर व्युत्पादन
अन्तः व्युत्पादन
व्याकरणिक वर्ग
व्याकरणिक कोटि
स्तर बोधक प्रत्यय
लिंग बोधक प्रत्यय
व्यवसाय सूचक प्रत्यय
गुणवाचक विशेषण
कर्तृवाचक संज्ञा
भाववाचक संज्ञा
समास
क्रियाविशेषण
अव्यय

7.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) *प्रयोग और प्रयोग* : वी.रा. जगन्नाथन (1981) ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।

2) *हिंदी का शैक्षिक व्याकरण* : सं. र. ना. श्रीवास्तव, बा.गो.मिश्र, भो.ना. तिवारी (1980), नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

3) *हिंदी भाषा* : भो.ना. तिवारी (1986) किताब महल, इलाहाबाद।

7.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

क) i) √ iv) √
ii) √ v) ×
iii) × vi) √

ख) इकाई से स्वयं जाँच करें।

अभ्यास 2

क) i) √ iv) √
ii) × v) ×
iii) √ vi) √

ख) इकाई से स्वयं जाँच करें।

इकाई 8 संयुक्त शब्द तथा समस्त शब्द

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य
8.1 प्रस्तावना
8.2 संयुक्त शब्दों की संकल्पना
8.3 संयुक्त शब्दों के प्रमुख अभिलक्षण
8.4 संयुक्त शब्दों की आर्थी संरचना
8.5 संयुक्त शब्दों के प्रकार
  8.5.1 क्रियाकरयुक्त संयुक्त शब्द
  8.5.2 समवर्गीय संयुक्त शब्द
8.6 समस्त पद की संकल्पना
8.7 समस्त पदों का वर्गीकरण
  8.7.1 परंपरागत वर्गीकरण
  8.7.2 आन्तरिक संबंध की दृष्टि से वर्गीकरण
8.8 सारांश
8.9 शब्दावली
8.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें
8.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप —

- हिंदी शब्दों की रचना के बारे में जानकारी दे सकेंगे,
- संयुक्त शब्द और समस्त शब्द की संरचना पर प्रकाश डाल सकेंगे,
- संयुक्त शब्द और समस्त शब्द के अंतर को समझा सकेंगे,
- संयुक्त शब्दों और समस्त शब्दों के प्रयोग संदर्भों की जानकारी दे सकेंगे, और
- संयुक्त शब्दों और समस्त शब्दों का यथोचित प्रयोग कर सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

हर भाषा में दो प्रकार के शब्द होते हैं — एक मूल शब्द कहलाता है, दूसरे को व्युत्पन्न शब्द कहते हैं। मूल शब्द किसी भी शब्द की सबसे छोटी लेकिन अर्थवान इकाई होती है। इसे भाषावैज्ञानिक रूपिम कहते हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित शब्दों को देखिए —

चंचल अचल चालू चालक प्रचलन विचलन मनचला चालढाल

ये आठों शब्द व्युत्पन्न शब्द हैं। आप हर एक शब्द को ध्यान से देखें तो पाएँगे कि इन आठों शब्दों में "चल" शब्द किसी न किसी रूप में विद्यमान है। कहीं वह किसी उपसर्ग के साथ है, जैसे 'अ + चल' = अचल, और कहीं प्रत्यय के साथ है, जैसे — चल + ऊ = चालू। प्रचलन, विचलन में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों जुड़े हुए हैं और मनचला तथा चालढाल में 'मन + चला', 'चाल + ढाल' — दो-दो शब्दों का मेल है।

इस प्रकार "चल" मूल शब्द है, जिसमें उपसर्ग, प्रत्यय और अन्य शब्दों को जोड़कर आठों व्युत्पन्न शब्द बनाये गये हैं। इस तरह से शब्द बनाने की विधि या प्रक्रिया हर भाषा में पाई जाती है। आपने पहले की इकाइयों में उपसर्ग और प्रत्यय से शब्द व्युत्पन्न करने की प्रक्रिया के बारे में पढ़ा है। इस पाठ में दो मूल शब्दों के योग से बनाये जाने वाले संयुक्त शब्दों और समस्त शब्दों के बारे में चर्चा की जाएगी।

8.2 संयुक्त शब्दों की संकल्पना

संयुक्त शब्द से तात्पर्य है — "दो सार्थक किंतु एक दूसरे से किसी प्रकार का संबंध न रखने वाले शब्दों का वह जोड़ा, जो एक विशेष प्रकार के अर्थ को व्यक्त करने के लिए एक स्वतंत्र द्विशाब्दिक इकाई बनकर प्रयुक्त होता है।"

इस परिभाषा में चार बातें ध्यान देने योग्य हैं —

1) *दो सार्थक शब्दों का जोड़ा ही संयुक्त शब्द बनाता है।* सार्थक से अभिप्राय है — ऐसे शब्द जिनका अपना स्वतंत्र अर्थ हो। जब दो सार्थक शब्द एक इकाई के रूप में जुड़कर आते हैं तभी संयुक्त शब्द की रचना होती है, जैसे —

   1) जब तक हाथपाँव नहीं मारोगे, मकान नहीं मिलेगा।
   2) मैं उनसे कहसुन कर हार गया।

   रेखांकित शब्दों में दो-दो सार्थक शब्द जुड़कर इकाई बना रहे हैं, "हाथ और पाँव", "कह और सुन"।

2) *दोनों शब्दों में कोई आंतरिक संबंध नहीं होता,* अर्थात् इन दोनों के बीच में संबंध सूचित करने वाले कोई योजक, कारकीय संबंध बोधक या व्याख्यात्मक तत्व नहीं होते। ऊपर के ही उदाहरण को लें तो "हाथ और पाँव", "कह और सुन" के मध्य में कोई आंतरिक संबंध नहीं है, जैसा कि "हथकड़ी" (हाथों को बाँधने के लिए इस्तेमाल होनेवाली कड़ी), "पाँवपोंछ" (जिसपर पाँव पोंछा जाता है) जैसे दो शब्दों के जोड़ों में मिलता है।

3) *दोनों शब्द जुड़कर एक विशेष प्रकार का अर्थ पैदा करते हैं,* जो दोनों शब्दों के अलग-अलग अर्थों से भिन्न होता है। यह अर्थ दोनों शब्दों के संयुक्त रूप में आने पर ही प्रकट होता है, अलग-अलग आने पर नहीं। उदाहरण के लिए —

   क) जब तक हाथपाँव नहीं मारोगे, मकान नहीं मिलेगा।
   ख) गुण्डों ने उसके हाथपाँव तोड़ दिये।
   ग) पुलिस को देखते ही जुआरियों के हाथपाँव फूल गये।

   क) पहले वाक्य में "हाथपाँव" संयुक्त शब्द है। हाथ और पाँव में कोई आतंरिक संबंध नहीं है। इस प्रकार के योग से जो विशेष अर्थ प्रकट हो रहा है वह है "प्रयास करना"।
   ख) दूसरे वाक्य के समस्त शब्द में व्याकरणिक संबंध है (हाथ और पाँव), जो "और" योजक से जुड़े हुए हैं।
   ग) तीसरे वाक्य में "हाथपाँव फूलना" में क्रिया के प्रभाव के कारण मुहावरेदार प्रयोग हो गया है।

पहले वाक्य में "मारोगे" क्रिया का विकल्प हो सकता "चलाओगे", "उठाओगे", किंतु हाथपाँव के द्वारा दिये जानेवाले अर्थ में तब तक अंतर नहीं आएगा जब तक वे अलग-अलग नहीं किये जाते। दूसरे वाक्य में हाथपाँव में से किसी एक को छोड़ा जा सकता है जैसे — "हाथ तोड़ दिये", "पाँव तोड़ दिये"। यह संदर्भ में भी ठीक बैठेगा। तीसरे वाक्य में चमत्कार "फूलना" क्रिया का है जो हाथपाँव के संदर्भ में "घबराहट" का अर्थ प्रकट करती है।

4) *दोनों शब्द जुड़कर एक इकाई के रूप में काम करते हैं* और एक स्वतंत्र व्युत्पन्न शब्द का कार्य करते हैं, जिसका अर्थ दोनों के अलग-अलग अर्थों से सर्वथा भिन्न होता है।

   क) जब तक पाँव नहीं मारोगे, मकान नहीं मिलेगा।
   ख) जब तक हाथ नहीं मारोगे, मकान नहीं मिलेगा।
   ग) जब तक हाथपाँव नहीं मारोगे, मकान नहीं मिलेगा।

उपर्युक्त तीनों वाक्यों में "ग" ही स्वाभाविक अर्थ दे रहा है। "ख" वाक्य का अर्थ ही कुछ और है

(झपटना, लूटना, ठगना) और "क" का अर्थ बिल्कुल अस्वाभाविक है। "ग" वाक्य में हाथ और पाँव जुड़कर एक इकाई के रूप में कार्य कर रहे हैं और इसे संयुक्त शब्द कहते हैं।

इस प्रकार *जो शब्द दो मूल शब्दों अथवा व्युत्पन्न शब्दों के योग से बने हों और किसी आंतरिक संबंध के बिना एक विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हों, संयुक्त शब्द कहे जाते हैं।* ये संयुक्त शब्द अपने विशेष अर्थ के साथ द्विशाब्दिक इकाई के रूप में स्वीकृत एवं प्रचलित होते हैं —

क) बोलचाल की भाषा का प्रयोग कीजिए।

ख) आज बाज़ार में काफ़ी हलचल है।

ग) दोनों मित्रों में कुछ कहासुनी हो गयी है।

घ) मैं जा रहा हूँ, कहासुना माफ़ करना।

उपर्युक्त वाक्यों में बोलचाल, हलचल, कहासुनी, कहासुना संयुक्त शब्द हैं। इनके अर्थ क्रमशः "[illegible] व्यवहार की", "सरगर्मी", "गलत व्यवहार" है।

8.3 संयुक्त शब्दों के प्रमुख अभिलक्षण

सामान्य रूप से संयुक्त शब्द एक व्यापक अर्थ देते हैं, जिनके अंतर्गत कई प्रकार [illegible] समाहित किया जा सकता है। जहाँ दो शब्द संयुक्त होकर द्विशाब्दिक इकाई के [illegible] अर्थ की दृष्टि से तीन स्थितियाँ होती हैं —

क) पहला शब्द मुख्य होगा, दूसरा गौण,

ख) दूसरा शब्द मुख्य होगा, पहला गौण,

ग) दोनों शब्दों का संयोग ही मुख्य होगा।

क) कुछ संयुक्त शब्दों में **पहला शब्द मुख्य होता है, दूसरा गौण**। उनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं —

1) राकेश पाठ को सुंदर बनाने की कोशिश करेगा।

2) नई शिक्षा नीति के अंतर्गत "इग्नोऊ" की शुरुआत हुई।

इन वाक्यों में "कोशिश करना" और "शुरुआत होना" संयुक्त शब्द हैं। वाक्य में जिस स्थान पर ये आये हैं यहाँ से इनमें से किसी को हटाने या बदलने से अर्थ ग्रहण में बाधा पड़ेगी। बिना "करेगा" के "कोशिश" कोई अर्थ नहीं देगा और बिना "कोशिश" के "करेगा" कोई अर्थ नहीं देगा। मतलब यह कि "कोशिश" क्रियापद का अर्थ "करना" के साथ ही स्पष्ट होगा। इसी प्रकार "करना" क्रिया तब तक अपना कार्य नहीं करेगी जब तक उसके पूर्व "कोशिश" शब्द नहीं होगा।

इन संयुक्त शब्दों में प्रथम शब्द अर्थप्रधान है दूसरा संरचना प्रधान। दोनों शब्दों के बीच में कोई योजकीय, कारकीय या व्याख्यात्मक संबंध सूचित करने वाले तत्व नहीं हैं, इस प्रकार ये दोनों संयुक्त शब्द हैं।

ख) *दूसरा शब्द मुख्य होगा, पहला गौण* — कुछ ऐसे संयुक्त शब्द मिलते हैं जिनका दूसरा शब्द ही अर्थ केन्द्र होता है। पहला शब्द दूसरे शब्द की स्थिति, दशा, विशेषता आदि का संकेत करने तथा उसे स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त होता है। ऐसे संयुक्त शब्दों को निम्नलिखित उदाहरणों में देखा जा सकता है —

1) नीलाकाश अनंतता का प्रतीक है।

2) पहले चौराहे के बाद तीसरा मकान मोहन का है।

नीलाकाश का "आकाश" और चौराहे का "राह" अर्थकेन्द्र का कार्य कर रहे हैं, "नीला" तो आकाश के रंग का और चौ (चार) "राह" के समूह का बोध करा रहे हैं।

इन दोनों शब्दों में आये दोनों शब्दों में आंतरिक संबंध है —

1) नीलाकाश — नीले रंग का आकाश

2) चौराहा — चार राहों का समूह/चार राहें जहाँ आकर मिलती हैं।

यह आंतरिक संबंध व्याख्यात्मक है। कहीं-कहीं यह आंतरिक संबंध कारकीय भी हो सकता है, जैसे —

1) कठफोड़वा = काठ को फोड़नेवाला

2) सर्पमणि = साँप में पाई जाने वाली मणि

इस प्रकार के शब्दों में भी दो भिन्न-भिन्न शब्द मिलकर एक इकाई बनाते हैं किंतु इनमें आंतरिक संबंध मिलता है (भले ही वह बाहर न दिखाई देता हो) अतः इन्हें संयुक्त शब्द न कहकर ***समस्त शब्द*** या ***समस्त*** पद कहा जाता है।

ग) कुछ ऐसे संयुक्त शब्द मिलते हैं, जिनका अर्थकेन्द्र न पहले शब्द में होता है न दूसरे शब्द में, बल्कि दोनों के जुड़ने में ही होता है। ऐसे शब्दों के दोनों शब्द महत्वपूर्ण होते हैं, जैसे —

1) सीताराम की जय।

2) चायकॉफ़ी से पेट नहीं भरेगा, कुछ खानावाना हो जाए।

3) ले देकर बेचारे के पास एक कमीज़ है।

4) नौकरी के चक्कर में मैं कहाँ-कहाँ नहीं गया।

5) राशन की दुकान पर मारामारी मची हुई है।

6) लिखी-लिखायी रिपोर्ट खो गयी है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। इस प्रकार के संयुक्त शब्दों की संख्या हिंदी में काफ़ी है। इनको कई वर्गों में रखा जाता है। ऊपर दिए गए उदाहरणों में 'सीताराम', 'चायकॉफ़ी', 'ले दे' में दो अलग-अलग सार्थक शब्दों का संयोग हो रहा है, 'कहाँ-कहाँ' में एक ही सार्थक शब्द फिर से आ रहा है। 'मारा-मारी', 'लिखी-लिखायी' में एक सार्थक शब्द है और दूसरा उसी से व्युत्पन्न सार्थक शब्द। खानावाना में एक सार्थक शब्द और उसी की प्रतिध्वनि पर गढ़ा हुआ दूसरा शब्द है, जो सार्थक नहीं है।

इन विभिन्न संयुक्त शब्दों को दो वर्गों में रख सकते हैं :

i) जिन संयुक्त शब्दो में आंतरिक संबंध है, जैसे —

सीता राम = सीता और राम

चाय कॉफ़ी = चाय अथवा कॉफ़ी

लिखी लिखायी = लिखी और लिखायी गयी

ii) जिनमें आंतरिक संबंध नहीं है, जैसे —

ले दे = जिसका अर्थ है — कुलमिलाकर

कहाँ-कहाँ = जिसका अर्थ है — सब स्थानों पर/दूर-दूर तक

मारा-मारी = जिसका अर्थ है — अव्यवस्था

खाना-वाना = जिसका अर्थ है — खाने के लिए कोई भी चीज़

जिन संयुक्त शब्दों में आंतरिक संबंध मिल रहा है, उन्हें तो हम समस्त शब्द की कोटि में रख सकते हैं, किंतु जिनमें आंतरिक संबंध नहीं मिलता, उन्हें हम अलग-अलग वर्गों में रखते हैं। जैसे —

ले देकर — संयुक्त शब्द कहा जा सकता है।

कहाँ-कहाँ — द्वित्व या पुनरुक्त शब्द है जिसे अनुप्रासात्मक शब्द भी कहा जा सकता है।

मारा-मारी — एक प्रकार का अपूर्ण द्वित्व शब्द है और व्यंजनों की दृष्टि से अनुप्रासात्मक शब्द है।

खानावाना — द्वित्व की कोटि का है और दोनों स्वरों तथा 'न' व्यंजन की आवृति के कारण अनुप्रासात्मक भी है।

इस प्रकार विभिन्न प्रकार के शब्द संयोगों से बननेवाली द्विशाब्दिक इकाइयों को अर्थ, संरचना एवं उच्चारण की दृष्टि से तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है —

क) संयुक्त शब्द

ख) समस्त शब्द/पद

ग) अनुप्रासात्मक शब्द

इस विवेचन के उपरांत यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि द्विशाब्दिक इकाइयाँ वस्तुतः दो प्रकार की होती हैं — *योजक लोपी* और *योजक हीन*।

योजक लोपी इकाइयाँ वे हैं, जिनके मध्य में आंतरिक संबंध बताने वाले व्याकरणिक तत्व लुप्त रहकर कार्य करते रहते हैं। ऐसी *योजक लोपी द्विशाब्दिक इकाइयों को व्याकरण की दृष्टि से समस्त शब्द या समास कहते हैं।*

योजक हीन द्विशाब्दिक इकाइयाँ वे हैं, जिनके दोनों शब्दों के मध्य में आन्तरिक संबंध सूचित करने वाला कोई भी व्याकरणिक तत्व नहीं होता। ऐसी इकाइयों को हम दो उपवर्गों में बाँट सकते हैं — संयुक्त शब्द एवं अनुप्रासात्मक शब्द।

इसे आरेख द्वारा इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है —

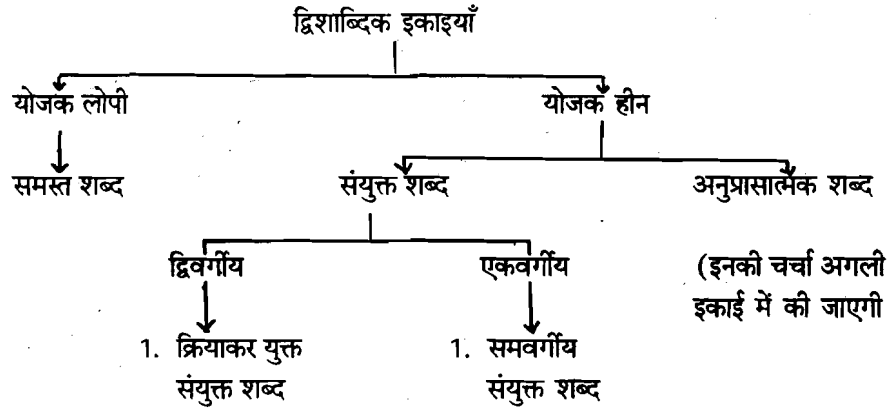

इस प्रकार संयुक्त शब्द के जो प्रमुख अभिलक्षण हमारे सामने उभरकर आते हैं, उन्हें इस क्रम में रख सकते हैं —

क) यह एक द्विशाब्दिक इकाई है।

ख) इसके दोनों शब्दों के मध्य कोई भी योजक नहीं होता।

ग) इसका अर्थ विशेष प्रकार का होता है।

घ) यह द्विवर्गीय भी होता है (प्रयास करना) और समवर्गीय भी (कह सुन)।

ङ) यह समस्त शब्द और अनुप्रासात्मक शब्दों से भिन्न शब्द वर्ग है।

च) यह मुहावरा न होकर एक शब्द होता है।

छ) अर्थ की दृष्टि से यह दो शब्दों के संयोग पर केन्द्रित होता है।

8.4 संयुक्त शब्दों की आर्थी संरचना

द्विशाब्दिक इकाइयों की आर्थी संरचना दो प्रकार की होती है —

क) अन्तःकेन्द्रिक संरचना

ख) बाह्यकेन्द्रिक संरचना

क) *अन्तःकेन्द्रिक संरचना से तात्पर्य है — शब्दों से ही प्राप्त होने वाला प्रत्यक्ष अर्थ।* जिन द्विशाब्दिक इकाइयों का अर्थ उनके शब्दों के अर्थ से ही जुड़ा होता है, उन्हें अंतःकेन्द्रिक संरचना वाली इकाई कहा जाता है। बहुत से समस्त शब्द और संयुक्त शब्द अन्तःकेन्द्रिक संरचना वाले शब्द होते हैं, जैसे —

1) मेरे पास कोई घोड़ा-गाड़ी नहीं है कि दिनभर चक्कर लगाता फिरूँ।
2) बच्चों ने सारा सामान उलट-पलट कर रख दिया।
3) उन्होंने लक्ष्मी-गणेश की पूजा की और काम शुरू हो गया।

इन वाक्यों में आये जितने भी रेखांकित शब्द हैं, अर्थ की दृष्टि से सभी अन्तःकेन्द्रिक हैं। घोड़ा-गाड़ी, दिनभर समस्त शब्द हैं, और उलट-पलट, पूजा करना, शुरू होना संयुक्त शब्द हैं।

अन्तःकेन्द्रिक संरचना के अन्तर्गत दोनों शब्दों के अर्थों में घनात्मक योग होता है। घोड़ागाड़ी में "घोड़े द्वारा खींची जानेवाली गाड़ी" का अर्थ है जिसमें घोड़ा और गाड़ी दोनों शब्दों के अर्थ आ जुड़े हैं।

ख) *बाह्यकेन्द्रिक संरचना के अन्तर्गत दोनों शब्दों के अर्थों में गुणात्मक संयोग होता है।* जुड़े हुए दोनों शब्द अपने अलग-अलग अर्थों से हटकर एक नये अर्थ का बोध कराते हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को देखें —

1) आतंकवाद से निपटने के लिए लौहपुरुष जैसा नेता चाहिए।
2) शहर में काफ़ी हलचल है।
3) आप लाल-पीले मत होइए, मैं यहाँ से जा रहा हूँ।

रेखांकित शब्दों के अर्थ उनमें आये अलग-अलग शब्दों के अर्थ से न जुड़े होकर उनके संयोग से स्पष्ट हो रहे हैं। उपर्युक्त कथन को हम इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं —

1) लौहपुरुष = लौह × पुरुष
   ↓
   लोहे से बना × व्यक्ति → संयोग → दृढ़निश्चय वाला अर्थात् सरदार पटेल

2) हलचल = हल × चल
   ↓
   सुलझाव या कृषि यंत्र × चलने का भाव → संयोग → सरगर्मी, चहलपहल

3) लालपीला = लाल × पीला
   ↓
   एक रंग × दूसरा रंग → संयोग → क्रोध करना या क्रोधित होना

कुछ बाह्यकेन्द्रिक संरचनाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक रूप में स्थिर हो जाती हैं, जैसे —

1) ऊँच-नीच — यदि कुछ ऊँच-नीच हो जाए तो बुरा न मानना।
2) दे ले — दे लेकर मामले को निपटा लें, अन्यथा मुकदमा खड़ा हो जाएगा।
3) त्रिलोचन — त्रिलोचन की कृपा से सब कार्य संपन्न हो जाएँगे।
4) राष्ट्रपिता — दो अक्टूबर को राष्ट्रपिता की जयंती मनायी जाती है।
5) छत्रपति — छत्रपति शिवाजी ने औरंगज़ेब के छक्के छुड़ा दिये थे।

इन उदाहरणों में ऊँच-नीच, दे ले संयुक्त शब्द हैं, शेष तीनों समस्त शब्द हैं। कुछ ऐसे भी उदाहरण हैं जो प्रयोग के संदर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न रूपों में आते हैं, जैसा कि हाथ-पाँव (8.2 का (3)) की चर्चा के समय बताया गया है।

8.5 संयुक्त शब्दों के प्रकार

अब तक के विवेचन से आप यह समझ गये होंगे कि हिंदी भाषा में अनेक प्रकार की द्विशाब्दिक इकाइयाँ हैं, जिनमें संयुक्त शब्द, समस्त शब्द और अनुप्रासात्मक शब्द मुख्य हैं। इन तीनों की व्याकरणिक संरचना तथा आर्थी संरचना में अंतर होता है और इस अंतर को जाने बिना हमारा हिंदी-भाषा-ज्ञान अधूरा रहता है।

संयुक्त शब्द ऐसी द्विशाब्दिक इकाई है, जिसके दोनों शब्द सार्थक होते हैं, भिन्न होते हैं तथा जिनके मध्य में कोई आंतरिक सम्बन्ध नहीं होता। अर्थात् ये योजकहीन रूप से जुड़े होते हैं। संयुक्त शब्दों की आर्थी संरचना अंतःकेन्द्रिक और बाह्यकेन्द्रिक दोनों प्रकार की होती है। संरचनात्मक दृष्टि से संयुक्त शब्दों को दो वर्गों मे बाँटा जाता है —

क) द्विवर्गीय अर्थात् क्रियाकरयुक्त संयुक्त शब्द

ख) एकवर्गीय अर्थात् समवर्गीय संयुक्त शब्द

8.5.1 क्रियाकरयुक्त संयुक्त शब्द

क्रियाकरयुक्त संयुक्त शब्दों में प्रथम शब्द क्रियेतर होता है, जैसे —

1) स्वीकार, अदा, भेंट, क्षमा जैसे भाववाचक संज्ञा शब्द,

2) लम्बा, छोटा, मोटा, पतला, लाल, पीला, खट्टा, मीठा जैसे विशेषण शब्द,

3) नहीं, ना, हाँ, जैसे क्रियाविशेषण शब्द। इनके आगे द्वितीय शब्द के रूप में "करना", "होना" क्रियाओं के विविध रूपों का प्रयोग होता है। चूँकि करना, होना क्रियाएँ क्रिया से इतर शब्दों को क्रियापद के रूप में व्युत्पन्न कर लेती हैं, अतः इन्हें क्रियाकर (अर्थात् क्रिया बनाने वाला) कहा जाता है। इस प्रकार दो भिन्न-भिन्न वर्गों (संज्ञा और क्रिया) के शब्दों की जो एक इकाई बनती है उसे द्विवर्गीय या क्रियाकर युक्त संयुक्त शब्द कहा जाता है। इनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं —

1) पेड़ बड़ा हो गया।

2) मिस्त्री ने दीवार लम्बी कर दी।

3) बीमारी के कारण मोहन दुबला हो गया।

4) बीमारी ने मोहन को दुबला कर दिया।

5) मेरी बात को भले ही ना कर दो, इनकी बात हाँ होनी चाहिए।

"बड़ा होना", "लम्बा करना", "दुबला होना", "दुबला करना", "ना करना", "हाँ होना" — ये संयुक्त शब्द हैं, क्योंकि व्यापार की सूचना पहले आये शब्दों से मिल रही है और इस सूचना को निकालने का काम दूसरे शब्द (करना और होना) कर रहे हैं।

प्रथम शब्द के रूप में आने वाले शब्दों की सूची काफ़ी लम्बी है — प्रेम, घृणा, नफ़रत, लगाव, मोह, मुश्किल, परेशान, आसान, सरल, कठिन, ऊपर, नीचे, उल्टा, सीधा, धीमा, तेज़ आदि-आदि। द्वितीय शब्द के रूप में "कर" और "हो" का ही प्रयोग होता है। इन क्रियाकर युक्त संयुक्त शब्दों का प्रयोग संज्ञापद, कृदंतपद और क्रियापद के रूप में हो सकता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को देखिए —

1) कोशिश करनेवाला आदमी अवश्य सफल होता है। (विशेषणपद, क्रियापद)

2) कोशिश करना हर आदमी का फ़र्ज़ है। (संज्ञापद)

3) वह काफ़ी कोशिश करके पास हुआ है। (कृदंत क्रि. विशेषण)

4) सीता ने प्रथम श्रेणी लाने की कोशिश की। (क्रियापद)

वाक्य में जब क्रियाकरयुक्त संयुक्त शब्द आता है तो प्रत्यय दूसरे शब्द के अन्त में जुड़ते हैं। "होना" क्रियाकरयुक्त संयुक्त शब्दों का जब क्रियापद के रूप में प्रयोग होता है तो अकर्मक क्रियापद बनता है और "करना" क्रियाकरयुक्त संयुक्त शब्दों का क्रियापद के रूप में प्रयोग होता है तो

सकर्मक क्रियापद बनता है। जैसे, कुछ उदाहरण देखिए —

क) माँ लड़के से परेशान हो गयी है।
लड़के ने माँ को परेशान कर दिया है।

ख) आपके कारण रास्ता आसान हो गया है।
आपने रास्ता आसान कर दिया है।

ग) गाड़ी की गति धीमी हो गयी है।
ड्राइवर ने गाड़ी की गति धीमी कर दी है।

क्रियाकरयुक्त संयुक्त शब्द वाक्य में एकपद अथवा पदबन्ध के रूप में आ सकते हैं —

1) सिर तब ऊपर होगा, जब चरित्र ऊँचा होगा। (एकपदीय)

2) सिर को सबसे ऊँचा करने के लिए, सबसे अधिक त्याग करना होगा। (पदबंधीय)

8.5.2 समवर्गीय संयुक्त शब्द

संयुक्त शब्दों का एक वर्ग ऐसा है, जिसमें एक ही शब्दवर्ग के दो भिन्न-भिन्न शब्द जुड़कर एक संयुक्त इकाई बनाते हैं। इन्हें समवर्गीय संयुक्त शब्द कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए —

1) दिल्ली में किसी को सुखचैन नहीं है, सबको हाय तौबा लगी रहती है।

2) भाग दौड़ की यह ज़िंदगी मुझे अच्छी नहीं लगती।

3) इधर उधर करने वालों को कोई पसंद नहीं करता।

4) चला चली की बेला तक वे चलते फिरते नज़र आये।

5) इस रेलमपेल के युग में आगा पीछा कौन देखता है!

इन रेखांकित शब्दों में चला चली को छोड़कर शेष सभी शब्द समवर्गीय संयुक्त शब्द हैं। "सुख चैन" और "अच्छी भली" समस्त शब्द हैं, क्योंकि इन दोनों के मध्य "और" समुच्चयबोधक लगा हुआ है। "चला चली" अनुप्रासात्मक शब्द है, जहाँ व्यंजनों की पुनरुक्ति हो रही है। शेष शब्दों के दोनों घटकों के बीच में किसी भी प्रकार का आंतरिक संबंध नहीं है, अतः ये योजकहीन संयुक्त शब्द हैं। इन संयुक्त शब्दों में आये सभी जोड़े अपने ही वर्ग के हैं। उदाहरण के लिए कुछ जोड़े देखिए —

1) हाय और तौबा — विस्मयादिबोधक शब्द

2) भाग और दौड़ — धातु रूप

3) चलते और फिरते — कृदंत रूप

4) इधर और उधर — क्रियाविशेषण रूप

वर्गीय समानता के साथ-साथ इन संयुक्त शब्दों के ध्वन्यात्मक संरचना की दृष्टि से दो वर्ग बनते हैं —

क) एक स्वरांती = अर्थात् जिनके अन्त के स्वर समान हों, जैसे — पढ़-लिख, आगा-पीछा, चलते-फिरते, भाग-दौड़, इधर-उधर आदि।

ख) भिन्न स्वरांती = अर्थात जिनके अन्त के स्वर भिन्न हों, जैसे — लीपा-पोती, हाय-तौबा, कहा-सुनी, रो-पीट, रेलम-पेल आदि।

वर्गीय दृष्टि से ऐसे संयुक्त शब्द प्रायः सभी शब्द वर्गों से बनते हैं। सर्वनामों के समवर्गीय संयुक्त शब्द नहीं प्राप्त होते, शेष के उदाहरण इस प्रकार हैं —

क) संज्ञा + संज्ञा — तीतर-बटेर, दाना-पानी

ख) विशेषण + विशेषण — लाल-पीला, काला-सफ़ेद, ऊँच-नीच

ग) क्रियाविशेषण + क्रियाविशेषण — आगा-पीछा, इधर-उधर, आज-कल, दिन-रात

घ) कृदंत + कृदंत — चाल-ढाल, चलते-फिरते, लीपा-पोती, उठा-पटक

ङ) धातु + धातु — जोड़-तोड़, रो-पीट, समझ-बूझ, खा-पी, उलट-पलट

च) अव्यय + अव्यय — हाय-तौबा आदि।

आर्थी संरचना की दृष्टि से समवर्गीय संयुक्त शब्द प्रायः बाह्यकेन्द्रिक होते हैं। कभी कभार किसी प्रसंग विशेष में यह संभव है कि कोई समवर्गीय संयुक्त शब्द अन्तःकेन्द्रिक भी लगे, पर पूरी तरह से इनके अर्थ कभी अन्तःकेन्द्रिक नहीं होते। उदाहरण के लिए निम्नलिखित संयुक्त शब्दों को देखें और उनके अर्थ पर ध्यान दें —

1) आगा पीछा सोचे बिना कोई काम सिर पर लेना ठीक नहीं है।
2) तुम लोग यहाँ बक झक कर रहे हो, वहाँ कहा सुनी हो रही है।
3) दोनों लड़कियों में बोलचाल नहीं है, ताक झाँक क्या करेंगी।
4) रो पीटकर पढ़ाया लिखाया, अब तीतर बटेर कर रहा है।

इन सभी संयुक्त शब्दों के अर्थ बाह्यकेन्द्रिक हैं बक झक, (तर्क वितर्क) अंतःकेन्द्रिक सा लगता ज़रूर है, परंतु इसकी संरचना बाह्यकेन्द्रिक ही है।

जैसाकि ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है, हिंदी में समवर्गीय संयुक्त शब्दों की संख्या काफ़ी है।

अभ्यास 1

क) निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त संयुक्त शब्दों को रेखांकित कीजिए।

i) दोनों मित्रों में खींच तान शुरू हो गयी है।
ii) अब इस मामले में तुमसे कौन बकझक करे।
iii) हर कहीं घुसपैठ है।
iv) बैठे-बैठे ऊब गये होगे, जाओ ज़रा घूमफिर आओ।
v) उन्होंने घरबार त्याग दिया।
vi) ये तो रोज़-रोज़ का काम है, भूलचूक तो होती ही रहेगी।
vii) घिसे-पिटे नारों से देश आगे नहीं बढ़ेगा।
viii) इस बगीचे में बहुत पेड़-पौधे हैं।
ix) रोज़ की दौड़धूप ने उन्हें थका दिया था।
x) उसकी चालढाल से कोई खुश नहीं है।

ख) निम्नलिखित कथनों में जो सही हैं, उनके सामने "सही" और जो गलत हैं, उनके सामने "गलत" लिखिए।

i) संयुक्त शब्द और समस्त शब्द की संकल्पनाएँ भिन्न हैं।
ii) जिन द्विशाब्दिक इकाइयों में आंतरिक संबंध होता है वे संयुक्त शब्द कहलाते हैं।
iii) संयुक्त शब्द की आर्थिक संरचना हमेशा बाह्यकेन्द्रिक होती है।
iv) संयुक्त शब्द के स्थान पर उसके किसी एक शब्द का प्रयोग करने पर भी अर्थ वैसा का वैसा ही रहता है।
v) क्रियाकरयुक्त संयुक्त शब्दों के दोनों शब्द क्रिया वर्ग के नहीं होते।

8.6 समस्त पद की संकल्पना

जिन द्विशाब्दिक इकाइयों के शब्दों में आन्तरिक संबंध मिलता है उन्हें समस्त शब्द या पद कहा जाता है। इन द्विशाब्दिक शब्दों में आंतरिक सम्बन्ध को सूचित करने वाले व्याकरणिक तत्व लुप्त रहकर अर्थ का बोध कराते हैं अतः ऐसी इकाइयों को योजक लोपी द्विशाब्दिक इकाई भी कहा गया है।

पहले ही यह स्पष्ट किया जा चुका है कि *समस्त शब्द संरचना और अर्थ की दृष्टि से संयुक्त शब्द और अनुप्रासात्मक शब्दों से भिन्न होते हैं* (देखिए 8.3 तथा द्विशाब्दिक इकाइयों के वर्गीकरण का आरेख) अर्थ की दृष्टि से भी समस्त शब्द वैविध्यपूर्ण होते हैं। इनका पहला शब्द भी अर्थकेन्द्र हो सकता है, और दूसरा शब्द भी। कुछ ऐसे समस्त शब्द भी हैं, जिनके दोनों पदों का संयोग ही अर्थकेन्द्र होता है —

1) पहला शब्द अर्थकेन्द्र है, दूसरा गौण — दिनभर, तुलसीकृत, पेटभर
2) दूसरा शब्द अर्थकेन्द्र है, पहला गौण — नीलकमल, यथाशक्ति, ग्रामदेवता
3) दोनों का संयोग ही अर्थकेन्द्र है — सीताराम, मनचला, ग्रामदेवता

समस्त शब्द आर्थी संरचना की दृष्टि से अन्तःकेन्द्रिक तथा बाह्यकेन्द्रिक — दोनों प्रकार के होते हैं। अन्तःकेन्द्रिक संरचना वाले समस्त शब्दों का प्रयोग बहुत अधिक होता है। आधुनिक हिंदी में तो ऐसे शब्द भी सुनाई पड़ते हैं। जैसे —

ताजमहल, लालकिला, लोकसभा, विधानसभा, संसद भवन, वित्तमंत्री, बस अड्डा, रेलवे स्टेशन, शोध सहायक, उपमंत्री, राज्यमंत्री, कैबिनेट मंत्री आदि।

बाह्यकेन्द्रिक संरचना वाले समस्त शब्द सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक दृष्टि से स्थापित होते हैं। चूँकि इन्हें स्थापित होने में समय लगता है, अतः इनका प्रचलन कम हो पाता है। उदाहरण के लिए यदि कोई कहे —

"आपकी फ़ाइल प्रधानमंत्री के पास गयी है" तो अंतःकेन्द्रिक अर्थ है, किंतु यदि वह इसी बात को इस प्रकार कहे कि —

"आपकी फ़ाइल साउथ ब्लॉक गयी है" — तो अर्थ बाह्यकेन्द्रिक हो जाएगा, क्योंकि सामान्य व्यक्ति "साउथ ब्लॉक" से निकलने वाले अर्थ को जल्दी नहीं पकड़ पाएगा।

हिंदी के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में समस्त शब्दों की एक पूरी शृंखला उभरकर हमारे सामने आ रही है। इन्हें जाने और समझे बिना हिंदी की वर्तमान शब्दावली पर हमारा अधिकार नहीं हो पाएगा। कुछ उदाहरण देखिए :

लोकनायक	हरित क्रांति
लौह पुरुष	शीत युद्ध

समस्त शब्दों का भाषा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। समास शैली पाण्डित्यपूर्ण शैली मानी जाती है। जिस व्यक्ति का भाषा पर पूर्ण अधिकार होता है, वही इस प्रकार की शैली का प्रयोग कर पाता है।

8.7 समस्त पदों का वर्गीकरण

व्याकरण की दृष्टि से समस्त शब्दों/पदों को समास कहा जाता है और अनेक वर्गों में बाँट कर इनकी प्रकृति को स्पष्ट किया जाता है। भाषाओं के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में नई संकल्पनाओं को समझने के लिए भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण आवश्यक हो गया है। इसीलिए समासों को भी नई प्रणाली से वर्गीकृत करने और इनकी प्रकृति को समझने की कोशिश की जाती है।

यहाँ हम दोनों दृष्टियों से समस्त पदों को वर्गीकृत एवं विश्लेषित करके उसे स्पष्ट करेंगे।

8.7.1 परंपरागत वर्गीकरण

हिंदी भाषा का उद्भव एवं विकास संस्कृत भाषा से हुआ, इसी कारण हिंदी के समस्त शब्दों को भी संस्कृत व्याकरण के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।

हिंदी के व्याकरण शास्त्रियों ने हिंदी की प्रकृति के अनुसार उसमें कुछ सुधार करके जो वर्गीकरण प्रस्तुत किया है, वह इस प्रकार है —

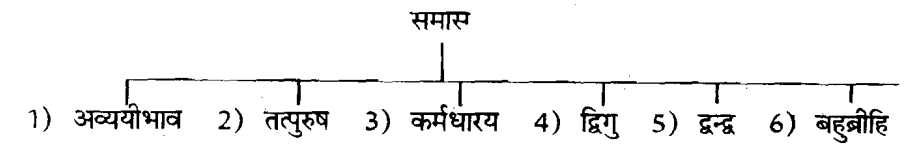

इनका संक्षिप्त परिचय हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं :

1) *अव्ययीभाव समस्त पद* — जिस समस्त पद का पहला अथवा दूसरा शब्द अव्यय होता है तथा साथ आनेवाला अन्य शब्द संज्ञा अथवा विशेषण होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। भरपेट, प्रतिदिन, पेटभर, दिनभर, यथाशक्ति, शक्तिभर — अव्ययीभाव समास के उदाहरण हैं। निम्नलिखित वाक्यों में इनके प्रयोग पर ध्यान दीजिए —

   1) मैं भरसक सुबह सात बजे आने की कोशिश करूँगा।

   2) नौकरी की तलाश में लड़का दिनभर घूमता रहा।

   दोनों वाक्यों में रेखांकित शब्द अव्ययीभाव क्रियाविशेषण अव्यय का काम कर रहे हैं। इनका विग्रह तथा अर्थ विश्लेषण व्याख्या से ही संभव है।

2) *तत्पुरुष समस्त पद* — जिस समस्त पद का पहला शब्द संज्ञा होता है और दूसरा पद संज्ञा, विशेषण या कृदंत होता है उसे तत्पुरुष समस्त पद कहते हैं। तत्पुरुष समस्त पद के दोनों शब्दों में कारकीय संबंध होता है, जैसे —

1)	सर्वभक्षी	=	सबको खानेवाला	(कर्म तत्पुरुष)
2)	मदान्ध	=	मद से अन्धा	(करण तत्पुरुष)
3)	रसोईघर	=	रसोई के लिए घर	(संप्रदान तत्पुरुष)
4)	कामचोर	=	काम से जी चुराने वाला	(अपादान तत्पुरुष)
5)	गृहस्वामी	=	गृह का स्वामी	(संबंध तत्पुरुष)
6)	गृहप्रवेश	=	गृह में प्रवेश	(अधिकरण तत्पुरुष)

   तत्पुरुष समस्त पदों का प्रयोग वाक्य में किसी भी नामपद के लिए किया जा सकता है।

3) *कर्मधारय समस्त पद* — संज्ञा और विशेषण शब्दों के योग से जो समस्त पद बनता है वह कर्मधारय समस्तपद कहलाता है। बन्धुवर, ऋषिवर, मंत्रीवर, घनश्याम आदि समस्त शब्द "संज्ञा + विशेषण" से बने हैं। श्वेतपत्र, नील गाय, परमात्मा, चन्द्रमुखी आदि समस्त पद विशेषण + संज्ञा से बने हैं। ऐसे समस्त शब्दों का अर्थ तुलनात्मक तथा विवरणात्मक रूप में ही प्रकट होता है।

   कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं —

1)	मृगलोचन	=	मृग के समान लोचन	—	तुलनात्मक व्याख्या
2)	घनश्याम	=	घन की तरह श्याम	—	तुलनात्मक व्याख्या
3)	हेमलता	=	हेम के रंग की लता	—	विवरणात्मक व्याख्या
4)	लालपरी	=	लाल वर्ण वाली परी	—	विवरणात्मक व्याख्या

   यहाँ ध्यान देने की बात है कि कर्मधारय समस्तपद यदि किसी व्यक्ति विशेष के अर्थ में रूढ़ हो जाता है तो बहुब्रीहि की स्थिति पैदा हो जाती है।

4) *द्विगु समस्त पद* — सख्यावाचक विशेषण और संज्ञा शब्दों के योग से जो समस्त पद बनता है, उसे द्विगु समस्त पद कहते हैं, जैसे — अठन्नी, चवन्नी, दोपहर, चौराहा, त्रिभुज, पंचशील आदि। ऐसे समस्त शब्दों का अर्थ भी व्याख्या पर आधारित होता है। पहले शब्द के रूप में आने वाले संख्यावाचक विशेषण समूह का बोध कराते हैं। द्विगु समस्त शब्द भी किसी व्यक्ति के अर्थ में रूढ़ हो जाने पर बहुब्रीहि समस्त पद कहे जाते हैं।

5) *द्वन्द्व समास या समस्त पद* — संज्ञा + संज्ञा, विशेषण + विशेषण, क्रिया + क्रिया अर्थात् एक ही शब्द वर्ग के भिन्न-भिन्न शब्द जब समुच्चय बोधक अव्ययों के बिना समस्त पद बनाते हैं, तब द्वन्द्व समस्त शब्द की रचना होती है। सीताराम, रामरहीम, छोटे-बड़े, हरिहर, भले-बुरे,

दुबले-पतले, खा-पी, पढ़-लिख, खेल-कूद आदि इसके उदाहरण हैं। द्वन्द्व समास दो प्रकार के होते हैं — i) समाहार और ii) विकल्प। इनके उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं —

i) *राम और कृष्ण* इस देश के महापुरुषों के आदर्श हैं।

राम कृष्ण = समाहार द्वन्द्व

ii) *चाय अथवा कॉफ़ी* में से क्या लीजिएगा?

चाय कॉफ़ी = विकल्प द्वन्द्व

द्वन्द्व समस्त शब्दों का अर्थ योजकों की प्रकृति पर निर्भर करता है। सही योजक की जानकारी होते ही इनका अर्थ स्पष्ट हो जाता है।

6) *बहुब्रीहि समस्त शब्द* — कर्मधारय अथवा द्विगु समस्त शब्द जब किसी व्यक्ति या वस्तु के लिए विशेषण के रूप में रूढ़ हो जाते हैं तो बहुब्रीहि समस्त शब्द कहलाते हैं। त्रिपुरारि, त्रिलोचन, आदि शंकर भगवान के विशेषण हैं तथा उन्हीं का बोध कराने के लिए रूढ़ हैं इसलिए ये बहुब्रीहि समस्त शब्द हैं। हिंदी के अपने बहुब्रीहि शब्द बहुत कम हैं और वे संदर्भ में ही अपना अर्थ देते हैं जैसे —

1)	नीलकंठ	—	नीला है कंठ जिसका	(शिव)
2)	दशानन	—	दस हैं सिर जिसके	(रावण)
3)	पीतांबर	—	पीला है वस्त्र जिसका	(कृष्ण)

8.7.2 आंतरिक संबंध की दृष्टि से वर्गीकरण

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से यदि हम समस्त पदों की संरचना का विश्लेषण करें तो पहली कसौटी रूपात्मक संरचना की होगी। समस्त पदों की संरचना में किस-किस वर्ग के रूपों का संयोग होता है और व्युत्पन्न समस्त पद किस शब्द वर्ग के होते हैं, इस बात को जानना और समझना आवश्यक हो जाता है।

समवर्गीय एवं भिन्न वर्गीय समस्त शब्द — समस्त शब्दों की रचना में समवर्गीय शब्दों का भी संयोग होता है और भिन्न वर्गीय शब्दों का भी। प्रकार्य की दृष्टि से व्युत्पन्न समस्त शब्द अपने वर्ग का भी कार्य कर सकते हैं तथा दूसरे वर्ग का भी। उदाहरण के लिए देखें —

जन + तंत्र = जन का + तंत्र = जनतंत्र ने हर व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार जीने का अधिकार दिया

संज्ञा + संज्ञा = विशेषण + संज्ञा

समवर्गीय → भिन्न प्रकार्य = संज्ञा पदबंध → कर्ता कारक

ये दो संज्ञाओं से मिलकर बनी हैं। योजक के कारण प्रथम संज्ञा शब्द संबंधवाचक विशेषण का कार्य कर रहा है। व्युत्पन्न समस्त पद "जनतंत्र" एक संज्ञा शब्द है और सामने दिये गये वाक्य में वह कर्ताकारक का कार्य कर रहा है। अब नीचे के दोनों वाक्यों को देखिए जिनमें यही शब्द विशेषण और क्रियाविशेषण का कार्य कर रहा है —

1) जनतंत्र की प्रक्रिया काफ़ी जटिल है = "प्रक्रिया" का विशेषण
2) जनतंत्र में हर नागरिक मत डालकर सरकार बनाता है = "बनाना" का स्थानवाचक क्रियाविशेषण

इसके विपरीत समस्त शब्द के दोनों शब्द समवर्गीय होकर अपने ही वर्ग का समस्त शब्द भी बना सकते हैं और वाक्य में अपने मूल वर्ग का प्रकार्य भी कर सकते हैं, जैसे —

द्रुत + विलंबित = द्रुतविलंबित = वह द्रुतविलंबित स्वर में गा रहा है

विशेषण + विशेषण = विशेषण → विशेषण

इस प्रकार समस्त शब्दों के बीच संबंध दो प्रकार का होता है —

क) दो शीर्ष रूपों का संयोग = माँ-बाप, भाई-बहन, अच्छे-बुरे, भले-बुरे

ख) विशेषक और विशेष्य संयोग = धवलगिरि, श्वेतपत्र, पूज्यवर

संरचनात्मक दृष्टि से हिंदी में उपलब्ध सभी प्रकार के समस्त शब्द निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं —

1)	संज्ञा	+	संज्ञा	—	माता-पिता, फल-फूल
2)	संज्ञा	+	धातु	—	कमरतोड़, मुँहफट
3)	सर्वनाम	+	संज्ञा	—	हमसखा
4)	सर्वनाम	+	सर्वनाम	—	हम-आप, ये-वे
5)	विशेषण	+	संज्ञा	—	महासागर, नीलांबर
6)	विशेषण	+	विशेषण	—	साफ़सुथरा, सीधा-सादा
7)	धातु	+	धातु	—	खा-पी, खेलकूद
8)	धातु	+	संज्ञा	—	हँसमुख, चलचित्र
9)	कृदंत	+	कृदंत	—	लिखी-लिखायी
10)	क्रियाविशेषण	+	क्रियाविशेषण	—	ऊपर-नीचे, आगे-पीछे

अर्थ की दृष्टि से आंतरिक संबंध —

समस्त शब्दों के दोनों शब्दों में अर्थ की दृष्टि से जो आंतरिक संबंध प्राप्त होता है, उसका तीन वर्गों में अध्ययन किया जा सकता है —

क) समानाधिकरण संबंध

ख) परिसीमकीय संबंध

ग) व्यधिकरण संबंध

समानाधिकरण का मतलब है — अर्थ की दृष्टि से दोनों शब्दों में बराबर का संबंध होना। समानाधिकरण समस्त शब्द के दोनों शब्द अर्थ की दृष्टि से समान महत्व रखते हैं। द्वन्द्व समास के अन्तर्गत आने वाले सभी समस्त शब्दों में समानाधिकरण संबंध पाया जाता है। इसमें संयोजक शब्दों जैसे "और, एवं, तथा" का लोप होता है। उदाहरण के लिए कुछ शब्द देखिए :

सीताराम, सुखदुख, हाथपैर

दस-पाँच, नीला-पीला, हम-तुम

यहाँ-वहाँ, आगे-पीछे, दायें-बायें

पढ़-लिख, खा-पी, चल-फिर

हिंदी में इस प्रकार के शब्द बहुत मिलते हैं।

परिसीमकीय के अंतर्गत पहले शब्द एवं दूसरे शब्द के मध्य का संबंध परिसीमक और परिसीमित का होता है। इनका क्रम उलटा भी हो सकता है। ऐसे समस्त शब्द का एक शब्द अव्यय होगा, दूसरा शब्द संज्ञा या विशेषण। दोनों प्रकार के शब्दों में क्रम भेद भी मिलता है —

प्रतिवर्ष, हर वर्ष	—	एक एक वर्ष की कई इकाइयाँ
प्रत्येक, हर एक	—	एक एक की कई इकाइयाँ
यथाशक्ति, यथासंभव	—	जितनी भी शक्ति हो, जितना संभव हो सके।

क्षणमात्र, वर्षभर, दिनभर, पेटभर, भरसक, भरपेट, भरआँख इसके अन्य उदाहरण हैं।

ऐसे समस्त पदों में विशेषक एवं विशेष्य में क्रम भेद भी मिलता है जैसे :

चन्द्र मुख	मुखचन्द्र
घन श्याम	श्यामघन
श्री मुख	मुखश्री

इस वर्ग के कुछ समस्त शब्दों में प्रथम शब्द संज्ञा होता है और द्वितीय शब्द के रूप में संज्ञा, विशेषण एवं कृदंत में से कोई एक शब्द आता है। दोनों शब्दों के मध्य कारकीय संबंध होता है। द्वितीय शब्द प्रधान होता है, किंतु वह अर्थ की स्पष्टता के लिए प्रथम शब्द पर आधारित होता है। तत्पुरुष समस्त शब्द आधारित सम्बन्धों वाले समस्त शब्द होते हैं। उदाहरण के लिए —

व्यासरचित	=	व्यास ने जिसे रचा हो
मदान्ध	=	मद से अंधा
सेवाश्रम	=	सेवा के लिए आश्रम
रक्तदान	=	रक्त का दान
नभचर	=	नभ में चलने वाला

व्यधिकरण के रूप में ऐसे समस्त शब्द आते हैं, जिसके दोनों शब्दों के मध्य प्रत्यक्ष संबंध न होकर परोक्ष संबंध होता है। दोनों शब्दों के अर्थ में मेल नहीं होता, बल्कि उनके संयोग से उत्पन्न होने वाले अन्य व्यक्ति, वस्तु का संकेत होता है।

1)	लोकमान्य	—	मान्य है लोक को जो	—	(बालगंगाधर तिलक)
2)	पंजाब केसरी	—	केसरी है जो पंजाब का	—	(लाला लाजपत राय)
3)	लोकनायक	—	नायक है जो लोक का	—	(जयप्रकाश नारायण)

ये समस्त पद (जो वास्तव में विशेषक पद होते हैं) यदि अपने विशेष्य का बोध नहीं कराते तो ये बहुव्रीहि समस्तपद नहीं होंगे। ऐसे समस्तपद बाह्यकेन्द्रिक ही होते हैं।

8.8 सारांश

- इस इकाई में आपने पढ़ा कि संयुक्त शब्द ऐसी द्विशाब्दिक इकाइयाँ हैं, जिनके दोनों शब्दों में कोई आंतरिक संबंध नहीं होता और जो दोनों शब्दों के अर्थ से अलग हटकर एक विशेष अर्थ देती हैं।
- संयुक्त शब्द आर्थी संरचना की दृष्टि से दो प्रकार के होते हैं — अन्तःकेन्द्रिक और बाह्यकेन्द्रिक।
- अन्तःकेन्द्रिक संयुक्त शब्दों में क्रियाकरयुक्त संयुक्त शब्द आते हैं, जो नाम शब्दों और क्रियाकरों के संयोग से बनते हैं। बाह्यकेन्द्रिक संयुक्त शब्दों में समवर्गीय संयुक्त शब्द आते हैं, जो प्रायः हर वर्ग के शब्दों से बनते हैं।
- क्रियाकरयुक्त संयुक्त शब्दों में प्रथम शब्द अर्थकेन्द्र होता है, द्वितीय शब्द उसे अर्थ प्रदान करने में सहायता पहुँचाता है।
- समवर्गीय संयुक्त शब्दों में दोनों शब्द महत्वपूर्ण होते हैं और विशेष अर्थ उनके संयोग से ही प्रकट होता है।
- जिन द्विशाब्दिक इकाइयों के शब्दों में आंतरिक संबंध मिलता है उन्हें समस्त शब्द कहा जाता है। इनमें आंतरिक संबंध सूचित करने वाले तत्व लुप्त रहकर अर्थबोध कराते हैं, अतः समस्त शब्दों को योजक लोपी भी कहा गया है।
- समस्त शब्द व्याकरण सम्मत इकाइयों के रूप में प्रचलित होते हैं।
- इन्हें परंपरा के अनुसार छह उपवर्गों में वर्गीकृत किया जाता है — अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व और बहुव्रीहि।
- इनमें से कुछ में शीर्ष + शीर्ष का संबंध होता है, कुछ में विशेषक एवं विशेष्य का संबंध होता है।
- आंतरिक संबंध की दृष्टि से इन्हें तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है — समानाधिकरण, परिसीमकीय और व्यधिकरण।
- समानाधिकरण के अन्तर्गत द्वन्द्व समास आते हैं, परिसीमकीय के अन्तर्गत कर्मधारय, द्विगु, अव्ययीभाव एवं तत्पुरुष समास आते हैं। व्यधिकरण संबंध वाले समस्त शब्द बहुव्रीहि समास वाले होते हैं।

अभ्यास 2

क) निम्नलिखित समस्त शब्दों का विग्रह कीजिए और उनका समास प्रकार लिखिए —

i) भारतरत्न

ii) त्रिमूर्ति

iii) श्वेताम्बर

iv) चक्रपाणि

v) आयकर

vi) राधाकृष्ण

vii) कालाधन

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए — (लगभग 5-6 वाक्यों में)

i) संयुक्त शब्द की परिभाषा दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

ii) क्रियाकरयुक्त संयुक्त शब्द किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

iii) समवर्गीय संयुक्त शब्द की विशेषताएँ बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

iv) क्रियाकरयुक्त शब्द और समवर्गीय संयुक्त शब्द में क्या अन्तर है?

.....

.....

.....

.....

.....

v) समस्त शब्द एवं संयुक्त शब्द का अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8.9 शब्दावली

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको निम्नलिखित विशिष्ट शब्दावली की जानकारी मिली :

द्विशाब्दिक इकाई
संयुक्त शब्द
समस्त शब्द
द्विवर्गीय
क्रियाकरयुक्त
समवर्गीय
व्युत्पादन
समाहार
समानाधिकरण
परिसीमकीय
व्यधिकरण
योजकलोपी
अर्थकेन्द्र
क्रियार्थ
गुणबोधी
सीमकीय
द्वन्द्व
द्विगु
कर्मधारय
तत्पुरुष
अव्ययीभाव
बहुव्रीहि
योजकीय
कारकीय
व्याख्यात्मक
योजकहीन
संरचनाकेन्द्र
अन्तःकेन्द्रिक
ब्राह्यकेन्द्रिक

8.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) *प्रयोग और प्रयोग* (1981) प्रो. वी.रा. जगन्नाथन, ऑक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
2) *हिंदी संरचना का शैक्षिक स्वरूप* (1982) डॉ. रामकमल पाण्डेय, विराट प्रकाशन, गोपीगंज, वाराणसी।
3) *व्यावहारिक हिंदी संरचना और अभ्यास,* प्रो. बा.गो. मिश्र (स.) केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

8.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

क) i) खींचतान
ii) बकझक
iii) घुसपैठ
iv) बैठे-बैठे, घूम-फिर
v) घरबार
vi) रोज़-रोज़, भूलचूक
vii) घिसे-पिटे
viii) पेड़-पौधे
ix) दौड़-धूप
x) चालढाल

ख) i) सही
ii) गलत
iii) गलत
iv) गलत
v) सही

अभ्यास 2

क) i) भारत के रत्न → तत्पुरुष

ii) तीन मूर्तियों का समूह → द्विगु

iii) श्वेत रंग का अंबर → कर्मधारय

या

श्वेत है वस्त्र जिसका → बहुव्रीहि

iv) चक्र है जिसके हाथ में → बहुव्रीहि (विष्णु)

v) आय पर लिया जाने वाला कर → तत्पुरुष

vi) राधा और कृष्ण → द्वन्द्व

vii) काले धंधे से जमा हुआ धन → कर्मधारय

ख) इकाई से स्वयं जाँच करें।

इकाई 9 अन्य शब्द : ध्वन्यात्मक, अनुकरणात्मक, पुनरुक्त आदि

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य
9.1 प्रस्तावना
9.2 अन्य शब्द से तात्पर्य
9.3 अन्य शब्दों का वर्गीकरण
9.4 वर्णनात्मक : अन्य शब्द
  9.4.1 वर्णनात्मक शब्दों की संरचना
9.5 अवधारणात्मक : अन्य शब्द
  9.5.1 अनुकरणमूलक शब्द
  9.5.2 रणन शब्द
  9.5.3 पुनरुक्त या द्वित्व शब्द
  9.5.4 विस्मयादिबोधक शब्द
9.6 सारांश
9.7 शब्दावली
9 8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
9.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप —

- भाषा विशेष के संदर्भ में प्रयुक्त होने वाले कुछ ऐसे शब्दों से परिचित हो सकेंगे जो संरचनात्मक एवं आर्थी दृष्टि से विलक्षण होते हैं,
- ऐसे अन्य शब्दों के बारे में समझा सकेंगे जिनका अर्थ उपवाक्य द्वारा ही स्पष्ट हो सकता है,
- कुछ ऐसे भी शब्दों के बारे में बता सकेंगे जो अपने अर्थ से अधिक प्रयोक्ता की मनोदशा को दर्शाते हैं,
- कुछ ऐसे शब्दों के बारे में भी आप बता पाएँगे, जिनका प्रयोग विभिन्न ध्वनियों को शाब्दिक रूप में अभिव्यक्त करने के लिए होता है।

9.1 प्रस्तावना

आपने पिछली इकाइयों में मूल शब्दों से व्युत्पन्न होने वाले यौगिक शब्दों के बारे में तथा संयुक्त शब्दों एवं समस्त पदों के बारे में पढ़ा है। जैसा कि पिछली इकाई में संकेत किया गया था — इस इकाई में हम आपको अनुप्रासात्मक शब्दों के बारे में बताएँगे तथा कुछ ऐसे शब्दों के बारे में भी चर्चा करेंगे जो अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के रूप में प्रयुक्त होते हैं जो अर्थ की दृष्टि से वर्णनात्मक होते हैं, संरचना की दृष्टि से उपवाक्यात्मक। इसके अतिरिक्त हम आवृत्तिमूलक शब्दों, ध्वन्यात्मक शब्दों, रणन शब्दों, अनुकरणात्मक शब्दों एवं अन्य कई प्रकार के द्वित्व शब्दों की जानकारी प्राप्त करेंगे, जिनका प्रयोग हिंदी भाषा में बहुतायत से होता है। ऐसे शब्द रूपिम के स्तर पर भले ही सार्थक, असार्थक अथवा निरर्थक लगते हों, वाक्य स्तर पर अभिव्यक्ति की दृष्टि से अत्यंत ठोस एवं अर्थवान होते हैं तथा भाषा में इनका अपना ही महत्व है।

9.2 अन्य शब्द से तात्पर्य

"अन्य शब्द" से तात्पर्य है — ऐसे शब्द जो किन्हीं कारणों से इस इकाई के पूर्व पढ़ी गयी इकाइयों में नहीं लिए गए। वास्तव में "अन्य शब्द" का प्रयोग यहाँ उन शब्दों के लिए किया जा रहा है, जो या तो अपनी आर्थी संरचना की दृष्टि से विलक्षण हैं अथवा अपनी व्याकरणिक संरचना की दृष्टि से विलक्षण होने के कारण उपसर्ग, प्रत्यय, समास, संयुक्त शब्द रचना की परिधि में विवेचित नहीं हो पाये हैं। इसी के आधार पर अन्य शब्दों को दो वर्गों में रखा जा सकता है —

9.3 अन्य शब्दों का वर्गीकरण

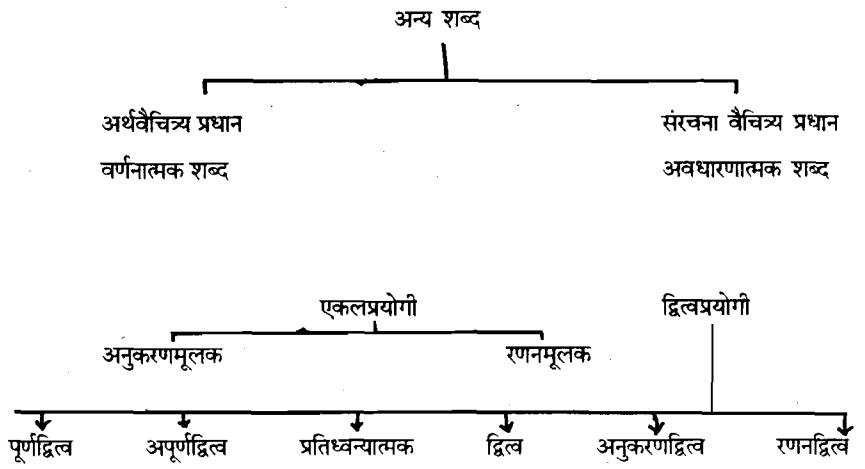

इनमें से अर्थवैचित्र्यप्रधान शब्द संरचनात्मक दृष्टि से व्युत्पादित होते हैं। उनमें उपसर्गों एवं प्रत्ययों का पर्याप्त प्रयोग होता है और उन्हें शब्द भेदों में वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसे :

1) आस्तिक — गुणवाचक विशेषण

2) नास्तिक — न + आस्तिक — "न" निषेधवाचक + गुणवाचक विशेषण

जबकि संरचना वैचित्र्य वाले शब्द अर्थ की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं और प्रकार्यभेदों में ही विवेचित हो सकते हैं, शब्द भेदों की परिधि में इनका विवेचन संभव नहीं हो पाता, जैसे :

1) कुर्ता फट गया।
2) आवाज़ सुनते ही लड़के ने फट से दरवाज़ा खोल दिया।
3) फट की आवाज़ हुई और गाड़ी रुक गई।
4) हल्की-सी फटकार पड़ी और वे चुप हो गये।
5) एक औरत फटाफट कमरे में घुस आई।
6) लड़का बड़ा मुँहफट है।
7) मोटर साईकिल फट-फट करती चली जा रही थी।
8) इस फटफटी ने तो परेशान कर दिया।
9) रातदिन की फटफट से तंग आ गया हूँ।

इन उदाहरणों में "फट" या "फट" से सम्बद्ध "फटफट", "फटफटी", "फटाफट" अर्थ की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, प्रकार्य की दृष्टि से ये कहीं क्रियापद, कहीं संज्ञापद, कहीं क्रियाविशेषण पद का कार्य कर रहे हैं, किन्तु "फट" को किस शब्द वर्ग के अन्तर्गत विवेचित किया जाए और इसका मूल शब्द या रूपिम की दृष्टि से क्या अर्थ निश्चित किया जाए, और "फटाफट", "फटफटी", "फटफट" या "फटाक" की संरचनात्मक व्याख्या कैसे की जाए, ये सारे प्रश्न इन्हें विशिष्ट शब्दों में रखने के लिए बाध्य कर देते हैं।

9.4 वर्णनात्मक : अन्य शब्द

अर्थवैचित्र्य प्रधान शब्दों को वर्णनात्मक शब्द इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इनके अर्थ वर्णन अथवा व्याख्या से ही स्पष्ट हो पाते हैं। व्याकरण में ऐसे शब्दों के लिए "अनेक शब्दों के लिए एक शब्द" संज्ञा का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित शब्दों को देखिए —

	शब्द		*अर्थ*
1)	अतिथि	—	जिसके आने की तिथि का पता न हो।
2)	नास्तिक	—	जो (ईश्वर के) होने (की बात) को न मानता हो।
3)	अलौकिक	—	जो लोक से सम्बद्ध न हो।
4)	वैयाकरण	—	जो व्याकरण का ज्ञाता (लिखनेवाला) हो।
5)	सत्यवादी	—	जो हमेशा सत्यवचन बोलता हो।

उपर्युक्त सभी शब्दों के अर्थ को प्रकट करने के लिए एक पूरे उपवाक्य की आवश्यकता पड़ी है, इसीलिए इन्हें उपवाक्यात्मक या वर्णनात्मक शब्द कहा जाता है।

9.4.1 वर्णनात्मक शब्दों की संरचना

वर्णनात्मक शब्द प्रायः तत्सम शब्द ही होते हैं। हिंदी के अधिकांश वर्णनात्मक शब्द संस्कृत स्रोत से आये हैं। कुछ ही ऐसे शब्द हैं जो फ़ारसी से आकर हिंदी में प्रचलित हो गये हैं — जैसे : गैरकानूनी, मुद्दई आदि। इनका संबंध अदालती कामकाज से अधिक है। वर्णनात्मक शब्दों की संरचना एक अथवा दो मूल शब्दों और एकाधिक प्रत्ययों के योग से होती है, किन्तु ये एक संश्लिष्ट शब्द होने पर भी एक इकाई के रूप में ग्रहण किये जाते हैं। उदाहरण के लिए "आस्तिक" शब्द संस्कृत में "अस्+ति+अ+अक" के योग से बना है, किन्तु हिंदी में यह शब्द एक इकाई के रूप में प्रयुक्त होता है और इसके अर्थ का ग्रहण करने के लिए हम इसके घटकों का विश्लेषण नहीं करते, बल्कि व्याख्या द्वारा भावार्थ को समझ लेते हैं।

हिंदी भाषा की तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली का बहुत बड़ा हिस्सा वर्णनात्मक शब्दों वाला है। उदाहरण के लिए अयस्क, देशांतर, अयनमंडल, नवरत्न, शिलालेख, अभिलेख, पाषाणयुग, मुद्रास्फीति, अवमूल्यन, माँग, आपूर्ति, राष्ट्रपति, चुनाव, भुगतान, आदि ऐसे शब्द हैं जो अर्थ की स्पष्टता के लिए व्याख्या या वर्णन की अपेक्षा रखते हैं। राजभाषा के रूप में हिंदी भाषा का प्रयोग एवं व्यवहार में दक्षता के लिए ऐसे पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दों का ज्ञान आवश्यक है।

अभ्यास 1

क) नीचे दिए कथनों में सही कथन के आगे (√) तथा गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए —

		सही	गलत
i)	वर्णनात्मक शब्द वर्णन अथवा व्याख्या से ही स्पष्ट हो पाते हैं।	☐	☐
ii)	वर्णनात्मक शब्द सिर्फ़ तत्सम शब्दों से ही बनते हैं।	☐	☐
iii)	वर्णनात्मक शब्दों को उपवाक्यात्मक शब्द भी कहते हैं।	☐	☐
iv)	अर्थवैचित्र्य प्रधान शब्दों से तात्पर्य वर्णनात्मक शब्दों से है।	☐	☐
v)	तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली को वर्णनात्मक शब्दों की कोटि में नहीं रखा जा सकता।	☐	☐

ख) निम्नलिखित वर्णनात्मक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए —

i) जिसकी भाँति कोई दूसरा न हो →

ii) जहाँ पहुँचना बहुत कठिन हो →

iii) जो इस लोक से सम्बद्ध हो →

iv) दर्शन की बातों का ज्ञाता →

v) जिसका कोई आकार न हो →

vi) जो दूसरों की भलाई करता हो →

9.5 अवधारणात्मक : अन्य शब्द

संरचनात्मक दृष्टि से जिन शब्दों को विलक्षण कहा जाता है, वे या तो विभिन्न प्रकार की ध्वनियों की ध्वन्यात्मक प्रतिकृति होते हैं अथवा सार्थक शब्दों के द्वित्व रूप होते हैं। इन्हें अवधारणात्मक इसलिए कहा गया है, क्योंकि वाक्य में प्रयुक्त होने पर संदर्भ के अनुसार ये अर्थ को स्पष्ट करते हैं। अकेले आकर ये कोई स्पष्ट अर्थ नहीं देते जिसके आधार पर इन्हें निश्चित शब्द वर्ग में रखा जा सके। उदाहरण के लिए ठाँय, काँव, धाँय, गड्डमगड्ड, भकाभक, चकाचक, चक, चल चल, चलाचल, हाथोहाथ, कानोकान, बातबात, चलचुल, जैसे शब्दों को लिया जा सकता है। इन अवधारणात्मक शब्दों की आर्थी संरचना बाह्यकेन्द्रिक होती है अर्थात अर्थ संदर्भ से आता है। जहाँ सार्थक शब्दों के द्वित्व होते हैं, वहाँ भी अर्थ मूलतः वहीं नहीं रहता, बल्कि काफ़ी अलग हो जाता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को देखिए —

1) लड़का धम्म से ज़मीन पर आ पड़ा।

2) साहब गुर्रा कर बोले ·····"।

3) अधिकारियों में चखचख हो रही है।

4) परिणाम की घोषणा के समय उसका जी धकधक कर रहा था।

5) उसके मन में धुकधुकी मची हुई थी।

6) हामिद की बातें सुनकर बुढ़िया की आँखें डबडबा आईं।

7) गोली सर्र से उसके कान के पास से गुज़र गई।

8) शेर दहाड़ने लगे, हाथी चिंघाड़ने लगे और घोड़े हिनहिनाने लगे।

9) दरवाज़ा फटाक-से बन्द हुआ।

10) बेंत सटाक-से उसके पीठ पर पड़ी।

इन वाक्यों में धम्म, गुर्रा, धक, सर्र, फटाक, सटाक जैसे शब्द एकल प्रयोगी हैं। असार्थक होते हुए भी संदर्भ में क्रमशः गिरने की आवाज़, कड़े स्वर के साथ बोलने के ढंग, हठात् रुकने की आवाज़, तेज़ी के साथ किसी दिशा में जाने की आवाज़, धातु से इतर पदार्थ (लड़की, कोड़ा आदि) से प्रहार करने से पैदा होने वाली आवाज़ की संकल्पना पैदा करते हैं।

"दहाड़" और "चिंघाड़" क्रमशः शेर और हाथी के बोलने का बोध कराते हैं। ये भी एकल प्रयोगी शब्द हैं।

चखचख, धकधक, धुकधुक, असार्थक शब्दों के द्वित्व रूप हैं, किन्तु ध्वन्यात्मकता इनमें भी है। ऊपर जिन वाक्यों में इनका प्रयोग किया गया है, उन द्वित्व शब्दों के किसी एक अंश का एकलरूप में प्रयोग नहीं हो सकता है।

कुछ द्वित्व शब्द सार्थक शब्दों से बनते हैं — जैसे : पढ़पढ़, सवेरे-सवेरे, जी-जी, मर-मर आदि। ये द्वित्व शब्द भी आर्थी संरचना की दृष्टि से बाह्यकेन्द्रिक अर्थ ही दे रहे हैं और चलने, पढ़ने, जीने, मरने का अर्थ प्रकट कर रहे हैं। कुछ अन्य उदाहरण देखिए जहाँ नाश्ता वाश्ता, नौकरी वौकरी जैसे द्वित्व शब्दों में प्रथम घटक तो सार्थक है पर दूसरे घटक के रूप में प्रथम घटक के ही विकृत प्रतिध्वन्यात्मक रूपों का प्रयोग हो रहा है। ये विकृत होने के कारण असार्थक हैं, किन्तु निरर्थक नहीं। ऐसे प्रतिध्वन्यात्मक द्वित्व शब्द भी अर्थ की दृष्टि से बाह्यकेन्द्रिक होते हैं।

जैसा कि उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होगा, ऐसे अवधारणात्मक शब्दों के अर्थ निश्चित नहीं होते। दहाड़ना

और चिंघाड़ना का प्रयोग मनुष्य के संदर्भ में भी हो सकता है। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि ऐसे शब्दों को अवधारणात्मक इसलिए कहा जाता है क्योंकि ये संदर्भ में आकर एक अवधारणा को पैदा करते हैं, निश्चित रूप से कोई अर्थ नहीं देते।

इन शब्दों की व्युत्पत्ति के बारे में भी कोई स्पष्ट दृष्टि प्राप्त नहीं होती। कुछ शब्द ध्वन्यात्मक अनुकृति के कारण गढ़ लिए गए हैं (ठाँय, ठस, सटाक, चीं चीं, धुक धुक, बड़ बड़) । कुछ अतिशयता सूचित करने के प्रयास में पैदा हो गये हैं (खा खा, पी पी, चलते चलते, रोज़ रोज़, बार बार) । इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे शब्द हैं जैसे : "चाय वाय", "कार्ड वार्ड", "खाना वाना", "मेज़ वेज़" जो "अथवा कुछ और भी" की अवधारणा पैदा करते हैं।

संरचना वैचित्र्य वाले शब्दों में जो द्वित्व शब्द आते हैं उन्हें अनुप्रासात्मक शब्द भी कहा जाता है। ये अनुप्रास कहीं ध्वन्यात्मक होते हैं — (चल चल, दौड़ दौड़, भाग भाग) कहीं प्रतिध्वन्यात्मक (चल वल, दौड़ वौड़, भाग वाग) कहीं सुर-ध्वन्यात्मक (चल चुल, दौड़ दूड़, भाग भूग) । इन्हें क्रमशः 1) पूर्ण द्वित्व 2) प्रतिध्वन्यात्मक द्वित्व एवं 3) अपूर्ण द्वित्व कहा जाता है। ध्वनियों की शाब्दिक प्रतिकृति वाले शब्दों को (जो पशु पक्षी से संबंधित हैं) रणन और रणन द्वित्व के अंतर्गत विवेचित किया गया है। शेष अन्य प्रकार की आवाज़ों की शाब्दिक प्रतिकृतियों को अनुकरण और अनुकरण द्वित्व के अंतर्गत रखा गया है। इन सबकी अलग-अलग चर्चा हम आगे करेंगे।

9.5.1 अनुकरणमूलक शब्द

सभी प्रकार की आवाज़ों के लिए अलग-अलग शाब्दिक प्रतीक किसी भाषा में नहीं होते, फिर भी मिलती-जुलती आवाज़ों के एक वर्ग के लिए एक शाब्दिक प्रतीक हर भाषा में प्राप्त हो जाता है। इन शाब्दिक प्रतीकों को अनुकरण शब्द इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनकी ध्वन्यात्मक संरचना को सुना जा सकता है तथा उसे उस आवाज़ के अनुकूल रखने की कोशिश की जाती है। यद्यपि ऐसा कर पाना हमेशा संभव नहीं होता, क्योंकि सुनने में भी अंतर हो सकता है — तारों के संदर्भ में कोई "ट्विंकल" सुनता है कोई "टिम-टिम" सुनता है।

हिंदी भाषा में अनुकरण शब्दों की संख्या पर्याप्त है, उदाहरण के लिए ठस्स, ठाँय, धक, साँय, सन्न, फटाक, धड़ाक, सटाक, तड़ाक, भड़ाक, खटाक, धम्म आदि लिये जा सकते हैं। निम्नलिखित वाक्यों में इनके प्रयोग देखिए —

1) मैं उनकी बात सुनकर सन्न रह गया।
2) तीर सन्न से मेरे कान के पास से गुज़रा।
3) मालकिन ने दरवाज़ा फटाक/धड़ाक/भड़ाक से बन्द कर लिया।
4) सुबह से ही उनकी दाहिनी आँख फड़क रही है।
5) चट से बाज़ार जाओ और सामान लेकर आओ।

हिंदी में अनुकरण शब्दों का प्रयोग दो रूपों में दिखाई देता है —

1) एकल रूप में
2) द्वित्व रूप में

i) एकल प्रयोगी अनुकरण शब्द

ऊपर दिये गये सारे उदाहरण एकल प्रयोगी हैं। एकल प्रयोगी से तात्पर्य है — शब्द का अकेले आना। ऐसे अनुकरण शब्द या तो क्रियाविशेषण के रूप में आते हैं, अथवा क्रिया के रूप में आत हैं। क्रिया-विशेषण के रूप में इनके उदाहरण इस प्रकार हैं —

1) तीर मेरे कान के पास से सन्न से गुज़रा।
2) शीशा चट-से टूट गया।

क्रियाविशेषण के रूप में आने पर इनके साथ "से" का प्रयोग होता है, जो इन्हें क्रियाविशेषण पद बनाता है। "से" के अभाव में ये क्रियापद के अंग बन जाते हैं —

1) मैं उनकी बात सुनकर सन्न रह गया/हो गया।

2) उन्होंने मुझे यह बात सुनाकर सन्न कर दिया।

विभिन्न प्रकार के अनुकरण शब्दों के, प्रयोग संबंधी अपने-अपने संरचनात्मक प्रतिबंध और अर्थगत संदर्भ होते हैं। वे उन्हीं प्रतिबंधों और संदर्भों के द्वारा नियंत्रित होते हैं।

ii) द्वित्व प्रयोगी अनुकरण शब्द

अनुकरण शब्दों में प्रायः सभी शब्द द्वित्व प्रयोगी होते हैं। जितने ये एकल रूप में प्रयुक्त होते हैं उससे अधिक इनका द्वित्व रूप में प्रयोग होता है। उदाहरण के रूप में निम्नलिखित शब्दों को देखिए —

1) तीर सनसनाता हुआ मेरे कान के पास से गुज़रा।
2) शीशा चटचटाकर टूट गया।
3) उन्होंने सारा काम फटाफट कर दिया।
4) कोने से सरसराहट की आवाज़ आ रही थी।
5) लड़के ने साथी के कान में कुछ फुसफुसाकर कहा।

प्रयोग की दृष्टि से सारे अनुकरण द्वित्व रीति क्रिया विशेषण और क्रियापद का कार्य करते हैं। हालाँकि "आहट" प्रत्यय के योग से ये संज्ञा शब्द के रूप में भी व्युत्पन्न होते हैं, फिर भी संज्ञा पद के रूप में इनका प्रयोग बहुत कम किया जाता है जैसे :

1) मच्छरों की भनभनाहट ने नींद उड़ा दी है।
2) चारों ओर सनसनी फैली हुई है।

इसी प्रकार कुछ विशेषण के रूप में प्रयोग भी मिलते हैं —

1) आज की यह सनसनीखेज खबर है।
2) फुसफुसी आवाज़ में बात करना मुझे पसंद नहीं है।

अनुकरण शब्दों का प्रयोग यदि आवाज़ों की अनुकृति मात्र के लिए होता तो वे इतने महत्वपूर्ण न होते। चट से जाकर पट से आना, आँख का फड़कना, सन्न रह जाना प्रयोक्ता के अभिप्राय को कितनी सटीकता के साथ अभिव्यक्त करते हैं, यह ऊपर दिये गये उदाहरणों से स्पष्ट है।

9.5.2 रणन शब्द

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है — रणन से अभिप्राय है पशु-पक्षियों की आवाज़ें। *रणन शब्द का अर्थ है — वे शब्द जो पशु-पक्षियों की आवाज़ों की नकल के रूप में प्रयुक्त होते हैं।* गाय रंभाती है, बिल्ली म्याऊँ करती है, मेमने मिमियाते हैं, शेर दहाड़ता है, हाथी चिंग्घाड़ता है, घोड़ा हिनहिनाता है, ऊँट बलबलाता है तथा गधा रेंकता है और ढेचूँ ढेचूँ करके बोलता है। इसी प्रकार कौवे की काँव, कोयल की कूक, चिड़िया की चीं, कबूतर का गुटुरगूँ, मुर्गे का कुकुडूँ-कूँ तथा मेंढ़क की टर्र, आदि रणन शब्द हैं, जो कभी एकल रूप में आते हैं, कभी द्वित्व रूप में। अनुकरण शब्दों की भाँति ही रणन शब्द भी एक ओर जहाँ स्वयं से संबंधित प्राणियों की आवाज़ के प्रतीक का कार्य करते हैं, वहीं कई व्यावहारिक स्थितियों और दशाओं को भी बड़ी सटीकता के साथ अभिव्यक्त करते हैं। कुछ वाक्य देखिए —

1) इधर-उधर हिनहिनाते फिर रहे हो, कुछ देर दुकान पर क्यों नहीं बैठते।
2) चिंग्घाड़ो मत! बाहर कोई सुनेगा तो क्या कहेगा।
3) तुम क्यों दहाड़ते फिरते हो?
4) क्या में-में लगा रखी है, साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहते।
5) तुम अपना काम करो! लोग भौंकते हैं तो भौंकने दो!

i) एकल प्रयोगी रणन शब्द

एकल प्रयोगी रणन शब्द बहुत कम प्रयुक्त होते हैं। "हिनहिन", "बलबल", "में में" तो एकल रूप में आ ही नहीं सकते। केवल "दहाड़", "चिंग्घाड़" जैसे कुछ ही रणन शब्द हैं, जो एकल रूप में

ही आते हैं और जिनका द्वित्व रूप प्राप्त नहीं होता। एकल प्रयोगी रणन शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं —

1) शेर की दहाड़ सुनकर हाथी चिंग्घाड़ते हुए भागने लगे।
2) कुत्ते ने अजनबी को दरवाज़े पर देखा तो गुर्राने लगा।
3) "म्याऊँ" की आवाज़ के साथ बिल्ली मेज़ पर चढ़ आई।
4) एक ही डंडे में पिल्ला चें बोल गया।

ii) द्वित्व प्रयोगी रणन शब्द

रणन शब्दों के द्वित्व रूपों का प्रयोग हिंदी में अधिक होता है। टर्र-टर्र, कूँ-कूँ, भौं-भौं, हिन-हिन, में-में, ढेंचूँ-ढेंचूँ, काँव-काँव, चीं-ची, चूँ-चूँ, जैसे रणन द्वित्वों का हिंदी में लाक्षणिक प्रयोग भी होता है।

1) काँव-काँव की आवाज़ सुनकर उसकी नींद खुल गई।

रूपावली की दृष्टि से अधिकतर रणन शब्दों के निम्नलिखित रूप बनते हैं —

1) टर्र — टर्राना — टर्र-टर्र करना

2) हिनक ——— हिनकना ——— हिन-हिन करना

3) चें चें ——— चिंचियाना ——— चें चें करना।

दहाड़, चिंग्घाड़ जैसे रणन शब्दों की रूपावली में अंतर नहीं होता। *आर्थी संरचना की दृष्टि से सभी रणन द्वित्व बाह्यकेन्द्रिक होते हैं क्योंकि ये अवधारणात्मक अर्थ ही देते हैं।*

9.5.3 पुनरुक्त या द्वित्व शब्द

इस प्रकार के शब्दों का हिंदी में व्यापक रूप में प्रयोग होता है। इन सभी प्रकार के द्वित्वों को पाँच शीर्षकों में वर्गीकृत किया जा सकता है —

i) पूर्ण द्वित्व

पूर्ण द्वित्व से तात्पर्य है पहली सार्थक इकाई की ही पुनरुक्ति से हुए द्वित्व। दूसरे शब्दों में कहें तो *जिस द्वित्व शब्द का प्रथम घटक कोई सार्थक शब्द होता है और द्वितीय शब्द के रूप में पुनः उसी शब्द की पुनरुक्ति होती है, उसे पूर्ण द्वित्व कहते हैं* —

1) दाने-दाने पर लिखा है, खाने वाले का नाम।
2) उसके काले-काले बाल रेशम की तरह मुलायम थे।
3) धीरे-धीरे यह भी समय बीत जाएगा।
4) उसका सुबह-सुबह शोर मचाना मुझे अच्छा नहीं लगता।
5) यहाँ कौन-कौन आता है?

पूर्ण द्वित्व शब्दों का हिंदी में काफ़ी अधिक मात्रा में प्रयोग होता है। ये प्रायः हर शब्द वर्ग से बनाये जाते हैं —

संज्ञा	—	घर-घर, द्वार-द्वार
सर्वनाम	—	कोई कोई, कुछ कुछ, क्या क्या, जो जो
विशेषण	—	अच्छा अच्छा, लाल लाल, पीला पीला
क्रियाविशेषण	—	धीरे धीरे, कभी कभी, पास पास
क्रिया	—	खा खा, पी पी, पढ़ पढ़

संज्ञा द्वित्व शब्दों के बारे में एक बात और ध्यान देने योग्य है — इनमें शब्दांत में विकार भी होता है, जो अर्थ पर प्रभाव भी डालता है।

लड़के-लड़के में अन्तर होता है।

और मध्य विकार के उदाहरण भी मिलते हैं —

कानोकान बात कहाँ तक जा पहुँची।

इसके साथ-साथ मध्य में "ही" अथवा "का" योजक भी आ सकते हैं जो अर्थ पर प्रभाव डालते हैं —

मन ही मन वे मुस्कराए।

सर्वनाम के द्वित्व शब्दों के मध्य कहीं-कहीं "न" भी आता है और अर्थ को प्रभावित करता है —

कोई न कोई आज ज़रूर आएगा।

इसी प्रकार क्रिया विशेषणों के द्वित्व भी "ही" और "न" योजकों के साथ आते हैं। जैसे :

पास ही पास

कहीं न कहीं

द्वित्व शब्दों के प्रयोग से अर्थ में जो भेद उत्पन्न होता है उन्हें निश्चित करने के लिए प्रयोग के संदर्भ को समझना आवश्यक होता है। मोटे तौर पर निम्नलिखित अर्थ-दिशाएँ हो सकती हैं —

1) अतिशयता प्रकट करने वाली अर्थ दिशा —
दौड़ दौड़ कर वह निढाल हो गया।

2) समरूपता प्रकट करने वाली अर्थ दिशा —
काले काले बालों के बीच गोरा गोरा चेहरा बड़ा सुंदर लग रहा था।

3) व्यापकता प्रकट करने वाली अर्थ दिशा —
मैं घर घर गया, आदमी आदमी से मिला।
गाँव का गाँव शहर की ओर भाग रहा है।

4) गहनता बताने वाली अर्थ दिशा —
जन जन में चेतना पैदा करनी होगी।

5) बारंबारता प्रकट करने वाली अर्थ दिशा —
बोल बोलकर उसने सारा काम बिगाड़ दिया।

6) अन्तर प्रकट करने वाली अर्थ दिशा —
लड़के लड़के में अंतर होता है।

हिंदी भाषा में संज्ञा, विशेषण एवं क्रियाओं के द्वित्व शब्द काफ़ी प्रचलित हैं।

अपूर्ण द्वित्व

एक सार्थक इकाई के बाद जब उसी सार्थक इकाई से व्युत्पन्न दूसरा रूप रखकर द्वित्व शब्द बनाया जाता है तो अपूर्ण द्वित्व की रचना होती है। उदाहरण के लिए —

1) दे दिला कर मामले को यहीं खत्म कीजिए।

2) चोर मुर्गी को मार मूर कर खा गये।

3) हाँ हूँ करने से काम नहीं चलेगा, स्पष्ट बात कीजिए।

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित शब्दों पर दृष्टिपात करने से एक बात स्पष्ट होती है कि अपूर्ण द्वित्व भी दो प्रकार के होते हैं।

क) ऐसे अपूर्ण द्वित्व जिनका द्वितीय घटक भी सार्थक होता है।
दूसरे घटक में जो स्वर भेद आता है वह एक दूसरे सार्थक रूप को व्युत्पन्न करता है,
जैसे — दे दिला, मर मरा।

ख) ऐसे अपूर्ण द्वित्व जिनका द्वितीय घटक, प्रथम घटक से व्यंजन साम्य होने पर भी स्वर भेद के कारण असार्थक रूप में व्युत्पन्न हुआ होता है,
जैसे —मार मूर, हाँ-हूँ।

"क" वर्ग के द्वित्व रूपों को हम सार्थक अपूर्ण द्वित्व तथा "ख" वर्ग के द्वित्व शब्दों को हम असार्थक अपूर्ण द्वित्व कह सकते हैं। सामान्य व्यवहार की हिंदी में दोनों प्रकार के अपूर्ण द्वित्व काफ़ी मात्रा में प्राप्त होते हैं। इनकी स्वर संरचना के ऊपर दृष्टिपात करें तो कुछ उदाहरणों में प्रथम शब्द के मध्य स्वर में परिवर्तन होता है — "चल चुल", "दौड़ दूड़" और कुछ के संदर्भ में अन्त्य स्वर में परिवर्तन होता है — "चल चला", "चला चली", "हाँ हूँ" आदि।

अपूर्ण द्वित्वों की आर्थी संरचना बाह्यकेन्द्रिक ही होती है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों में इनके प्रयोग को देखिए —

1) शीशे की चीज़ें अलमारी में रखो, कहीं लग लगा गया तो टूट जाएँगी।

2) लड़का ठीक ठाक है, आप नौकरी दे सकते हैं।

3) ढीले ढाले कपड़े यात्रा के लिए सुविधाजनक होते हैं।

अपूर्ण द्वित्व शब्द सर्वनामों को छोड़कर प्रायः हर शब्द वर्ग से बन जाते हैं, किन्तु इनकी सर्वाधिक रचना क्रिया रूपों से होती है।

प्रतिध्वन्यात्मक द्वित्व

ऐसे द्वित्व, जिनका दूसरा शब्द पहले शब्द की ही प्रतिध्वनि होता है, प्रतिध्वन्यात्मक द्वित्व कहलाते हैं। जैसे : चाय-वाय, खाना-वाना, नीचे-वीचे। ऐसे प्रतिध्वन्यात्मक द्वित्व शब्दों की रचना हिंदी के सामान्य व्यवहार में विशेष रूप से देखने को मिलती है।

1) जंगल में खाना-वाना तो मिलेगा नहीं।

2) कपड़े-वपड़े तो हैं नहीं, बारात में कैसे जाएँगे।

3) ऐसे-वैसे सवाल मत पूछो।

4) आपने कहीं मकान-वकान बनवाया है या नहीं?

9.5.4 विस्मयादिबोधक शब्द

अवधारणात्मक शब्दों में विस्मयादिसूचक शब्दों को भी लिया जा सकता है। ये शब्द वस्तु, पदार्थ, व्यक्ति अथवा भाव के प्रतीक न होकर मनोदशा, सम्बोधन आदि को प्रकट करते हैं —

हर्षसूचक	—	वाह, शाबाश
शोकसूचक	—	हा! आह! ओफ़्!
आश्चर्य	—	ओह! अरे! हैं!
अनुमोदन	—	हाँ! हूँ!
तिरस्कार	—	छिः! थूः!
स्वीकृति	—	जी!
संबोधन	—	हे! रे!

इनका प्रयोग एकल और द्वित्व दोनों रूपों में मिलता है। द्वित्व के उदाहरण देखिए —

1) वाह! वाह!

2) अरे-अरे

3) छिः-छिः

4) थू-थू आदि।

कुछ ऐसे विस्मायादिबोधक हैं जो एकल रूप में ही आते हैं द्वित्व नहीं होते —

1) शाबाश! तुमने तो कमाल कर दिया।

2) आह! कितना दुखद दृश्य है!

3) अरे! तुम तो राजा बाबू बन गये।

अभ्यास 2

क) नीचे दिए गए कथनों में सही कथन के आगे (√) तथा गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए —

		सही	गलत
i)	अवधारणात्मक शब्द बिना वाक्य में प्रयुक्त हुए भी अपना अर्थ स्पष्ट करते हैं।	☐	☐
ii)	अवधारणात्मक शब्दों की आर्थी संरचना बाह्यकेन्द्रिक होती है।	☐	☐
iii)	अनुकरणमूलक तथा रणनमूलक शब्दों में कोई भेद नहीं होता।	☐	☐
iv)	संरचना वैचित्र्य प्रधान शब्दों को "अवधारणात्मक" शब्द भी कहते हैं।	☐	☐
v)	द्वित्व शब्द एकल प्रयोगी शब्द नहीं बन सकते।	☐	☐
vi)	संरचना वैचित्र्य वाले द्वित्व शब्दों को अनुप्रासात्मक शब्द भी कहते हैं।	☐	☐

ख) दिए गए शब्दों को उचित वर्ग में रखिए —

शब्द	*पुनरुक्त*	*रणन*	*विस्मयादिबोधक*
i) धीरे-धीरे			
ii) वाह! वाह!			
iii) भौं-भौं			
iv) हिनहिन			
v) इधर-उधर			
vi) छिः छिः			
vii) कानोंकान			
viii) गुटरूँगूँ			
ix) ओफ्-ओह्			

ग) निम्नलिखित प्रश्नों के लगभग 5-6 पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

i) अन्य शब्द से क्या तात्पर्य है?

.....
.....
.....
.....
.....

ii) संरचना वैचित्र्य प्रधान शब्दों को अवधारणात्मक शब्द क्यों कहा जाता है?

.....
.....
.....
.....
.....

iii) अनुकरणमूलक एवं रणन शब्दों का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

iv) वर्णनात्मक एवं अवधारणात्मक शब्दों में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

v) पुनरुक्त और अनुकरणमूलक शब्दों में भेद समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

9.6 सारांश

इस इकाई में "अन्य शब्द" शीर्षक के अंतर्गत उन सभी शब्दों को लिया गया है, जिनकी चर्चा पहले की इकाई में नहीं हो सकी थी। ये अन्य शब्द अपनी आर्थी संरचना अथवा व्याकरणिक संरचना के कारण विलक्षण माने जाते हैं, इसीलिए इन्हें अर्थ वैचित्र्य प्रधान वर्णनात्मक शब्द और संरचना वैचित्र्य प्रधान अवधारणात्मक शब्द कहा गया है और इनका वर्गीकरण करते हुए इनमें स्पष्ट अन्तर किया गया है।

वर्णनात्मक शब्द व्याकरणिक दृष्टि से मूल शब्दों एवं प्रत्ययों/उपसर्गों के योग से बनते हैं। ऐसे शब्द या तो तत्सम होते हैं अथवा तकनीकी और पारिभाषिक। अर्थ की दृष्टि से ये वर्णनात्मक रूप में रूढ़ हो जाते हैं। हिंदी भाषा में ऐसे शब्द पर्याप्त संख्या में प्रचलित हैं।

अवधारणात्मक शब्द संरचना की दृष्टि से विलक्षण होने के कारण कोई निश्चित अर्थ नहीं देते, संदर्भ में आने पर एक खास प्रकार के अर्थ का बोध कराते हैं। इन अवधारणात्मक शब्दों को दो वर्गों में बाँटा गया है — एकल प्रयोगी और द्वित्व प्रयोगी।

एकल प्रयोगी अवधारणात्मक शब्द विभिन्न प्रकार की ध्वनियों के शाब्दिक रूपान्तरण होते हैं। प्राणियों की आवाज़ों को रणन कहा जाता है और इन आवाज़ों की शाब्दिक प्रतिकृतियों को रणन शब्द कहा जाता है। प्राणियों से इतर जो आवाज़ें होती हैं उन्हें अनुकरण शब्द कहा जाता है।

द्वित्व प्रयोगी शब्दों के अंतर्गत अनुप्रासात्मक शब्दों की चर्चा की गयी है, जिसके माध्यम से यह बताया गया कि किसी शब्द की पूर्णपुनरुक्ति, अपूर्ण पुनरुक्ति और प्रतिध्वन्यात्मक पुनरुक्ति करके पूर्ण द्वित्व, अपूर्ण द्वित्व एवं प्रतिध्वन्यात्मक द्वित्व शब्दों की रचना की जाती है। इसी प्रकार अनुकरण शब्दों तथा रणन शब्दों के भी द्वित्व बनते हैं जिनका हिंदी में पर्याप्त मात्रा में प्रयोग किया जाता है। अंत में विस्मयादिबोधक शब्दों की चर्चा की गई है, जो कि अर्थ की दृष्टि से अवधारणात्मक ही होते हैं तथा एकल और द्वित्व दोनों रूपों में प्रयुक्त हो सकते हैं।

9.7 शब्दावली

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपको निम्नलिखित विशिष्ट शब्दावली की जानकारी मिली —

एकल प्रयोगी
द्वित्व प्रयोगी
वर्णनात्मक
अवधारणात्मक
पूर्ण द्वित्व
अपूर्ण द्वित्व
प्रतिध्वन्यात्मक
ध्वन्यात्मक

संरचना वैचित्र्य
अर्थ वैचित्र्य
अनुकरणमूलक
रणन
पुनरुक्त
विस्मयादिबोधक
अनुप्रासात्मक शब्द
शाब्दिक प्रतिकृति

अन्य शब्द : अनुकरणात्मक, ध्वन्यात्मक, पुनरुक्त आदि

9.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) प्रयोग और प्रयोग : वी.रा. जगन्नाथन (1981), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।

2) हिंदी संरचना का शैक्षिक स्वरूप (1982) : रामकमल पांडेय, विराट प्रकाशन, गोपीगंज, वाराणसी।

9.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

क) i) √ iv) √
ii) × v) ×
iii) √

ख) i) अद्वितीय iv) दार्शनिक
ii) दुर्गम v) निराकार
iii) लौकिक vi) परोपकारी

अभ्यास 2

क) i) × iv) √
ii) √ v) ×
iii) × vi) √

ख)

पुनरुक्त	*रणन*	*विस्मयादिबोधक*
i)	iii)	ii)
v)	iv)	vi)
vii)	viii)	ix)

ग) इकाई से स्वयं जाँच करें।